RNI - MPBIL/2008/26448

डाक पंजीयन– म.प्र./भोपाल/4–167/2024–26

नवलय अनुबोध

चैत्र–वैशाख, युगाब्द 5126, वर्ष 17 अंक 02, प्रेषण तिथि 15 अप्रैल 2024, पृष्ठ 36
मूल्य 25/– रु., प्रकाशन तिथि 14 अप्रैल 2024, ISSN No. 2456 - 0499

192 वाँ अंक

बोली-मातृभाषा अंक

क्या आप

प्रतिदिन 2.75 रू. वंचित वर्ग के बच्चों की शिक्षा के लिये दान कर सकते हैं?

यदि हाँ ! तो इस अभियान का अंग बनिये।
कम से कम 1000 रू. वार्षिक दान करें।

नवलय ज्ञानदान

चलो जलायें दीप वहाँ जहाँ अभी भी अंधेरा है।

योजना प्रारम्भ से अब तक, वंचित वर्ग के बच्चों की शिक्षा हेतु ₹ 5,37,344/- की सहायता दी जा चुकी है

इस माह सहयोग राशि भेजने वाले
1. श्री विनोद कुमार आर्य, भोपाल

वार्षिक सहयोग राशि का भुगतान सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्ड्या की किसी भी शाखा में/ नेट बैंकिंग/गूगल पे/पेटीएम से कर सकते हैं

खाते का नाम - नवलय ज्ञानदान (Navalaya Gyandan)

खाता क्र. - 3164047076

बैंक - सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, जेल रोड, भोपाल

IFSCode – CBIN 0283134

क्यू आर कोड को स्केन कर राशि प्रेषित कर सकते हैं।

आपके द्वारा दिया गया दान आयकर धारा 80/जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगा

सम्पर्क करें : 9425005033, 9300494833

नवलय का मासिक प्रकाशन

नवलय अनुबोध

वर्ष 17 अंक 02, अप्रैल -2024

संपादक
आशीष शर्मा

संपादक मण्डल
दीपक भसीन, राकेश कुमार जैन,
डॉ. पूर्णिमा दाते,

प्रबंधक
अनिल नेमा

प्रकाशक व मुद्रक
राकेश कुमार जैन

स्वामित्व
नवलय
54, जोन-2, महाराणा प्रताप नगर,
भोपाल - 462011
E-mail :
navalayaanubodh@gmail.com
Web.: www.navalaya.org
फोन : 9425005033, 9425011865

प्रेषण व्यवस्था
सत्येन्द्र श्रीवास

मुद्रण
श्री श्रद्धा ऑफसेट प्रिंटर्स,
एस–बी– लोअर ग्राउण्ड, विजय स्तम्भ, भोपाल
फोन : 0755–4235459

मूल्य : रू 25/-
वार्षिक शुल्क : रू 300/-
द्विवार्षिक शुल्क : रू 500/-

ISSN No. 2456 - 0499

मासिक पत्रिका

नवलय अनुबोध का इंटरनेट संस्करण हमारी वेबसाइट : www.navalaya.org पर उपलब्ध है।

सम्पादकीय	04
अभिमत	05
नज़रिया	06
मातृभाषा	07
क्या है अंतर भाषा और बोली में ?	09
भाषा और बोलियों का इंद्रधनुष है भारत	10
मातृभाषा का महत्व फ्रांस-चीन...	11
हिंदी और इसकी बोलियों का विस्तार	12
हमारे संस्कृतनिष्ठ शहर	13
भारतीय भाषाओं की वरीयता सूची	14
हर कोस पर बदलती पंजाबी	15
शाब्बाश	15
गुजराती में काठियावाड़ी, कच्छी...	16
कैसे विकसित हुई है आदिवासी...	17
विश्व की प्रमुख भाषाओं में हिन्दी...	19
विश्व के सर्वाधिक बहुभाषी देश	21
मातृभाषा और बोली की सुगंध	23
विश्व की प्राचीनतम भाषाऐं	24
विश्व के प्रथम भाषा विज्ञानी - पाणिनि	25
साहित्य अकादमी पुरुस्कार से...	26
प्रसिद्ध विदेशी भाषाविद	27
भारत का केंद्रीय भाषा संस्थान	28
मातृभाषा अनुसार भारतीय जनगणना	29
ये पढ़ायी इतनी सस्ती नहीं !	30
धारदार कलम	31
सरल भाषा में	31
सामयिकी	32
संदर्भवश	33
हमारा शहर	34

रामनवमी और महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाऐं

प्रस्तुत विचार लेखकों के अपने विचार हैं। नवलय अनुबोध का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है

सम्पादकीय

थोड़ा सा ध्यान से देखें तो बड़ा विचित्र और युगों से चलायमान है संसार, कहीं आग बरसाता सूरज कहीं शून्य से नीचे का तापमान, कहीं अलग रंग और शारीरिक सौष्ठव के मानव, अलग अलग क्षेत्रों में उगती विशिष्ट वनस्पतियां व फल और हाँ, सम्प्रेषण के लिए विवशता बनी कुछ विशिष्ट ध्वनियाँ जिन्होंने बोली का स्वरुप कब ग्रहण कर लिया इसे इतिहास में स्पष्टतः रेखांकित करना संभव नहीं है लेकिन बोली से लेखन का उपजना, बोली के विस्तृत स्वरुप को शास्त्रीय प्रासंगिकता में पिरोकर उसे व्याकरण सम्मत बनाना यह एक सहज प्रक्रिया का क्रम रही होगी बोली और भाषा के इतिहास में.

नवलय का ''बोली–मातृभाषा अंक'' दो सहज कारणों से, पाठकों के सम्मुख बोलियों के विकास के क्रम में श्रेष्ठता और मिठास के साथ न्यूनतम शब्दों में अभिव्यक्ति के तिलिस्म से पाठकों को परिचित करने का प्रयास और हाँ एक संकट जो बोलियों के लुप्त होने के साथ दरवाजे पर खड़ा है, उसे पहचानना.

भाषा और बोली को छूते ही एक अनजाना सा प्रयास होने लगता है, किसी बोली या भाषा को किसी अन्य बोली या भाषा से उत्तम सिद्ध करने के प्रयत्नों ने आज तक इस संवेदनशील विषय का बहुत अधिक नुकसान किया है. एक उत्तरदायी पत्रिका के रूप में नवलय ''जस की तस धार दीन्हि चदरिया '' की प्रक्रिया में बोली और भाषा के सौंदर्य और उसके मर्म को एक विहंगम के रूप में प्रस्तुत करने के प्रयास तक सीमित रहेगा. इस अंक का एक उद्देश्य यह भी है कि बोलियों के क्रमिक रूप से नेपथ्य की ओर सरकते हुए विलुप्त होने का अर्थ समाज के लिए कितना घातक होगा. विश्व में कुल 7,000 भाषाएँ उपयोग में हैं जिनमें 450 भाषाएँ भारत में जीवित हैं. जिनमें 10 भाषाएं ऐसी हैं जिनके जानकारी 100 से भी कम लोग बचे हैं इन भाषाओं में ज्यादातर भाषा, मूल निवासियों द्वारा बोली जाती हैं लेकिन यह भाषा खतरनाक ढंग से लुप्त होती जा रही हैं वहीं 81 भारतीय भाषाओं की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। विश्व में खतरे में पड़ी भाषाओं के यूनेस्को एटलस के ऑनलाइन चैप्टर के अनुसार भारत की 197 भाषाएं ऐसी हैं जो असुरक्षित लुप्तप्राय या विलुप्त हो चुकी है. ये भाषाएँ मूलतः हिमालयन क्षेत्र की हैं. भाषा और बोली के जानकार मानते हैं कि पिछले 50 वर्षों में भारत अपनी 220 भाषाएँ खो चुका है. एक गणना के अनुसार अगले 100 वर्षों में विश्व की 90 प्रतिशत भाषाएँ और बोलियां अपना अस्तित्व खो चुकी होंगीं. वर्तमान में, 573 ज्ञात विलुप्त भाषाएँ हैं। ये ऐसी भाषाएँ हैं जो अब न तो बोली जाती हैं और न ही पढ़ाई जाती हैं। कई स्थानीय बोलियाँ थीं जिनकी वर्णमाला या शब्दों का कोई रिकॉर्ड नहीं था, और इसलिए वे हमेशा के लिए लुप्त हो गईं। अन्य भाषाएँ अपने समय की प्रमुख भाषाएँ थीं, लेकिन समाज और बदलती संस्कृतियों ने उन्हें पीछे छोड़ दिया। भाषा और बोली में भेद का एक रोचक उदाहरण है, दो अँग्रेज जो भारतीय भाषा सीख रहे थे, एक टेबल पर रखी तश्तरी को लेकर विवाद में थे एक उसे तश्तरी और दूसरा उसे रकाबी कह रहा था, दोनों ने पंच के रूप में एक भारतीय से पूछा आप इसे क्या कहते हैं, भारतीय का उतर था हम इसे प्लेट कहते हैं !

बोली की विशेषता है उसके परिवेश का एकदम सच्चा प्रतिनिधित्व. इस बात के बावजूद कि बोली की कोई लिपि होना आवश्यक नहीं, लेकिन ''सवारी बस में बैठ गयी'' को मालवा में जब कहा जाता है ''सवारी बस मा बठी गयी'', तो उसका स्पंदन भाषा से एकदम अलग और एकदम अनूठा होता है. ऐसे अनेक उदाहरणों से सज्जित है यह अंक.

यह अंक एक प्रयास है उन व्यक्तियों और संस्थानों को सामने लाने का, जिन्होंने बोली संरक्षण के लिए महत्त्व का काम किया है. मातृभाषा और बोली के विकास पर भी रोचक और ज्ञानवर्धक विहंगम प्रस्तुत है इस अंक में. बोली और मातृभाषा पर इस अंक को सीमित स्थान और समय में समेटना एक दुरूह काम है, चूंकि पत्रिका हिंदी भाषी है और इसके पाठक पूरे देश में होने के बाद भी बहुसंख्य भाषायी पाठकों का ध्यान रखना आवश्यक है जो पत्रिका की रचनाधर्मिता और पाठक की रसधार्मिता दोनों की सीमा का पालन आवश्यक है. आशा है पाठक गण संपादक मंडल की इस विवशता का सम्मान करेंगे.

भारत और विश्व के सन्दर्भ में प्रत्येक भाषा की पृष्ठभूमि में बोलियों की चर्चा होगी इस अंक में. हर कोस पर पानी और बानी में परिवर्तन के यथार्थ पर एक गंभीर विवेचना इस अंक का भाग है. आशा है पाठकों को मातृभाषा और बोली, के वृहत संसार का एक परिचय रोचक और ज्ञानवर्धक लगेगा. पाठकों की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी. ■

वर्मा

कालजयी कथन

बोली एक अनमोल है, जो कोई बोलै जानि,
हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि।।

(बोली के सम्बन्ध में इस लोकोक्ति का अर्थ है – बोली का मूल्य बोलने वाला ही जानता है जिसे मुख से बाहर आने के पूर्व हृदय के तराजू पर तौल लेना आवश्यक है) ■

अभिमत

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल

–राकेश कुमार जैन

जन्म लेने के बाद मानव जो प्रथम भाषा सीखता है उसे उसकी मातृभाषा कहते हैं। मातृभाषा, किसी भी व्यक्ति की सामाजिक एवं भाषाई पहचान होती है। मातृभाषा वह भाषा है जो बच्चे को जन्म के बाद से ही सुनने को मिलती है और उसकी भावनाओं और विचारों को एक निश्चित आकार देने में मदद करती है। मातृभाषा महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें अपनी जड़ से, अपनी संस्कृति से जोड़े रखती है। किसी व्यक्ति का वर्णन उसके द्वारा चुने गए विकल्पों और उसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा के आधार पर किया जा सकता है और किसी व्यक्ति द्वारा सीखी गई यह प्राथमिक भाषा उसकी मातृभाषा कही जाती है। लेकिन हमारे देश की विडम्बना यह है कि लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति ने हमारी शिक्षा व्यवस्था को भाषाई गुलाम बना दिया। अंग्रेजों के आगमन के पूर्व लगभग सारे देश में गुरूकुलों के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा, मातृभाषा में ही दी जाती थी। बहुत से अध्ययनों में यह बात उभरकर सामने आयी है कि आरम्भिक कक्षाओं में बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाने से बेहतर परिणाम मिलते हैं। ऐसे कुछ अध्ययन युनेस्को द्वारा भी किये गये हैं।

ऐसा नहीं है कि हमारे देश के चिन्तकों विचारकों को इस तथ्य का ज्ञान नहीं था। आज से 150 साल पहले "भारत दुर्दशा" जैसे निबंध लिखकर इस देश को जगाने वाले महान साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र ने मातृभाषा का महत्व कुछ इस प्रकार से बताया है–

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल ।।
पढ़ो-लिखो कोई लाख विधि भाषा बहुत प्रकार ।
पै जब कछु सोचिहो, निज भाषा अनुसार ।।
अंग्रेजी पढ़िके जदपि, सब गुन होत प्रबीन।
पै निज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन ।।
विविध कला, शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार ।
सब देसन से लै करहु, निज भाषा माँहि प्रचार ।।

अर्थात निज यानि अपनी भाषा से ही उन्नति संभव है, क्योंकि यही सारी उन्नतियों का मूलाधार है। मातृभाषा के ज्ञान के बिना हृदय की पीड़ा का निवारण संभव नहीं है। विभिन्न प्रकार की कलाएँ, असीमित शिक्षा तथा अनेक प्रकार का ज्ञान, सभी देशों से जरूर लेने चाहिये, परन्तु उनका प्रचार मातृभाषा के द्वारा ही करना चाहिये।

शिक्षा के माध्यम के सन्दर्भ में गांधी जी के विचार भी स्पष्ट थे। वे अंग्रेजी भाषा के लादने को विद्यार्थी समाज के प्रति ''कपटपूर्ण कृति'' समझते थे। उन्होंने 1909 ई. में ''स्वराज्य'' में अपने विचार प्रकट किए हैं। उनके अनुसार हजारों व्यक्तियों को अंग्रेजी सिखलाना उन्हें गुलाम बनाना है। उनका मानना था कि विदेशी भाषा माध्यम बच्चों पर अनावश्यक दबाव डालने, रटने और नकल करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है तथा उनमें मौलिकता का अभाव पैदा करता है। यह देश के बच्चों को अपने ही घर में विदेशी बना देता है। उनका कथन था कि– यदि मुझे कुछ समय के लिए निरकुंश बना दिया जाए तो मैं विदेशी भाषा माध्यम को तुरन्त बन्द कर दूंगा। उनका मत था कि मातृभाषा का स्थान कोई दूसरी भाषा नहीं ले सकती। उनके अनुसार, ''गाय का दूध तमाम गुणों के बावजूद, मां का दूध नहीं हो सकता।''

मातृभाषा नियमित रूप से माता–पिता या उनके परिवार के सदस्यों द्वारा बच्चे को सौंपी जाती है। मातृभाषा या मूल भाषा किसी के पालन–पोषण में एक आवश्यक पहलू है क्योंकि यह दुनिया को देखने के उनके तरीके और दूसरों के सामने खुद को अभिव्यक्त करने के तरीके को आकार देती है। शिशु तेजी से सीखते हैं क्योंकि वे अपने माता–पिता की नकल करके अपनी मातृभाषा सीखते हैं। अपनी मातृभाषा पर मजबूत पकड़ होने से अतिरिक्त भाषाएँ सीखने के लिए एक मजबूत आधार तैयार करने में भी मदद मिलती है। यदि कोई बच्चा अपनी मातृभाषा का व्याकरण अच्छी तरह से सीख लेता है, तो वह विभिन्न भाषाओं के शब्दों के अर्थ का अनुमान आसानी से लगा सकेगा।

मातृभाषा का दूसरा महत्व यह है कि मौलिक लेखन, चिंतन या रचनात्मकता को मातृभाषा में ही किया जा सकता है। विश्व में आज भी भारत की पहचान यहां की भाषा में लिखित उपनिषद, ब्रह्मसूत्र, योगसूत्र, रामायण, महाभारत, नाट्यशास्त्र आदि से है जो मौलिक रचनाएँ हैं, नीरद चौधरी, अरून्धती राय, राजा राव, खुशवन्त सिंह, विक्रम सेठ जैसे लेखकों से नहीं। समाज की रचनात्मकता और मौलिकता अनिवार्यतः उसकी अपनी भाषा से जुड़ी होती है। विश्व में मौलिकता का महत्व है, माध्यम का नहीं। इसलिए यदि स्वतंत्र भारत में मौलिक चिन्तन, लेखन का ह्रास होता गया तो उसका कारण 'अंग्रेजी का बोझ' है। मौलिक लेखन, चिन्तन विदेशी भाषा में प्रायः असंभव है। भारतीय बुद्धिजीवी अंग्रेजी में कुछ भी क्यों न बोलते रहें, वह वैसी ही यूरोपीय जूठन की जुगाली होगी, जिसकी बाहर पूछ नहीं हो सकती।

हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि मातृभाषा का उपयोग केवल संवाद करने के लिए ही नहीं बल्कि बहुत हद तक अपनी नस्ल की संस्कृति और परिष्कार को संरक्षित करने के लिए किया जाता है। आजकल अन्य भाषाओं की तुलना में हमारे देश की मातृभाषाऐं अपना महत्व खोती जा रही है। आज भारत की सभी मातृभाषाओं के संरक्षण के लिये सरकारी के अलावा सामाजिक और व्यक्तिगत प्रयास किये जाने की आवश्यकता है। ■

– मो. 9425005033 Email- bankchetna@gmail.com

नज़रिया

विस्मृत होती भाषाओं का दर्द और निदान

– दीपक भसीन

विशाल और प्राचीनतम संस्कृति वाले भारत में भाषाओं और उनसे जुड़ी संस्कृतियों का खजाना है। लेकिन हाईटेक युग में आने के बाद भारत में 42 भाषाएं या बोलियां संकट में हैं। ऐसा माना जाता है कि संकटग्रस्त इन भाषाओं को बोलने वाले कुछ हजार लोग ही हैं। गृह मंत्रालय के अधिकारी के अनुसार इन 42 भाषाओं में से कुछ भाषाएं विलुप्त प्राय भी हैं। संयुक्त राष्ट्र ने भी ऐसी 42 भारतीय भाषाओं या बोलियों की सूची तैयार की है। यह सभी खतरे में हैं और धीरे–धीरे विलुप्त होने की ओर बढ़ रही हैं। संकटग्रस्त भाषाओं में 11 अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की हैं।

इन भाषाओं के नाम :– ग्रेट अंडमानीज, जरावा, लामोंगजी, लुरो, मियोत, ओंगे, पु, सनेन्यो, सेंतिलीज, शोम्पेन और तकाहनयिलांग हैं। मणिपुर की सात संकटग्रस्त भाषाएं एमोल, अक्का, कोइरेन, लामगैंग, लैंगरोंग, पुरुम और तराओ हैं।

हिमाचल प्रदेश की चार भाषाएं :– बघाती, हंदुरी, पंगवाली और सिरमौदी भी खतरे में हैं। अन्य संकटग्रस्त भाषाओं में ओडिशा की मंडा, परजी और पेंगो हैं। कर्नाटक की कोरागा और कुरुबा जबकि आंध्र प्रदेश की गडाबा और नैकी हैं। तमिलनाडु की कोटा और टोडा विलुप्त प्राय हैं। असम की नोरा और ताई रोंग भी खतरे में हैं। उत्तराखंड की बंगानी, झारखंड की बिरहोर, महाराष्ट्र की निहाली, मेघालय की रुगा और पश्चिम बंगाल की टोटो भी विलुप्त होने की कगार पर पहुंच रही हैं।

आधिकारिक सूत्रों के अनुसार मैसूर स्थित भारतीय भाषाओं के केंद्रीय संस्थान देश की खतरे में पड़ी भाषाओं के संरक्षण और अस्तित्व की रक्षा करने के लिए केंद्रीय योजनाओं के तहत कई उपाय कर रहा है। इन कार्यक्रमों के तहत व्याकरण संबंधी विस्तृत जानकारी जुटाना, एक भाषा और दो भाषाओं में डिक्शनरी तैयार करने के काम किए जा रहे हैं। इसके अलावा, भाषा के मूल नियम, उन भाषाओं की लोककथाओं, इन सभी भाषाओं या बोलियों की खासियत को लिखित में संरक्षित किया जा रहा है। यह सभी वह भाषाएं हैं जिन्हें दस हजार से भी कम लोग बोलते हैं। जनगणना

निदेशालय की एक रिपोर्ट के मुताबिक भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 सूचीबद्ध भाषाएं हैं, जो आधिकारिक भाषाएं हैं। संविधान की आठवीं सूची में निहित अनुच्छेद 344(1) और 351 के तहत राजभाषा हिंदी समेत जिन 22 भाषाओं को मान्यता मिली है, वह इस प्रकार हैं – असमी, बांग्ला, बोडो, डोगरी, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मैतेई (मणिपुरी), मराठी, नेपाली, ओडिया, पंजाबी, संस्कृत, संथाली, सिंधी, तमिल, तेलुगु, उर्दू।

इसके अलावा, देश में 100 गैर–सूचीबद्ध भाषाएं भी हैं। इन्हें लोग बड़े पैमाने पर बोलते और लिखते–पढ़ते हैं। समझा जाता है कि इन भाषाओं को कम से कम एक लाख लोग या उससे अधिक लोग बोलते हैं। इनके अतिरिक्त देश में 31 अन्य भाषाएं भी हैं जिन्हें विभिन्न राज्य सरकारों और केंद्र शासित प्रदेशों ने आधिकारिक भाषा की मान्यता दी हुई है। जनगणना के आंकड़ों के अतिरिक्त देश में 1635 भाषाएं तार्किक रूप से मातृभाषा हैं। जबकि 234 अन्य मातृभाषाओं की भी पहचान की गई है जैसे अंगिका, बंजारा, बाजिका, भोजपुरी, भोति, भोतिया, बुंदेलखंडी, छत्तीसगढ़ी, धातकी, गढ़वाली, गोंडी, गुज्जरी, हो, कच्चाछी, कामतापुरी, कार्बी, खासी, कोडावा (कोरगी), कोक बराक, कुमांयुनी, कुरक, कुरमाली, लीपछा, लिम्बू, मिजो (लुशाई), मगही, मुंदरी, नागपुरी, निकोबारीज, हिमाचली, पाली, राजस्थानी, संबलपुरी/कोसाली, शौरसेनी (प्रकृत), सिरैकी, तेन्यिदी, तुल्लू। ■

– मो. 9425011865. Email : deepak_bhasin35@hotmail.com

भारत में बोली जाती हैं 576 भाषाऐं

भारत कम से कम 576 भाषाएं बोली जाती हैं। गृह मंत्रालय ने देशभर में 576 भाषाओं और बोलियों का मातृभाषा सर्वे पूरा कर लिया है। मंत्रालय की साल 2021–22 की रिपोर्ट के अनुसार, हर मातृभाषा के असली रूप को संरक्षित करने और उसका एनालिसिस करने के लिए नेशनल इंफॉर्मेटिक्स सेंटर (NIC) में एक 'वेब' कलेक्शन की प्लानिंग की गई है। रिपोर्ट के अनुसार, इसके लिए देश की भाषाओं से जुडी जानकारी को व्यवस्थित करने का काम अभी जारी है। मदर टंग सर्वे ऑफ इंडिया (MTSI) परियोजना के तहत, 576 मातृभाषाओं की 'फील्ड वीडियोग्राफी' की गई। मंत्रालय के अनुसार, छठी पंचवर्षीय योजना से लेंग्वेज सर्वे ऑफ इंडिया (LSI) एक नियमित शोध गतिविधि है। इस प्रक्रिया को शुरू हुए 30 साल से ज्यादा हो चुके हैं। इस प्रोजेक्ट के पहले के पब्लिकेशन में LSI झारखंड का काम पूरा हो गया है। वहीं, हिमाचल प्रदेश का काम पूरा होने वाला है। तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश में फील्डवर्क जारी है। मातृभाषाओं के 'स्पीच डेटा' का कलेक्शन करने के उद्देश्य से इसकी वीडियो को NIC सर्वर पर शेयर किया जाएगा। ■

2011 की जनगणना अनुसार भाषाएँ और बोलियों में से युक्तिसंगत बोलियों की गणना 1369 की गई है।

मातृभाषा

– अतुल कोठरी

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देश में 'भाषा' यह एक व्यापक चर्चा का विषय बना है– एक तरफ देश में मातृभाषा का महत्व कम होता दिखाई दे रहा है। विश्व में विगत 40 वर्षों में लगभग 150 अध्ययनों के निष्कर्ष हैं कि मातृभाषा में ही शिक्षा होनी चाहिए, क्योंकि बालक को माता के गर्भ से ही मातृभाषा के संस्कार प्राप्त होते हैं। भारतीय वैज्ञानिक सी. वी. श्रीनाथ शास्त्री के अनुभव के अनुसार अंग्रेजी माध्यम से इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त करने वाले की तुलना में भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ़े छात्र, अधिक वैज्ञानिक अनुसंधान करते हैं। राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र की डॉ नन्दिनी सिंह के अध्ययन (अनुसंधान) के अनुसार, अंग्रेजी की पढ़ाई से मस्तिष्क का एक ही हिस्सा सक्रिय होता है, जबकि हिन्दी की पढ़ाई से मस्तिष्क के दोनों भाग सक्रिय होते हैं। सर आइजेक पिटमैन ने कहा है कि संसार में यदि कोई सर्वांग पूर्ण लिपि है तो वह देवनागरी है। विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़ाई, अनुसंधान, पुस्तकें आदि आधुनिकता के भी विरूद्ध है, क्योंकि आधुनिक–ज्ञान, समाज के सभी वर्गो तक अपनी भाषा में ही पहुंचाया जा सकता है।

लेकिन दूसरी तरफ आज दुनिया के लगभग 170 देशों में किसी न किसी रूप में हिन्दी पढ़ायी जाती है। विश्व के 32 से अधिक देशों के विश्वविद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जा रही है। इंग्लैण्ड के सेंट जेम्स विद्यालय में 6 वर्ष तक संस्कृत पढ़ना अनिवार्य है। पहले भारत में भी जहां कहीं हिन्दी का विरोध (राजनैतिक आदि कारणो से) था या जहां हिन्दी का प्रयोग कम माना जाता था जैसा कि तमिलनाडु, मिजोरम, नागालैण्ड आदि. अब इन राज्यों में भी हिन्दी बोलने–सिखाने हेतु हिन्दी स्पीकिंग क्लासेस बड़ी मात्रा में प्रारंभ हुए हैं। अरूणाचल राज्य की एक प्रकार से राजभाषा हिन्दी है तथा नागालैण्ड राज्य ने द्वितीय राजभाषा करके हिन्दी को मान्यता दी है। दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा आदि की हिंदी परीक्षाओं में भारी संख्या में लोग सहभागी हो रहे है। वास्तव में भारतीय भाषाओं को अंग्रेजी से चुनौती नहीं है, बल्कि अंग्रेजी मानसिकता वाले भारतीयों से है। हमें हिन्दी की या भारत की किसी भाषा की वकालत नहीं करनी है, लेकिन राष्ट्रहित की दृष्टि से जो वैज्ञानिक एवं तर्कसम्मत है, उसकी वकालत अवश्य करनी है।

मातृभाषा सीखने, समझने एवं ज्ञान की प्राप्ति में सरल है। पूर्व राष्ट्रपति डॉ अब्दुल कलाम ने स्वयं के अनुभव के आधार पर कहा है कि ''मैं अच्छा वैज्ञानिक इसलिए बना, क्योंकि मैंने गणित और विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त की (धरमपेठ कॉलेज नागपुर)।'' अंग्रेजी भाषा माध्यम में पढ़ाई में अतिरिक्त श्रम करना पड़ता है। मेडिकल या इंजीनियरिंग पढ़ने हेतु पहले अंग्रेजी सीखनी पड़ती है बाद में उन विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। पंडित मदन मोहन मालवीय अंग्रेजी के ज्ञाता थे। उनकी अंग्रेजी सुनने अंग्रेज विद्वान भी आते थे। लेकिन उन्होंने कहा था कि ''मैं 60 वर्ष से अंग्रेजी का प्रयोग करता आ रहा हूँ, परन्तु बोलने में हिन्दी जितनी सहजता अंग्रेजी में नहीं आ पाती।'' इसी प्रकार विश्व कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है, ''यदि विज्ञान को जन–सुलभ बनाना है तो मातृभाषा के माध्यम से विज्ञान की शिक्षा दी जानी चाहिए।'' महात्मा गांधी का कथन है, "विदेशी माध्यम ने बच्चों की तंत्रिकाओं पर भार डाला है, उन्हें रट्टू बनाया है, वह सृजन के लायक नहीं रहे.... विदेशीभाषा ने देशी भाषाओं के विकास को बाधित किया है."

आज हमारे देश के कुछ तथाकथित विद्वानों द्वारा यह भी तर्क दिया जाता है, कि बिना अंग्रेजी के व्यक्ति या देश का विकास संभव नहीं है। लेकिन दुनिया के किसी भी महापुरूष ने यह बात नहीं कही है। अमरीका के बिल क्लिंटन से बराक ओबामा तक के राष्ट्रप्रमुखों ने अपने छात्रों को सम्बोधित करते हुए यह अवश्य कहा कि गणित और विज्ञान की पढ़ाई अच्छी करिये अन्यथा भारत और चीन के छात्र आपको पीछे छोड़ देंगे। उन्होंने अंग्रेजी के बारे में नहीं कहा। विश्व के आर्थिक एवं बौद्धिक दुष्टि से सम्पन्न जैसे अमरीका, रशिया, चीन, जापान, कोरिया, इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, इजरायल आदि देशों में जनसमाज, शिक्षा एवं शासन–प्रशासन की भाषा वहां की अपनी भाषा है। इजरायल के 16 विद्वानों ने नोबल पुरस्कार प्राप्त किए है। सभी ने अपनी मातृभाषा हिब्रू में ही कार्य किया है। इसी प्रकार माइक्रोसाफ्ट के सेवानिवृत वरिष्ठ वैज्ञानिक संक्रात सानू ने अपनी पुस्तक में दिये गये तथ्यों के आधार पर यह कहा है कि विश्व में सकल घरेलू उत्पाद में प्रथम पंक्ति के 20 देशों में सारा कार्य वह अपनी भाषा में ही कर रहे हैं, जिसमें चार देश अंग्रेजी भाषी है, क्योंकि उनकी मातृभाषा अंग्रेजी है। वे आगे लिखते है कि विश्व के सकल घरेलू उत्पाद में सबसे पिछड़े हुए 20 देशों में विदेशी भाषा में या अपनी और विदेशी दोनों भाषा में उच्च शिक्षा दी जा रही हैं तथा शासन–प्रशासन का कार्य भी इसी प्रकार किया जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि जब तक भारत में शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाएं एवं न्यायालयों सहित शासन–प्रशासन का कार्य अपनी भाषा में नहीं होगा तब तक देश आगे नहीं बढ़ सकता।

नीपा के पूर्व निदेशक श्री प्रदीप जोशी के अनुभव के अनुसार विश्व के ख्याति प्राप्त अणु वैज्ञानिक एवं जापान के हिरोशिमा विश्वविद्यालय के कुलपति अंग्रेजी नहीं जानते। अपने देश में यह भी तर्क दिया जाता है कि वर्तमान वैश्वीकरण के युग में विदेश जाने हेतु अंग्रेजी का ज्ञान आवश्यक है। भारत से हर वर्ष लगभग दो लाख लोग विदेश जाते हैं। उसमें भी सभी अंग्रेजी भाषा वाले देशों में नही जाते। इतने लोगों के लिए करोड़ो छात्रों पर अनिवार्य रूप से अंग्रेजी थोपना, यह अन्याय एवं अत्याचार नहीं तो और क्या है ? वैसे भी किसी भी भाषा को सीखना कोई कठिन कार्य नहीं है। किसी भी भाषा को 3 से 6

2011 की जनगणना अनुसार भाषाएँ और बोलियों में से 1474 ऐसी पाई गईं जिन्हें बोलने वाले कम हैं और उन्हें अन्य के रूप में मान्यता दी गई।

महीने में सीखा जा सकता है। दूसरी ओर मात्र अंग्रेजी के ज्ञान के कारण विश्व की अन्य भाषाओं के साहित्य में उपलब्ध ज्ञान का लाभ अपने देश को प्राप्त नहीं हो पा रहा है। रशियन, जर्मन भाषा में विज्ञान की पुस्तकें अधिक मात्रा में उपलब्ध हैं। इसी प्रकार अच्छे दार्शनिक जर्मन में हुए हैं एवं काव्य– साहित्य तथा पुरातत्व का अधिक साहित्य फ्रांस में प्राप्त है।

यह भी तर्क दिया जाता है कि उच्च शिक्षा एवं विशेषकर विज्ञान और तकनीकी विषयों की पुस्तकें, अपनी भाषा में उपलब्ध नहीं हैं। किसी भी भाषा की पुस्तकों का अनुवाद करना कोई कठिन कार्य नहीं है, परंतु हमारी मानसिकता भी इसी प्रकार की बनी है कि अंग्रेजी का साहित्य ही श्रेष्ठ है और उसकी नकल करके कार्य चलाया जा रहा है। इस कारण से मौलिक चिंतन के आधार पर अपने देश की आवश्यकतानुसार पुस्तकें, अनुसंधान आदि अकादमिक कार्य बहुत ही कम हो रहा है। हमारी अच्छाइयों और विशेषताओं का महत्त्व भी हमको ध्यान में नही आता। जैसे प्रयाग (इलाहाबाद) का सफल कुभं मेला या मुम्बई का डिब्बा प्रबंधन, ये भी एक श्रेष्ठ प्रबंधन के नमूने हैं। यह बात जब विदेश से लोग इस पर अध्ययन–अनुसंधान करने आए तब हमारे भारतीय प्रबंधन संस्थान के विद्वानों को इसका महत्व ध्यान में आया।

भारत के ख्याति प्राप्त अधिकतर वैज्ञानिकों ने अपनी शिक्षा मातृभाषा में ही प्राप्त की है। जिसमें प्रमुख रूप से जगदीश चन्द्र बसु, श्रीनिवास रामानुजन, डॉ अब्दुल कलाम आदि। इसी प्रकार वर्तमान में विभिन्न राज्यों की बोर्ड की परीक्षाओं में उच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी, मातृभाषा में पढ़ने वाले ही अधिक हैं। शिक्षा के विभिन्न आयोगों एवं देश के महापुरूषों ने भी मातृभाषा में शिक्षा होनी चाहिए, ऐसे सुझाव दिये है। महात्मा गांधी ने ठीक ही कहा है:–''बच्चों के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी ही आवश्यक है जितना शारीरिक विकास के लिए माँ का दूध''.

पिछले 175 वर्षों की अंग्रेजी शिक्षा से देश को काफी नुकसान हो रहा है। बालकों के मस्तिष्क पर अंग्रेजी के कारण बोझ बढ़ा है। यह एक प्रकार से उन पर अत्याचार है। इस कारण से उनका विकास ठीक ढंग से नहीं हो पा रहा है। वे न तो ठीक से अंग्रेजी सीख पाते हैं और न ही मातृभाषा। इसी प्रकार समय, परिश्रम और धन का भी अपव्यय हो रहा है। शिक्षा, सार्वत्रिक एवं सर्वस्पर्शीय नहीं हो पा रही है। हमारे यहां अंग्रेजी और गणित में सबसे अधिक बच्चे विफल होते हैं। विदेशी भाषा में जानकारी या कुछ मात्रा में ज्ञान प्राप्त हो सकता है। लेकिन ज्ञान–सृजन नहीं हो सकता। इसी प्रकार शोधकार्य में भी वैश्विक स्तर पर हम पिछड़ रहे हैं। अपने देश में शोधकार्य और साहित्य सृजन अधिकतर अंग्रेजी में होने से अपने देश के लोगों के बदले विदेश के लोग उनका ज्यादा लाभ उठा रहे हैं। हमारे देश के विद्वान विदेशों पर निर्भर हो रहें हैं। आज देश में अंग्रेजी, उच्च वर्ग की भाषा है और भारतीय भाषाएँ सामान्य लोगों की हैं, जिसके कारण देश में दो वर्ग खड़े हो गए हैं। विदेशी भाषाओं में मात्र अंग्रेजी के ज्ञान के कारण हम सारी दुनिया को अंग्रेजी चश्में से ही समझने का प्रयास करते हैं। वास्तव में दुनिया को ठीक से समझने एवं अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने हेतु कम से कम आठ भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है– रशियन, चाइनीज, जापानी, स्पेनिश, जर्मन, अंग्रेजी, अरबी, फ्रांसीसी है। अंग्रेजी का अधिक प्रभुत्व (प्रचलन) उन्ही देशों में ज्यादा है जो कभी अंग्रेजो की सरकार के अधीन (गुलाम) थे। अन्य देश अपनी–अपनी भाषा को महत्व दे रहे हैं। एक हम है कि अंग्रेजी की गुलामी ढ़ोते चले आ रहे हैं।

यह कहना उचित ही लगता है कि अंग्रेजी शोषण की भाषा बन गई है। चिकित्सा, इंजीनियरिंग न्याय एवं शासन–प्रशासन के स्तर पर सर्वत्र अंग्रेजी के प्रयोग के कारण भारत के लगभग 95 प्रतिशत लोग उसे समझ नहीं पाते। अंग्रेजी पुस्तकों का देश में 2000 करोड़ रूपये से अधिक का व्यवसाय है। फ्रांसीसी, जापानी, जर्मनी बोलने वाले 2 प्रतिशत से कम लोग होने के बावजूद उनकी दुनिया में प्रतिष्ठा है, जबकि हिन्दी बोलने वाले लगभग 70 करोड से अधिक होने के बाद भी हम दुनिया में अपमानित हैं। उदाहरण–विगत दिनों में अमरीका एवं आस्ट्रेलिया में भारतीय छात्रों की प्रताड़ना की अनेक घटनाएँ सामने आई हैं।

भाषा संस्कृति और संस्कारों की संवाहिका होती है। भाषा के पतन से संस्कृति व संस्कारों का भी पतन हो रहा है। भाषा बदलने से मूल्य भी बदल जाते हैं। भाषा संस्कृति का अधिष्ठान है। वर्तमान में भारत में जिस प्रकार अंग्रेजी का स्थान है, उसी प्रकार सन् 1362 तक ब्रिटेन में फ्रांसीसी का स्थान था। फिनलेन्ड में 100 वर्ष पूर्व स्वीडिश भाषा चलती थी, रशिया में जार के जमाने में फ्रांसीसी भाषा का दबदबा था। इन सभी देशों में वहां की जनता एवं शासकों की इच्छा शक्ति के कारण, आज वहां अपनी भाषाओं में सारा कार्य हो रहा है, आवश्यकता है अपने देश की जनता में इस प्रकार की इच्छाशक्ति जागृत करने की। इसकी शुरूआत स्वयं से करनी पडेगी। इस हेतु सभी स्थानों पर अपने हस्ताक्षर अपनी भाषा में करें। किसी भी भाषा में लिखें या बोलें तब 'भारत' शब्द का प्रयोग करें, इन्डिया का नहीं। कार्य व व्यवहार में अपनी भाषा का ही उपयोग करें। अपने बालकों को मातृभाषा में ही पढायें। अपने संगठन, संस्था के स्तर पर सारा कार्य व्यवहार अपनी ही भाषा में करें। अपने बालकों को मातृभाषा माध्यम के विद्यालय में ही पढाएं। घर, कार्यालय, दुकान में नाम पट्ट एवं पट्टिकाएं अपनी भाषा में ही लिखे। अपने व्यक्तिगत पत्र, आवेदन पत्र, निमंत्रण–पत्र आदि

भी मातृभाषा या भारतीय भाषा में लिखें या छपायें।

यह एक लम्बी लड़ाई है। इस हेतु समग्रता से प्रयास करना होगा। प्रथम देशव्यापी जन–जागरण हेतु गोष्ठी, परिचर्चा, कार्यशाला, परिसंवादों के आयोजन के माध्यम से समाज में अंग्रेजी के बारे में भ्रम फैलाया गया है उसको दूर करके अपनी भाषाओं की वैज्ञानिकता एवं तार्किकता को पुनः स्थापित करना होगा। दूसरा भारतीय भाषाओं में अनुवाद एवं साहित्य सृजन तथा अनुसंधान हेतु शोध केन्द्रों की स्थापना करनी होगी। जहां भी सरकार के स्तर पर भाषा के कानून का भंग किया जा रहा है या भारतीय भाषाओं को अपमानित किया जा रहा है, उसको रोकने के प्रयास करने होगें और कानूनी लड़ाई भी लड़नी होगी। देश की संसद में भाषा के प्रश्न पर व्यापक चर्चा हो, इस हेतु भारतीय भाषाओं के प्रति निष्ठा, प्रेम रखने वाले राजनैतिक पक्षों या सांसदो को एक मंच पर लाकर प्रयास करना होगा। हिन्दी और भारतीय भाषाओं को शिक्षा के माध्यम कराने के साथ–साथ उसे रोजगार से भी जोड़ना होगा। उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय में राज्य की राजभाषा एवं संघ की राजभाषा हिन्दी में कार्य हो, इस हेतु भाषा प्रेमी वकीलों का भी एक मंच बने। सभी भर्ती (प्रतियोगी) परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करके उसके साथ–साथ हिंदी और भारतीय भाषाओं को महत्व मिले, इस हेतु देश के छात्र संगठनों एवं छात्रों का भी एक मोर्चा बने। इन सारे कार्यों को क्रियान्वित करने हेतु भाषा प्रेमी सभी नागरिकों एवं सामाजिक, राजनैतिक नेतृत्व एवं संस्था, संगठनों को एक मंच पर लाकर इस संघर्ष को आगे बढ़ाना होगा तथा निरन्तर संघर्ष करना होगा। वह ध्रुव सत्य है कि विजयश्री भारतीय भाषाओं को मिलेगी। ■

(श्री अतुल कोठारी शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव हैं. शिक्षा बचाओ आन्दोलन को आरम्भ करने के साथ ही आपने अनेक शैक्षणिक शीर्ष दायित्वों का निर्वहन किया है. अनेकानेक व्याख्यानों, कार्यशालाओं तथा सम्पादक के रूप में आपका शिक्षा पर विशेष ध्यान रहा है)

मोबाइल :– 9868100445,
ईमेल :– atulssun@gmail.comatulssunatulssun

क्या है अंतर भाषा और बोली में ?

भाषा और बोली के बीच एक सुस्पष्ट विभाजन रेखा खींचना एक दुष्कर कार्य है. भाषा और बोली के अनेक विद्वानों ने इस विषय पर अपने विचार व्यक्त किये जिनके अनुसार भाषा और बोली में निम्न अंतर हैं :

– जब बोली किन्हीं कारणों से प्रमुखता प्राप्त कर लेती है तो भाषा का दर्जा प्राप्त कर लेती है. इसे कली का पुष्प बनना या शैशव का युवावस्था को प्राप्त होने जैसा समझा जा सकता है.

– किसी भाषा से संबंधित बोलियां किसी भी एक भाषा का ही अंग हो सकती है इसका अर्थ यह है कि भाषा के मूल स्वरूप से निकली हुई विभिन्न प्रकार की बोलियां उसी भाषा का अंग कहलाएगी और किसी भाषा की एक बोली दूसरी बोली से भिन्नता रखते हुए भी इतनी अधिक भिन्न नहीं होगी कि दूसरी बोली वाले उसे समझ ही न सके

– भाषा में साहित्य सृजन होता है किंतु बोलियों में साहित्य सृजन सामान्यतः नहीं होता. बोलियों में लोकगीत लोक कथाएं मौखिक रूप से करण परंपरा के द्वारा समाज में प्रयोग में आती रहती हैं. हिंदी में कुछ स्पष्ट अपवाद देखे जा सकते हैं जैसे मैथिली में रचे विद्यापति के पद या अवधि में रचित रामचरितमानस यह दोनों रचनाएं बोलियां की होकर भी किसी साहित्यिक परी निश्चित भाषाओं की रचनाओं के समक्ष रखी जा सकती हैं

– भाषा में अपेक्षाकृत स्थायित्व रहती है और बोलियां में परिवर्तनशीलता होती है.

– भाषा का उपयोग समाज में साहित्यिक व्यापारिक वैज्ञानिक सामाजिक और प्रशासनिक आदि सभी औपचारिक कार्यों में किया जाता है लेकिन बोली का क्षेत्र इतना व्यापक नहीं होता.

– बोली भाषा के सबसे छोटा स्वरूप होता है और अपेक्षाकृत सीमित होता है अतः एक भाषा के क्षेत्र में अनेक बोलियां होती है किंतु एक बोली के क्षेत्र में अनेक भाषाएं नहीं हो सकती.

– एक भाषा की विभिन्न बोलियां को बोलने वाले एक दूसरे की बोली समझ लेते हैं किंतु भाषा के साथ ऐसा नहीं है. आशय यह है कि एक भाषा की बोलियों में परस्पर बोधगम्यता होती है जबकि विभिन्न भाषाओं में नहीं. उदाहरण के लिए अवधी, ब्रज बोली बोलने वाले प्रायः परस्पर बातें समझ लेते हैं लेकिन यही बात फ्रेंच और संस्कृत के साथ संभव नहीं है.

– भाषा का अपना समृद्ध व्याकरण होता है किंतु बोली के साथ ऐसा नहीं होता अगर किसी बोली में व्याकरण का विकास होता है तो वह भविष्य में भाषा का स्वरूप ग्रहण कर सकती है. यद्यपि भाषा का विकास बोलियों के द्वारा ही होता है

– भाषा की एक सुरक्षित और सुनिश्चित लिपि होती है किंतु अधिकांश बोलियों के साथ ऐसा नहीं होता. जिन बोलियां में लिपि का प्रयोग होता है वह भी अपनी भाषा की लिपि से संबंध होता है.

– भाषा का प्रसार क्षेत्र विस्तृत होता है कि किंतु बोली का प्रयोग क्षेत्रीय स्तर पर होता है. कोस कोस पर बोली के स्वरूप में परिवर्तन दृष्टिगत होता है जबकि भाषा के साथ ऐसा नहीं होता. ■

2011 की जनगणना में वर्गीक्रत 121 बोली समूहों में अन्य मातृभाषाओं, जो कि इन भाषा समूहों से मिलती जुलती हैं, मिला दिया गया है।

भाषा और बोलियों का इंद्रधनुष है भारत

–मध्य प्रदेश राज्य में बोली जाने वाली प्रमुख बोलियाँ बुंदेली, बघेली, मालवी, निमाड़ी, भीली, ब्रज, कोरकू और गोंडी हैं।

–उत्तर प्रदेश राज्य में हिंदी, उर्दू, अवधी, ब्रज, भोजपुरी, बुंदेलखंडी और इंग्लिश बोली जाती है।

–हरियाणा राज्य में मेवाती, पंजाबी, उर्दू, बागरी, अहीरवाटी और ब्रज भाषा बोली जाती हैं।

–हिमाचल प्रदेश में पंजाबी, पहाड़ी, ब्रज भाषा, कांगड़ा भाषा, डोगरी, गढ़वाली, कुमाऊंणी, जगरण भाषा, बोधपुरी भाषा, मालवी, नेपाली और तिब्बती भाषा भी बोली जाती हैं।

–पश्चिमी पंजाब की बोलियों में मुलतानी, डेरावाली, अवाणकारी और पोठोहारी, एव पूर्वी पंजाबी की बोलियों में पहाड़ी, माझी, दूआबी, पुआधी, मलवई और राठी बोलियां प्रयुक्त होती हैं.

–राजस्थान राज्य में मारवाड़ी, मेवाड़ी, मेवाती, हाड़ौती बोलियां प्रचलन में हैं, लेकिन मारवाड़ी को सभी भाषाओं के बीच की मानक भाषा माना जाता है.

–जम्मू प्रदेश में उर्दू, डोगरी, कश्मीरी, लद्दाखी, बाल्टी, पहाड़ी, पंजाबी, गुजरी और ददरी भाषाओं का प्रयोग किया जाता है।

–बिहार प्रदेश में मैथिली, भोजपुरी, मगही, अंगिका, बज्जिका, नागपुरी, खोरठा, पंचपरगनिया, कुरमाली इत्यादि भाषायें प्रयुक्त होती हैं।

–झारखण्ड राज्य में हिंदी, बांग्ला, खोरठा, नागपुरी, कुरमाली, पंचपरगनिया यहाँ की प्रमुख भाषाएं हैं। झारखंड में बसने वाले स्थानीय हिन्द–आर्य भाषाएँ बोलने वाले लोगों को सादान कहा जाता है। इसके अलावा यहां संथाली, मुंडारी, भूमिज, हो, खड़िया, कुडुख जैसी जनजातीय भाषाएं बोली जाती है।

–छत्तीसगढ़ में छत्तीसगढ़ी रायपुर, बिलासपुर और दुर्ग में प्रयुक्त होती है. खल्टाही का प्रयोग रायगढ़ जिले के कुछ हिस्सों में होता है. यह बोली बालाघाट जिले के पूर्वी भाग में, कौड़िया में, साले–टेकड़ी में और भीमलाट में सुनाई देती है। सरगुजिया – सरगुजिया छत्तीसगढ़ी बोली सरगुजा में प्रचलित है।

–कर्नाटक की आधिकारिक भाषा कन्नड़ है जिसका उपयोग 64.75ः जनसँख्या द्वारा होता है. अन्य भाषा भाषी जनसख्या में उर्दू, तेलुगु, तमिल, मराठी, तुलु, हिन्दी, कोंकणी, मलयालम और कोडव तक्क भाषी हैं।

–पश्चिम बंगाल की आधिकारिक भाषा बंगाली और इंग्लिश है। वहीं दार्जिलिंग के 3 सब डिवीजन में नेपाली भाषा को मान्यता दी गई है। 2012 में यहां ओड़िया, हिंदी, संताली और उर्दू को भी मान्यता दी गई थी।

–मिजोरम की मुख्य बोलियाँ हैं – असो, छो, हलम, 'हिनार', लाई, लुसी, मारा, मिउ – खुमी, पाइट और थडो – कुकी।

–आंध्र प्रदेश में तेलुगु आधिकारिक भाषा है। आंध्र प्रदेश की भाषा द्रविड़ भाषा समूह से संबंधित है। आंध्र प्रदेश के लोगों द्वारा बोली जाने वाली मुख्य भाषाएं तेलुगू, हिंदी, बंजारा, उर्दू और अंग्रेजी हैं ।

–असम की आधिकारिक भाषा असमिया है। यह एक पूर्वी इंडो–आर्यन (इंडिक) भाषा है। असम की एकमात्र स्वदेशी इंडो–आर्यन भाषा, असमिया क्षेत्र में तिब्बती–बर्मन बोलियों के साथ शब्दावली, ध्वन्यात्मकता और संरचना में प्रभावित हुई है।

–ओड़िया भारत के ओड़िशा प्रान्त में बोली जाने वाली भाषा है। यह भाषा यहाँ के राज्य सरकार की राजभाषा भी है। भाषाई परिवार के तौर पर ओड़िआ एक आर्य भाषा है और नेपाली, बांग्ला, असमिया और मैथिली से इसका निकट संबंध है।

–मेघालय की आधिकारिक भाषा अंग्रेजी है। इसके अलावा अन्य मुख्यतः बोली जाने वाली भाषाओं में खासी, गारो, प्नार, बियाट, हजोंग एवं बांग्ला हैं।

–सिक्किम में प्रायः अंग्रेजी और हिन्दी भी बोली और समझी जाती हैं। अन्य भाषाओं मे भूटिया, जोंखा, ग्रोमा, गुरुंग, लेप्चा, लिम्बु, मगर, माझी, मझवार, नेपालभाषा, दनुवार, शेर्पा, सुनवार, तामाङ, थुलुंग, तिब्बती और याक्खा आदि भाषाएँ सम्मिलित हैं.

–उत्तराखंड में प्रयुक्त गढ़वाली और कुमाऊंनी भाषा हिंदी भाषा ही है. गढ़वाली कुमाऊनी यह राष्ट्रीय भाषा नहीं है अपितु यह हिंदी से ही विकसित हुई है.

–तेलंगाना के 76 प्रतिशत लोग तेलगु बोलते हैं। 12 प्रतिशत लोग उर्दू तथा 12 प्रतिशत लोग अन्य भाषाएं बोलते हैं। ■

60 साल पहले भारत में थी 1652 भाषाएं व बोलियां

साल 1961 की जनगणना के मुताबिक, 1652 भाषाएं और बोलियां थीं। पीपुल्स लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया ने 2010 में 780 भाषाओं–बोलियों की गिनती की। यूनेस्को के मुताबिक, इनमें से 197 भाषाएं खत्म होने की कगार और 42 भाषाओं व बोलियों का अस्तित्व खत्म हो चुका है। ■

2011 की जनगणना में 22 अनुसूचित भाषाएँ हैं और 99 गैर अधिसूचित भाषाएँ।

मातृभाषा का महत्व फ्रांस-चीन से सीखने की जरूरत

इस समय भारत के सभी शैक्षणिक परिसरों में इस बात की चिंता है कि सृजनशीलता कम हो रही है। शोध में दोहराव बहुत ज्यादा है, उसमें मौलिकता का अभाव है, नवाचार नहीं हो रहे हैं और ज्ञान में किसी प्रकार की वृद्धि नहीं हो पा रही है। विश्वविद्यालयों की संख्या तो हमने बढ़ा ली पर शैक्षणिक स्तर में सुधार नहीं हो सका। इसका एक मुख्य कारण यह भी है कि हम मातृभाषा में तो सुखपूर्वक विचार कर सकते हैं और गहराई से सोच सकते हैं, लेकिन अंग्रेजी में जो लिखा है उसका अनुवाद कर उन विचारों को ही उपयोग में लाते हैं। मौलिकता के लिए आवश्यक है कि हम उन गोचरों, पदार्थों तथा उन श्रेणियों को ठीक से समझ सकें, जो यहां की हैं। ज्ञान में प्रामाणिकता लाने के लिए हम भाषा का प्रयोग करते हैं। भाषा से ही सारा जगत दिखाई पड़ता है और समझा जाता है।

अंग्रेजों के द्वारा जो शिक्षा पद्धति शुरू की गई, उससे व्यवधान उत्पन्न हुआ और हम अपनी परंपरा से कटते चले गए। भाषा सेतु का काम करती है। यदि हम हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हैं तो हम जीवन के निकट होंगे, संस्कृति के निकट होंगे और शायद मौलिकता के निकट होंगे। आज हम सोचने, पढ़ने और लिखने को लेकर मुश्किल हालत में आ चुके हैं। एक काम एक भाषा में दूसरा काम दूसरी भाषा में। बहुत समय अनुवाद के काम में चला जाता है। गांधी जी ने कहा था कि हमें हिन्दी में और अन्य भारतीय भाषाओं में ईमानदारी से शिक्षण सामग्री तैयार करनी होगी, उसका उपयोग करना पड़ेगा और अपनी भाषा के लिए हममें आदर का भाव लाना पड़ेगा। भाषा कई तरह से हमारे जीवन में प्रवेश करती है। वस्तुतः भाषा के बिना हमारा काम चल नहीं सकता। भाषा केवल संवाद ही नहीं करती है। वह हमारी अभिव्यक्ति का अवसर भी प्रदान करती है। अच्छी भाषा का जो स्वाद है, वह कई तरह से मिलता है। वह संगीत, गायन, फिल्म या अच्छे लेखों, कविता व अन्य साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से मिल सकता है। यदि हम भाषा के प्रति थोड़ी सावधानी बरतें तो शायद एक बदलाव आ सकेगा।

भाषा का जीवन में क्या स्थान रहेगा यह इस बात पर निर्भर करता है कि उस भाषा को हम किन–किन क्षेत्रों में प्रयोग में ला पा रहे हैं। हिन्दी का उपयोग जितने अधिक क्षेत्रों में होगा, उसकी उपादेयता लोगों को उतनी ही ज्यादा दिखाई देगी। हमें यह देखना पड़ेगा कि कौन से अवसर हैं, जहां पर हम मातृभाषा को वह स्थान नहीं दे सकेंगे। अभी बहुत से हिन्दी बहुल क्षेत्र के विश्वविद्यालयों में अध्ययन–अध्यापन में हिंदी का वह स्थान नहीं है, जो होना चाहिए। हिन्दी का विभाग होने मात्र से हिंदी के साहित्य के अध्ययन की व्यवस्था तो बढ़ेगी, लेकिन हिन्दी भाषा के प्रयोग का विस्तार तब तक नहीं होगा जब तक वह समाज विज्ञान, भौतिक विज्ञान समेत ज्ञान विज्ञान के विविध क्षेत्रों में विचार, ज्ञानार्जन और चर्चा की भाषा नहीं होगी।

आज फ्रांस में फ्रेंच में सभी विषयों की पढ़ाई होती हैं, जर्मनी में जर्मन भाषा में, चीन और जापान की भी वही स्थिति है। उन भाषाओं को वह क्षमता दी गई कि ज्ञान विज्ञान के हर क्षेत्र में कार्य किया जाए। हमें विचार करना पड़ेगा कि हममें क्या कमी रह गई है। जो अच्छे विचारक होते हैं वे किसी भी भाषा में लिखते हैं और उस भाषा को पढ़कर लोग अपनी भाषा में अनुवाद करते हैं। बहुत सारे फ्रेंच विचारक और वैज्ञानिक हुए हैं, जिनके कार्य को लोगों ने फ्रेंच पढ़ सीखकर समझा। हम बहुत सारी बातें तो करते हैं लेकिन 75 वर्ष में भी हम विभिन्न विषयों की मूल सामग्री अपनी भाषा में तैयार नहीं कर सके हैं। यह युद्ध स्तर पर आवश्यक है कि हम विभिन्न विषयों में यथाशीघ्र स्तरीय सामग्री उपलब्ध कराएं। अभी भी हिन्दी भाषा में विभिन्न विषयों के लिए शोध पत्रिकाएं प्रकाशित नहीं होती हैं। यह चिंता की बात है। यह मान लिया गया है कि भारत का बुद्धिजीवी अंग्रेजी में ही सोच सकता है। अच्छे विचार व ज्ञान का प्रचार प्रसार सिर्फ अंग्रेजी में ही हो सकता है। जबकि भारत के 80 से 90 प्रतिशत लोगों के लिए उसका कोई महत्व नहीं है। यदि भारत एक देश है तो यहां पर आपस में संपर्क के लिए कोई एक भाषा तो होनी ही चाहिए। देश को विचार करना चाहिए और स्वागत करना चाहिए कि कोई एक संपर्क भाषा के रूप में आगे बढ़े, ताकि देश की अभिव्यक्ति देश की भाषा में हो। हिन्दी को यह स्थान देने पर सोचना चाहिए, क्योंकि भारत के सबसे अधिक लोग इसे बोलते हैं। ■

विश्व में भाषाओं के उपयोगकर्ताओं की संख्या

भाषा के प्रयोगकर्ताओं की संख्या के अनुसार वरीयता के पहले क्रम पर है अंग्रेजी (1132 मिलियन) चीनी (1117 मिलियन) हिंदी (615 मिलियन)और स्पेनिश (543 मिलियन) ■

अंग्रेजी भाषा के सबसे लम्बे शब्द

विश्व के सबसे लंबे शब्द कि जिसे डिक्शनरी में शामिल किया गया है तो वो है – 'pneumonoultramicroscopicsilicovolcanoconiosis'. ये शब्द फेफड़े की एक बीमारी का नाम है. ये इंसान को तब होती है जब धूल और प्रदूषण के कण इंसान के फेफड़ों में चले जाते हैं. वहीं इसके अलावा एक और शब्द है सबसे लंबा जो एक मक्खी का नाम है. PARASTRATIOSPHECOMYIA STRATIOSPHECOMYIOIDES, इसमें कुल 42 अक्षर हैं. ■

2001 के बाद 2011 की जनगणना में दो भाषाएँ पर्सिअन और सिमते कम हुई जबकि एक नई माओ भाषा जुड़ी जिसके 10,000 से अधिक बोलने वाले पाये गए।

हिंदी और इसकी बोलियों का विस्तार

बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ और राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली का क्षेत्र हिंदी पट्टी के रूप में भी जाना जाता है. उत्तरी, मध्य, पूर्वी और पश्चिमी भारत के कुछ हिस्सों को शामिल करने वाला एक भाषाई क्षेत्र है जहां विभिन्न केंद्रीय हिन्द–आर्य भाषाओं को 'हिंदी' शब्द के तहत सम्मिलित किया जाता है (उदाहरण के लिए, भारतीय जनगणना द्वारा) बोली जाने वाली हिंदी पट्टी का उपयोग कभी–कभी नौ भारतीय राज्यों को संदर्भित करने के लिए भी किया जाता है, जिनकी आधिकारिक भाषा हिंदी है. हिन्दी की अनेक बोलियाँ या उपभाषाएँ है जिनमें अवधी, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली, बघेली, हड़ौती,खड़ी बोली, हरयाणवी, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी, मालवी, नागपुरी, खोरठा, पंचपरगनिया, कुमाउँनी, मगही, मेवाती,फीजी हिन्दी आदि प्रमुख हैं। इनमें से कुछ में अत्यन्त उच्च श्रेणी के साहित्य की रचना हुई है। ऐसी बोलियों में ब्रजभाषा और अवधी प्रमुख हैं। यह बोलियाँ हिन्दी की विविधता हैं और यही उसकी शक्ति भी। वे हिन्दी की जड़ों को गहरा बनाती हैं। हिन्दी की बोलियाँ और उन बोलियों की उपबोलियाँ हैं जो न केवल अपने में एक बड़ी परंपरा, इतिहास, सभ्यता को समेटे हुए हैं वरन स्वतंत्रता संग्राम, जनसंघर्ष, वर्तमान के बाजारवाद के खिलाफ भी उसका रचना संसार अत्यंत सचेत है।

मोटे तौर पर हिन्द (भारत) की किसी भाषा को 'हिन्दी' कहा जा सकता है। भारत में अंग्रेजी शासन के पूर्व इसका प्रयोग इसी अर्थ में किया जाता था। पर वर्तमानकाल में सामान्यतः इसका व्यवहार उस विस्तृत भूखंड की भाषा के लिए होता है जो पश्चिम में जैसलमेर, उत्तर पश्चिम में अंबाला, उत्तर में शिमला, पूर्व में नवाडा, दक्षिण पूर्व में रायपुर तथा दक्षिण–पश्चिम में खंडवा तक फैली हुई है। हिन्दी के मुख्य दो भेद हैं – पश्चिमी हिंदी तथा पूर्वी हिंदी।

पश्चिमी हिन्दी का विकास शैरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। इसके अंतर्गत पाँच बोलियाँ हैं – खड़ी बोली, हरियाणवी, ब्रजभाषा, कन्नौजी और बुंदेली। खड़ी बोली अपने मूल रूप में मेरठ, रामपुर, मुरादाबाद, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, बागपत के आसपास बोली जाती है। इसी के आधार पर आधुनिक हिंदी और उर्दू का रूप खड़ा हुआ। बांगरू को जाटू या हरियाणवी भी कहते हैं। यह पंजाब के दक्षिण पूर्व में बोली जाती है। कुछ विद्वानों के अनुसार बांगरू खड़ी बोली का ही एक रूप है जिसमें पंजाबी और राजस्थानी का मिश्रण है। ब्रजभाषा मथुरा के आसपास ब्रजमंडल में बोली जाती है। हिंदी साहित्य के मध्ययुग में ब्रजभाषा में उच्च कोटि का काव्य निर्मित हुआ। इसलिए इसे बोली न कहकर आदरपूर्वक भाषा कहा गया। मध्यकाल में यह बोली संपूर्ण हिंदी प्रदेश की साहित्यिक भाषा के रूप में मान्य हो गई थी। पर साहित्यिक ब्रजभाषा में ब्रज के ठेठ शब्दों के साथ अन्य प्रांतों के शब्दों और प्रयोगों का भी ग्रहण है। कन्नौजी गंगा के मध्य दोआब की बोली है। इसके एक ओर ब्रजमंडल है और दूसरी ओर अवधी का क्षेत्र। यह ब्रजभाषा से इतनी मिलती जुलती है कि इसमें रचा गया जो थोड़ा बहुत साहित्य है वह ब्रजभाषा का ही माना जाता है। बुंदेली बुंदेलखंड की उपभाषा है। बुंदेलखंड में ब्रजभाषा के अच्छे कवि हुए हैं जिनकी काव्यभाषा पर बुंदेली का प्रभाव है।

पूर्वी हिंदी की तीन शाखाएँ हैं – अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी। अवधी अर्धमागधी प्राकृत की परंपरा में है। यह अवध में बोली जाती है। इसके दो भेद हैं – पूर्वी अवधी और पश्चिमी अवधी। अवधी को बैसवाड़ी भी कहते हैं। तुलसी के रामचरितमानस में अधिकांशतः पश्चिमी अवधी मिलती हैं और जायसी के पदमावत में पूर्वी अवधी। अवधी साहित्य की दृष्टि से बेहद ही समृद्ध है, सूफी काव्य का अधिकांश हिस्सा अवधी में ही रचा गया तथा सगुण भक्तिकाव्य भी प्रभूत मात्रा में अवधी में लिखा गया है। बघेली बघेलखंड में प्रचलित है। यह अवधी का ही एक दक्षिणी रूप है तथा इसमें लोकसाहित्य भरपूर मात्रा में रचा गया है। छत्तीसगढ़ी पलामू (झारखण्ड) की सीमा से लेकर दक्षिण में बस्तर तक और पश्चिम में बघेलखंड की सीमा से उड़ीसा की सीमा तक फैले हुए भूभाग की बोली है। इसमें प्राचीन साहित्य नहीं मिलता। वर्तमान काल में कुछ लोकसाहित्य रचा गया है। बिहारी, राजस्थानी बिहारी हिंदी के अंतर्गत मगही, भोजपुरी आदि बोलियां आती हैं

हिंदी प्रदेश की तीन उपभाषाएँ और हैं – बिहारी, राजस्थानी और पहाड़ी हिंदी। बिहारी की तीन शाखाएँ हैं – भोजपुरी, मगही और मैथिली। बिहार के एक कस्बे भोजपुर के नाम पर भोजपुरी बोली का नामकरण हुआ। पर भोजपुरी का प्रसार बिहार से अधिक उत्तर प्रदेश में है। बिहार के शाहाबाद, चंपारन और सारन जिले से लेकर गोरखपुर तथा बनारस तक का क्षेत्र भोजपुरी का है। हिंदी प्रदेश की बोलियों में भोजपुरी बोलनेवालों की संख्या सबसे अधिक है। इसमें प्राचीन साहित्य तो नहीं मिलता पर ग्रामगीतों के अतिरिक्त वर्तमान काल में कुछ साहित्य रचने का प्रयत्न भी हो रहा है। मगही के केंद्र पटना और गया हैं। इसके लिए कैथी लिपि का व्यवहार होता है। पर आधुनिक मगही साहित्य मुख्यतः देवनागरी लिपि में लिखी जा रही है। मगही का आधुनिक साहित्य बहुत समृद्ध है और इसमें प्रायः सभी विधाओं में रचनाओं का प्रकाशन हुआ है। राजस्थानी का प्रसार पंजाब के दक्षिण में है। यह पूरे राजपूताने और मध्य प्रदेश के मालवा में बोली जाती है। राजस्थानी का संबंध एक ओर ब्रजभाषा से है और दूसरी ओर गुजराती से। पुरानी राजस्थानी को डिंगल कहते हैं। जिसमें चारणों का लिखा हिंदी का आरंभिक साहित्य उपलब्ध है। राजस्थानी में गद्य साहित्य की भी पुरानी परंपरा है। राजस्थानी की चार मुख्य बोलियाँ या विभाषाएँ हैं– मेवाती, मालवी, जयपुरी और मारवाड़ी। मारवाड़ी का प्रचलन सबसे अधिक है। राजस्थानी के अंतर्गत कुछ विद्वान् भीली को भी लेते हैं।

देश में सबसे अधिक बोलने वाली संख्या हिन्दी भाषी की है और सबसे कम संस्कृत भाषी की।

पहाड़ी उपभाषा राजस्थानी से मिलती जुलती हैं। इसका प्रसार हिंदी प्रदेश के उत्तर हिमालय के दक्षिणी भाग में नेपाल से शिमला तक है। इसकी तीन शाखाएँ हैं – पूर्वी, मध्यवर्ती और पश्चिमी। पूर्वी पहाड़ी नेपाल की प्रधान भाषा है जिसे नेपाली और परंबतिया भी कहा जाता है। मध्यवर्ती पहाड़ी कुमायूँ और गढ़वाल में प्रचलित है। इसके दो भेद हैं – कुमाउँनी और गढ़वाली। ये पहाड़ी उपभाषाएँ नागरी लिपि में लिखी जाती हैं। इनमें पुराना साहित्य नहीं मिलता। आधुनिक काल में कुछ साहित्य लिखा जा रहा है। कुछ विद्वान् पहाड़ी को राजस्थानी के अंतर्गत ही मानते हैं। पश्चिमी पहाड़ी हिमाचल प्रदेश में बोली जाती है। इसकी मुख्य उपबोलियों में मंडियाली, कुल्लवी, चाम्बियाली, क्यौंथली, कांगड़ी, सिरमौरी, बघाटी और बिलासपुरी प्रमुख हैं।

हिन्दी भाषा का भौगोलिक विस्तार काफी दूर–दूर तक है जिसे तीन क्षेत्रों में विभक्त किया जा सकता हैः–

(क) हिन्दी क्षेत्र – हिन्दी क्षेत्र में हिन्दी की मुख्यतः सत्रह बोलियाँ बोली जाती हैं, जिन्हें पाँच बोली वर्गों में इस प्रकार विभक्त कर के रखा जा सकता है– पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी हिन्दी, पहाडी हिन्दी और बिहारी हिन्दी।

(ख) अन्य भाषा क्षेत्र – इनमें प्रमुख बोलियाँ इस प्रकार हैं– दक्खिनी हिन्दी (गुलबर्गी, बीदरी, बीजापुरी तथा हैदराबादी आदि), बम्बइया हिन्दी, कलकतिया हिन्दी तथा शिलंगी हिन्दी (बाजार–हिन्दी) आदि।

(ग) भारतेतर क्षेत्र – भारत के बाहर भी कई देशों में हिन्दी भाषी लोग काफी बड़ी संख्या में बसे हैं। सीमावर्ती देशों के अलावा यूरोप, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका, रुस, जापान, चीन तथा समस्त दक्षिण पूर्व व मध्य एशिया में हिन्दी बोलने वालों की बहुत बडी संख्या है। लगभग सभी देशों की राजधानियों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी एक विषय के रूप में पढी–पढाई जाती है। भारत के बाहर हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ – ताजुज्बेकी हिन्दी, मारिशसी हिन्दी, फीजी हिन्दी, सूरीनामी हिन्दी आदि हैं.

हिंदी प्रदेशों की हिंदी बोलियाँ हैं –

पश्चिमी हिंदी :– खड़ी बोली–देहरादून, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बिजनौर, रामपुर और मुरादाबाद।
बृजभाषा–आगरा, मथुरा, अलीगढ़, मैनपुरी, एटा, हाथरस, बदायूं, बरेली, धौलपुर।
हरियाणवी–हरियाणा और दिल्ली के देहाती प्रदेश।
बुंदेली–झांसी, जालौन, हमीरपुर, ओरछा, सागर, नरसिंहपुर, सिवनी, होशंगाबाद,

कन्नौजी : उ.प्र. के इटावा, फर्रूखाबाद, शाहजहांपुर, कानपुर, हरदोई और पीलीभीत के अचल में बहुतायत से बोली जाती है।

पूर्वी हिंदी में अवधी – कानपुर, लखनऊ, बाराबंकी, उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर, फतेहपुर, अयोध्या, गोंडा, प्रयागराज, बलरामपुर, सिद्धार्थनगर, बस्ती, अमेठी, कौशाम्बी, चित्रकूट, भदोही, बहराइच, श्रावस्ती, अम्बेडकरनगर, लखीमपुर, जौनपुर, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर जिले।

बघेली – म.प्र. के रीवा, सतना, मैहर, उमरिया, शहडोल, अनूपपुर, सीधी, नागौद।

छत्तीसगढ़ी – बिलासपुर, दुर्ग, रायपुर, रायगढ़, राजनांदगांव, कांकेर, महासमुंद, सरगुजा, कोरिया।

राजस्थानी, मारवाड़ी भाषा, जयपुरी, मेवाती, मालवी, पहाड़ी, पूर्वी पहाड़ी, जिसमें नेपाली आती है. मध्यवर्ती पहाड़ी, जिसमें कुमाऊंनी और गढ़वाली बोलियां आती है। पश्चिमी पहाड़ी, जिसमें हिमाचल प्रदेश की अनेक बोलियां आती हैं। ■

हमारे संस्कृतनिष्ठ शहर

भारत के इन गांवों में आज भी बोली जाती है संस्कृत, हर घर से है एक इंजीनियर है. संस्कृत सबसे पुरानी भाषा तो है ही साथ ही कई भाषाओं की जनक संस्कृत काफी कठिन भी है. आज भी भारत के कुछ गांवों में बोली जाती है संस्कृत .भारत में संस्कृत का इतिहास काफी पुराना है. इस भाषा से निकली अन्य भाषाओं ने तो अपनी जगह बना ली, लेकिन धीरे–धीरे ये लोगों के बोलचाल से लुप्त हो गई. अब केवल पूजा–पाठ के मंत्रों में ही संस्कृत भाषा का उपयोग किया जाता है. हालांकि शायद आपको जानकर आश्चर्य हो कि अब भी भारत के कुछ गांव ऐसे हैं जहां संस्कृत भाषा ही बोलचाल की मुख्य भाषा है.

संस्कृत भाषा के जनक महर्षि पाणिनी थे. माना जाता है भारत में पुरातनकाल में संस्कृत ही बोलचाल की भाषा हुआ करती थी. फिर धीरे–धीरे इसी भाषा से निकली हिंदी भाषा ने अपनी जगह कब बना ली किसी को पता भी नहीं चला.

मत्तूर – कर्नाटक के मत्तूर में आज भी लोग संस्कृत में बात करते हैं. मत्तूर के लोगों की प्रथम भाषा यही है. दिलचस्प बात ये है कि यहां आपको हर घर में डॉक्टर इंजीनियर मिल जाएंगे.

झिरी – मध्यप्रदेश के राजगढ़ जिले में स्थित झिरी में बच्चे–बुजुर्ग सभी संस्कृत में बातचीत करते हैं. यहां के लोगों की प्रथम भाषा यही है.

सासन – ओडिशा के गुर्दा जिले में स्थित सासन संस्कृत गीतकार जयदेव का जन्म स्थल है. इस गांव में भी लोगों की मुख्य भाषा संस्कृत है और हर व्यक्ति इसी भाषा में बातचीत करता है.

बघुवार– मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर में स्थित बघुवार में आज भी एक–दूसरे से संस्कृत भाषा में ही बातचीत होती है. कभी आप जाएंगे तो यहां हर व्यक्ति आपको संस्कृत में बात करता हुआ मिल जाएगा.

गनोडा – राजस्थान के बंसवाड़ा में स्थित गनोडा में प्राथमिक भाषा संस्कृत ही है. यहां बच्चों से लेकर बूढ़े तक संस्कृत में बात करते हैं. ■

हिन्दी से मिलती जुलती मैथिली को अलग भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है जिसके बोलने वाले 1.36 करोड़ हैं।

भारतीय भाषाओं की वरीयता सूची

विश्व के सातवें बड़े देश और विश्व में सर्वाधिक जनसँख्या (140 करोड़) और अनेक धर्मों वाले देश भारत में अनेक संस्कृतियां सम्मिलित हैं. 2011 के जनगणना विश्लेषण के अनुसार, 121 करोड़ से अधिक की आबादी वाले भारत में 121 भाषाएं हैं जो 10,000 या अधिक लोगों द्वारा बोली जाती हैं. एक जनगणना विश्लेषण के अनुसार, भारत में 19,500 से अधिक भाषाएं या बोलियां मातृभाषा के रूप में बोली जाती हैं. 2011 की जनगणना के अनुसार देश में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं और बोलने वालों की संख्या इस प्रकार है.

1. हिंदी – 52.83 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है. हिंदी भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है. यह देश की आधिकारिक भाषाओं में से एक है. 2011 की जनगणना के अनुसार, 2001 की जनगणना की तुलना में 2011 में मातृभाषा के रूप में हिंदी बोलने वालों की संख्या में वृद्धि हुई है. 2001 में 41.03 प्रतिशत लोग मातृभाषा के रूप में हिंदी बोलते थे, जबकि 2011 में यह बढ़कर 43.63 प्रतिशत हो गया. मंदारिन, स्पैनिश और अंग्रेजी के बाद हिंदी दुनिया में चौथी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा भी है. वर्तमान समय में भारत में 52,83,47,193 हिंदी भाषी हैं. यह उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली सहित देश के लगभग सभी राज्यों में बोली जाती है. हिंदी संस्कृत भाषा की वंशज है और यह द्रविड़, अरबी, पुर्तगाली, अंग्रेजी, फारसी और तुर्की भाषाओं से प्रभावित है। हिंदी में बोली जाने वाली भाषाओं में अवधी, ब्रज और खड़ी भाषा शामिल हैं।

2. बांग्ला – 9.72 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है. भारत की दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बंगाली है, जिसे 9. 72 करोड़ नागरिक यानी कुल आबादी का 8.03 प्रतिशत लोग बोलते हैं. बंगाली एक भारतीय–आर्यन भाषा है जो ज्यादातर दक्षिण एशिया में बोली जाती है. यह भारत के उत्तर–पूर्व में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह सहित अधिकांश राज्यों में सबसे प्रमुख भाषा है. बंगाली शुरुआत में पुराने इंडो–आर्यों की एक धर्मनिरपेक्ष भाषा थी और फारसी और अरबी से प्रभावित थी. यह भाषा अलग–अलग अवस्थाओं में भिन्न–भिन्न होती है, विशेषकर उपयोग, उच्चारण, शब्द और ध्वन्यात्मक रूप में. भारत में, बंगाली ज्यादातर पूर्वी राज्यों पश्चिम बंगाल, झारखंड, असम और त्रिपुरा में बोली जाती है. यह भाषा मध्य पूर्व, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जापान, ब्रिटेन और कनाडा में भी बोली जाती है. बंगाली भी कराची विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित कार्यक्रमों का एक हिस्सा है.

3. मराठी – देश में कुल 8.30 करोड़ लोग मराठी बोलते हैं, जो कुल जनसंख्या का 6.86 प्रतिशत है. मराठी एक इंडो–आर्यन भाषा है जो गोवा और महाराष्ट्र सहित देश के पश्चिमी भाग के राज्यों की आधिकारिक भाषा के रूप में बोली जाती है. मराठी में लगभग 42 विभिन्न बोलियां बोली जाती हैं. उल्लेखनीय है कि मराठी व्याकरण में तीन लिंग होते हैं.

4. तेलुगु – 8.11 करोड़ लोग द्वारा बोली जाती है. तेलुगु एक द्रविड़ भाषा है जो भारत में देश के कई राज्यों में व्यापक रूप से बोली जाती है. यह भाषा मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और यनम राज्यों में बोली जाती है. इसके भाषण में अन्य बोलियों में बेराड, वाडागा, डोमारा, सलावरी, नेल्लोर, कोमताओ और कामथी शामिल हैं. यह भाषा संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, संयुक्त अरब अमीरात और दक्षिण अफ्रीका सहित कई देशों में भी बोली जाती है.

5. तमिल – के 6.90 करोड़ वक्ता हैं. तमिल भाषा की जड़ें द्रविड़ भाषा से जुड़ी हुई हैं. हालांकि, यह सिंगापुर और श्रीलंका दोनों की आधिकारिक भाषा है और भारत में भी व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है. तमिल उल्लेखनीय रूप से दुनिया की सबसे पुरानी जीवित भाषाओं में से एक के रूप में जानी जाती है ? इसकी साहित्यिक परंपरा 2,000 वर्षों से भी अधिक पुरानी है. अधिकांश तमिल भाषा दक्षिणी भारत में श्रीलंका के तट के पास बोली जाती है.

6. गुजराती – 5.54 करोड़ लोग द्वारा बोली जाती है. गुजराती एक इंडो–आर्यन भाषा है. यह गुजरात की आधिकारिक भाषा है, जो उत्तर पश्चिम भारत में स्थित एक राज्य है. गुजराती भाषा का विकास संस्कृत से हुआ है.

7. उर्दू – भारत में लगभग 5.07 करोड़ उर्दू बोलने वाले हैं। उर्दू भी देश की आधिकारिक भाषाओं में से एक है. यह पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, तेलंगाना और झारखंड राज्यों में आधिकारिक भाषा के रूप में सूचीबद्ध है. उर्दू पाकिस्तान की आधिकारिक भाषा भी है.

8. कन्नड़ – तमिल की तरह कन्नड़ भी एक द्रविड़ भाषा है. यह भारत में 4.37 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है. कन्नड़ विश्व की पुरानी जीवित भाषाओं में से एक है. यह भाषा भारत के बाहर ऑस्ट्रेलिया, संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा जैसे स्थानों में भी बोली जाती है. इनमें से कई वक्ता भारतीय प्रवासी के सदस्य भी हैं. ऐसा अनुमान है कि कन्नड़ में लगभग 20 विभिन्न बोलियां हैं.

9. उड़िया – उड़िया भारत की आधिकारिक भाषा है और इसके अधिकांश बोलने वाले ओडिशा राज्य में केंद्रित हैं. यह भाषा देशभर में 3.75 करोड़ बोलने वालों द्वारा बोली जाती है.

10. मलयालम – भारत में लगभग 3.48 करोड़ वक्ता मलयालम बोलते हैं, जो केरल, पुडुचेरी और लक्षद्वीप राज्यों में बोली जाती है. इस भाषा की जड़ें भी द्रविड़ भाषा से हैं.

11. अंग्रेजी भाषा – 2,59,678 लोग द्वारा बोली जाती है. हिंदी के साथ अंग्रेजी भाषा भी भारत की संघीय सरकार की आधिकारिक भाषाओं में से एक है. भारत के कुछ राज्यों जैसे नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश में, अंग्रेजी एक आधिकारिक भाषा है. 1800 के दशक में ईस्ट इंडिया कंपनी के दिनों से, भारत के स्कूलों में अंग्रेजी पढ़ाई जाती थी. ऐसा देखा गया है कि भारत के अधिकांश लोग अंग्रेजी, हिंदी और एक मातृभाषा बोलते हैं., अंग्रेजी अभी भी भारत के दक्षिण और उत्तर में लोगों के बीच संचार का आम जरिया है. ■

देश में हिन्दी भाषियों की संख्या 1971 में 36.99 प्रतिशत थी जो कि 2011 में 43.63 प्रतिशत हो गई।

हर कोस पर बदलती पंजाबी

पंजाबी बोलियां पाकिस्तान और भारत के पंजाब में बोली जाने वाली श्रंखलाओं का नाम है. पंजाब के बंटवारे के बाद जिस भाषा और बोली का प्रयोग पाकिस्तान में होता है उसे, ''लहन्दे पंजाब की बोली'' कहा जाता है और जो भारत में बोली जाती है उसे ''चढ़ते पंजाब की बोली'' कहा जाता है। भारतीय पंजाब में, नागरी लिपि से निर्मित गुरुमुखी लिपि पंजाबी की आधिकारिक लिपि है और पाकिस्तानी पंजाब में, शाहमुखी आधिकारिक लिपि है।

प्रमुख बोलियाँ : प्रमुख बोलियाँ 4 हिस्सों में बांटी जा सकती है : माझी, मलवई, दुआबी ते पुआधी।

माझी :– पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के लाहौर, गुजरांवाला, शेखूपुरा, कसूर, सियालकोट, नरोवाल, ओकरा, पाकपतन, साहीवाल, हफराबाद, ननकाना साहिब और मंडी बहाउद्दीन जिलों में बहुसंख्यक लोगों द्वारा बोली जाने वाली पंजाबी है। पाकिस्तानी पंजाब के बाकी हिस्सों में, और पाकिस्तान के अन्य प्रांतों के सभी बड़े शहरों में भी इसकी बड़ी उपस्थिति है। भारत में यह अमृतसर, तरनतारन साहिब, पठानकोट और पंजाब राज्य के गुरदासपुर जिलों में बोली जाती है.

मलवई :– सतलुज नदी के भारतीय पंजाब के दक्षिणी भाग में और पाकिस्तान के बहावलनगर और विहारी जिलों में बोली जाती है। यह बोली लुधियाना, मोगा, फिरोजपुर, फाजिल्का, मुक्तसर, फरीदकोट, भटिंडा, बरनाला, संगरूर और मनसा जिलों और राजस्थान के गंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों और हरियाणा के सिरसा और फतेहाबाद जिलों में बोली जाती है।

दोआबी :– भारतीय पंजाब के साथ–साथ पाकिस्तान पंजाब के कुछ हिस्सों में बोली जाती है, ''दो आबी'' शब्द का अर्थ है ''दो नदियों के बीच की भूमि'' और यह बोली दोआबा नामक क्षेत्र में ब्यास और सतलुज की नदियों के बीच बोली जाती है। भारतीय पंजाब में जालंधर, कपूरथला, होशियारपुर और नवांशहर जिले में शामिल हैं, हिमाचल प्रदेश का ऊना जिला और साथ ही पाकिस्तान पंजाब में टोबा टेक सिंह और फैसलाबाद जिले हैं जहाँ यह पूर्वी पंजाब और उनके पूर्ववर्ती प्रवासियों द्वारा बोली जाती है। इस बोली को पाकिस्तान में ''फैसलाबादी पंजाबी'' के रूप में जाना जाता है।

पुआधी :– पुआधी बोली बोलने वाले क्षेत्र को पोवाद बोलते है जो सतलुज और घग्गर नदियों के बीच हरियाणा का एक हिस्सा है। अंबाला जिला (हरियाणा) से सटे रूपनगर के दक्षिण, दक्षिण–पूर्व और पूर्व में स्थित हिस्सा पोवाद है। पोवाद का विस्तार रूपनगर जिले के उस हिस्से से है जो सतलुज के पास पूर्व में घालगर नदी से आगे काला अंब तक है, जो कि हिमाचल प्रदेष और हरियाणा राज्यों की सीमा पर है। फतेहगढ़ साहिब जिले के कुछ हिस्से, और राजपुरा जैसे पटियाला जिलों के हिस्से भी पोवाद का हिस्सा हैं। यह भाषा वर्तमान पंजाब के साथ–साथ हरियाणा में एक बड़े क्षेत्र पर बोली जाती है। पंजाब में, खरड, कुराली, रोपड़, नूरपुरबेदी, मोरिंडा, पायल, राजपुरा और समरला ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ पुआधी बोली जाती है और बोली क्षेत्र में फतेहाबाद जिले में पिंजौर, कालका, इस्माइलाबाद, पिहोवा से बांगर क्षेत्र भी सम्मिलित हैं .

एक सरल उदाहरण से इसे समझना रोचक होगा. हिंदी में : आप कहाँ से हो ? इस प्रश्न को माझी में कहा जायेगा तुसी किथों दे हो ?, इसी प्रश्न को दोआबी में कहा जायेगा किथों आ तू ? और मलवई में कहा जायेगा किदरो आ तू ? और पुआधी में पूछा जायेगा किस पासे दा तू ? ■

शाब्बाश

उमा माहेश्वरी डी

उमा माहेश्वरी डी पहली महिला हरिकथा गायिका हैं जिन्हें पद्मश्री पुरस्कार से अलंकृत किया गया है। संस्कृत भाषा में पाठ करने वाली उमा कई रागों में कथाएं सुनाती हैं। भैरवी, शुभपंतुवरलि, केदारम और कल्याणी जैसे रागों में हरिकथा को लोकप्रिय बनाने वाली उमा के योगदान ने कई युवाओं को प्रोत्साहित किया है. वह तेलुगु और संस्कृत में पारंगत लेखक हैं. वह लड़कियों को परंपरा की बेड़ियों से आगे आकर कुछ नया करने की सीख देती हैं. आंध्र प्रदेश की हरिकथा प्रतिपादक डी उमा माहेश्वरी को कला के संरक्षण के उनके प्रयासों के लिए इस वर्ष उन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

हरिकथा, जो महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक में प्रचलित है, एक भारतीय महाकाव्य के कवि या संत की आंखों के माध्यम से बताए गए एक विशिष्ट विषय पर आधारित संगीत, नृत्य और कविता का उपयोग करके कहानी कहने का एक रूप है। कृष्णा जिले के एक प्रसिद्ध कलाकार परिवार में जन्मी उमा माहेश्वरी वैश्विक स्तर पर विभिन्न राग प्रस्तुत करने वाली पहली महिला हरिकथा कलाकार हैं। उनके पिता करीमनगर के वेमुलावाड़ा मंदिर में नादस्वरम कलाकार थे। उन्होंने तेलुगु में 800 और संस्कृत में लगभग 600 प्रस्तुतियाँ दी हैं और राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित हैं। एक यूट्यूब चैनल को दिए अपने एक साक्षात्कार में, उमा माहेश्वरी ने कहा कि वह चौदह साल की उम्र में अपने परिवार के साथ शहर में हरिकथा प्रदर्शन के दौरान कला की ओर आकर्षित हुईं। एक स्थानीय जमींदार ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और उन्हें हरिकथा समूह में भर्ती कराया, जहाँ उन्होंने अपना औपचारिक प्रशिक्षण शुरू किया। ■

संख्या के आधार पर बंगाली भाषियों की स्थिति 1971 में दूसरे स्थान पर थी जो कि 2011 में भी दूसरे स्थान पर रही।

गुजराती में काठियावाड़ी, कच्छी और सूरती

भारतीयता का अर्थ है विविधता. चाहे वह हमारी परंपराओं, संस्कृतियों, पहनावे, भोजन या भाषाओं में हो। गुजराती एक जीवंत और मधुर भाषा है जो इंडो–आर्यन परिवार का हिस्सा है, और गुजराती लिपि ? यह पूरी तरह से कला का काम है. इस भाषा की विभिन्न बोलियाँ हैं, जो मुख्य रूप से राज्य के भीतर क्षेत्रीय रूप से अलग–अलग हैं। जैसे सौराष्ट्र में काठियावाड़ी, दक्षिण गुजरात में सुरती, कच्छ में कच्छी भाषा और मध्य गुजरात में चरोटारी भाषा। भारत में दो लोकप्रिय भाषाएँ गुजराती और हिंदी में बहुत समानता है क्योंकि वे दोनों प्राचीन भाषा संस्कृत से उत्पन्न हुई हैं। इस साझा वंशावली का मतलब है कि गुजरात और हिंदी की भाषाओं में कई समान शब्द, व्याकरण नियम और वाक्य संरचनाएं हैं। ऐसा लगता है जैसे उनमें पारिवारिक समानता हो! गुजराती पूरे गुजरात में बोली जाने वाली प्रमुख भाषा है। गुजराती भाषा अपने इतिहास में विभिन्न चरणों से गुजरी है। इसकी शुरुआत पुरानी गुजराती से हुई, जिसे राजस्थान और गुजरात की पैतृक भाषा भी कहा जाता है, जो उत्तरी गुजरात और पश्चिमी राजस्थान में गुर्जरों द्वारा बोली जाती थी। इसके बाद 1500 से 1800 के दशक तक मध्य गुजराती का विकास हुआ, जिसमें पिछले चरण से कुछ ध्वन्यात्मक अंतर थे। आधुनिक गुजराती, जिसका आज इस्तेमाल किया जाने वाला रूप है, की उत्पत्ति 18वीं शताब्दी में हुई और धीरे–धीरे इसे प्रमुखता मिली। 19वीं शताब्दी के मध्य में, गुजराती साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण मील के पत्थर हासिल किए गए, जिनमें 1840 में पहली व्यक्तिगत डायरी और 1866 में पहला उपन्यास, ''करण घेलो'' सम्मिलित था .

गुजराती में लोकप्रिय वाक्यांश हैं, कैसे हो ? (आप कैसे हैं ?), मजा मा (मैं अच्छा हूँ।), अवजो (फिर आओ/अलविदा), गुजरात की भाषाओँ में काठियावाड़ी, साहसिक आकर्षण वाली निडर बोली मुख्य हैं. काठियावाड़ प्रायद्वीप में प्रारंभ में स्वदेशी कोली और कुनबी लोग रहते थे। 11वीं शताब्दी की शुरुआत में, काठी, राजपूत, अहीर, मेर और भरवाड जैसे विभिन्न क्षत्रिय वंश वर्तमान राजस्थान, सिंध और आसपास के क्षेत्रों से इस क्षेत्र में चले गए। चारण भी उत्तर और उत्तर–पश्चिम से आये। इन प्रवासियों में जड़ेजा भी थे, जिन्हें सिंध के सम्मा राजपूतों की एक शाखा माना जाता है। उनके आगमन से सिंधी भाषा का प्रभाव स्पष्ट हो गया। परिणामस्वरूप, काठियावाड़ी भाषा ने एक विशिष्ट उच्चारण विकसित किया और इसमें कई शब्द शामिल किए गए जो मानक गुजराती से भिन्न थे। काठियावाड़ी गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र से आते हैं, जिसमें सौराष्ट्र प्रायद्वीप का अधिकांश भाग शामिल है। काठियावाड़ी व्यंजन सामान्य गुजराती भोजन की तुलना में मसालेदार है। वे पारंपरिक रूप से अपनी वीरता और कृषि और कला जैसे क्षेत्रों में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए जाने जाते हैं। काठियावाड़ी में लोकप्रिय वाक्यांश हैं केम चे ? (आप कैसे हैं ? – मानक गुजराती से थोड़ा अलग उच्चारण), अवशे (आऊंगा–उच्चारण अंतर), सु करे छे ? (आप क्या कर रहे हो ?) जाओ चो ? (आप कहां जा रहे हैं ?).

सुरती, जो सूरत या राज्य के दक्षिणी शहरों में बोली जाती है, गुजरात की अन्य भाषाओं की तुलना में उतनी सौम्य नहीं हैं. गुजरात में सुरती भाषा का इतिहास सूरत के समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक ताने–बाने से जुड़ा हुआ है जिसे सुरती गुजराती के नाम से भी जाना जाता है, सूरती में लोकप्रिय वाक्यांश हैं सु चले छे ? (क्या हो रहा है ?), घनी खामा घनी (एक सम्मानजनक अभिवादन), लाई जाओ (इसे लो और जाओ), चमच (चम्मच – जबकि गुजराती में इसे 'चमची' कहा जाता है)

एक अन्य भाषा है चरोटारी जिसकी अत्यंत समृद्ध विरासत है. चरोटारी भाषा, जिसे चरोटारी भीली भी कहा जाता है, भारत के गुजरात के चरोटार क्षेत्र में बोली जाने वाली एक विशिष्ट भाषा है। यह मुख्य रूप से चरण समुदाय द्वारा बोली जाती है, जिनके बारे में माना जाता है कि वे उत्तर और उत्तर–पश्चिमी क्षेत्रों से गुजरात आए थे। गुजरात की भाषाओं में चरोटारी भाषा की जड़ें भीली भाषा में हैं, जो बड़े भील भाषा परिवार का एक हिस्सा है। चरोटारी लोग गुजरात में माही और साबरमती नदियों के बीच उपजाऊ भूमि चरोटार क्षेत्र से हैं। यह कोई विशिष्ट बोली नहीं बल्कि गुजराती का एक क्षेत्रीय रूप है। हालाँकि, स्थानीय सांस्कृतिक प्रभावों के कारण इस क्षेत्र के लोगों के अपने अनूठे वाक्यांश या शब्दों का उपयोग हो सकता है।

कच्छी भाषा मुख्य रूप से भारत के गुजरात के कच्छ क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा कच्छी भाषा बड़े सिंधी भाषा परिवार का हिस्सा है और क्षेत्रों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के कारण सिंधी के साथ कुछ समानताएं साझा करती है। यह भाषा कच्छ क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है, जो अपनी जीवंत लोक परंपराओं, कला और शिल्प के लिए जाना जाता है। कच्छी भाषा कहानी कहने, लोक गीतों और सामुदायिक समारोहों में अपने उपयोग के साथ स्थानीय संस्कृति और पहचान को संरक्षित और बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह गुजरात की भाषाई विविधता को जोड़ता है और कच्छी लोगों के समृद्ध इतिहास और परंपराओं के साथ एक मजबूत कड़ी के रूप में कार्य करता है। कच्छी में लोकप्रिय वाक्यांश हैं खबर आहिन ? (आप कैसे हैं ?), मेहरबानी करण ! (धन्यवाद!), आव्जून (फिर आओ).

भारत में भाषाई विविधता का विस्तार इतना है कि गुजरात में लोग लगभग 90 भाषाएँ बोल सकते हैं, सूरत गुजरात का सबसे भाषाई विविधता वाला जिला है। यहां के लोग लगभग 57 अलग–अलग भाषाएं बोल सकते हैं। ■

संख्या के आधार पर तेलगु भाषियों की स्थिति 1971 में तीसरे स्थान पर थी जो कि 2011 में चौथे स्थान पर चली गई।

कैसे विकसित हुई है आदिवासी बोली से आज की भाषा ?

भारत के आदिवासियों में प्रचलित आदिवासी भाषाएँ दो भाषा–परिवार के अन्तर्गत वर्गीकृत की गई हैं– आस्ट्रो एशियाटिक (आग्नेय) भाषा परिवार तथा, द्रविड़ भाषापरिवार। आस्ट्रो एशियाटिक भाषा–परिवार की मुंडा शाखा के अन्तर्गत तीन महत्वपूर्ण भाषाएँ हैं– 'संताली', 'हो' तथा 'मुंडारी'। इसी प्रकार द्रविड़ भाषा की उत्तरी द्रविड़ शाखा के अन्तर्गत महत्वपूर्ण भाषा 'कुरुख' है जो भारतीय आदिवासियों के बीच अत्यधिक लोकप्रिय है। 'संताली', 'हो' या 'मुंडारी' चूँकि एक ही भाषा–परिवार से व्यत्पन्न हैं, इसलिए उनकी रूपरचना में बहुत कुछ साम्य स्वाभाविक है। वैसे विरोहर, भूमिज, तुरी और असुरी आदि इस परिवार की गौण बोलियाँ हैं। सर जॉर्ज ग्रियर्सन के अनुसार संताल, हो, मुंडा, भूमिज, विरोहर आदि आदिवासियों के पूर्वज खरवार कहे जाते हैं। आज खरवार छोटा नागपुर के निवासी हैं, जिनकी जीविका का साधन कृषिकार्य है। चूँकि मुंडा दक्षिण से होते हुए उत्तर भारत में आ बसे हैं, इसलिय आर्यभाषाओं से पारस्परिक संपर्क के कारण इनमें हिन्दी के अनेक शब्द आ गए हैं।

संताली मुंडा–परिवार की भाषाओं में बहुत ही लोकप्रिय भाषा है। इसे संथाली भी कहा जाता है। प्रायः 500 किलोमीटर क्षेत्र में बसे मुंडा आदिवासियों में 57 प्रतिशत लोग संताली बोलते हैं। 1971 की जनगणना के अनुसार संताली भाषा–भाषियों की संस्था 36,93,558 है। भारत में संताल आदिवासी एक बड़े भूभाग में बसे हैं। सर्वेक्षण से यह ज्ञात होता है कि उत्तर में इसकी सीमा रेखा गंगा नदी है तथा दक्षिण में वैतरणी नदी। फिर भी प्रमुख रूप से ये बिहार के संताल परगना जिले में ही बसे हैं। छुटपुट रूप से ये बिहार के भागलपुर, मुंगेर, सिंहभूम, बंगाल के बर्दमान, बांकुड़ा, मिदनापुर तथा आसाम के जलपाइगुड़ी में भी जा बसे हैं। संताली में हिन्दी के चार–चार परंपरित कंठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दंत्य तथा ओष्ठ्य वर्णों का प्रचलन है और प्रत्येक वर्ण के अंत में अनुनासिक व्यंजन मिलता है। ऐसे शब्दों की संख्या तो बहुत है, किंतु साम्य–दिग्दर्शन हेतु कुछ उदाहरण हैं–

तत्सम – ईश्वर, आरसी, ऋषि, कथा, खंड, तुला, तेज, दया, गुरू, विष आदि।

तद्भव – आधा, उपास, ओदा, ऊँट, कर्जा, घोड़ा, मुती, आचार, विचार, भितरी आदि।

देशज – आलू, काबू, चाभी, लोटा, घानी आदि।

विदेशी – आमदनी, इंजिन, इंसाफ, इनाम, एलान, कायदा, कारखाना, किस्सा , खुशामद, तारीख, मतलब आदि।

मुंडारी बोली की स्थिति भी लगभत सामान है. मुंडा परिवार में संताली, हो, कोरकू, खड़िया, भूमिज आदि कई प्रमुख भाषाएँ हैं किंतु अपनी जननी का नाम मुंडारी ही उत्तराधिकार के रूप में पा सकी है। मुंडारी का, प्रचलन बिहार के राँची जिले के दक्षिणी–पश्चिमी भाग में है। वैसे, हजारीबाग के पूर्वी भाग तथा पलामू जिले में भी मुंडारी बोली जाती है। उल्लेखनीय बात यह है कि राँची जिले के दक्षिणी भाग में 'हो' भाषा के समानांतर विकसित होती हुई दक्षिण–पश्चिम में मुंडारी भाषा उड़ीसा के बामरा तथा संबलपुर तक चली गई है। इसकी दूसरी शाखा राँची जिले के उत्तरी भाग अर्थात् पालमू होते हुए मध्यप्रदेश के अंबिकापुर तक पहुँच गई है। नियोजन की खोज में मुंडा आदिवासी बंगाल के चौबीस परगना तथा आसाम के जलपाइगुड़ी चायबागान तक जा बसे हैं। 1971 की जनगणना के अनुसार मुंडारी भाषा–भाषियों की संख्या 7,70,916 है।

संताली के समान मुंडारी भाषा के शब्दों में भी हिन्दी से बहुत अधिक समता है। हिन्दी से प्रचलित देशज और विदेशी शब्द मुंडारी में भरे ही हैं। साथ ही, कदल, कुटुंब, गुरु, तुला, तुंबा, दया, दर्पण और दिन जैसे तत्सम शब्दों का भी मुंडारी में मुक्त प्रचलन है। लोटा, करछुल, ढकना, ढेला जैसे देशज तथा कलम, तलब, नकलनबीस, मेज, मोजा आदि विदेशी शब्दों से यह स्पष्ट पता चलता है कि सांस्कृतिक दृष्टि से दोनों भाषाएँ एक दूसरे के समीप हैं। यदि कुछ भिन्नता दिखाई पड़ती है तो उसके कारण हैं – स्थानगत भेद तथा भिन्न वंश–परंपरा में भाषा का विकास।

मुंडारी की बात कौन कहे, स्वयं हिन्दी की विभाषाओं में ऐसे कई शब्द विकसित हुए हैं जिनकी अपनी मूलभाषा के साथ कोई ध्वन्यात्मक समता प्रतीत नहीं होती, किंतु आश्चर्य का विषय यह है कि अपनी विभाषा के साथ हिन्दी की शब्दसमता का भ्रम भले ही उत्पन्न हो, अपनी समीपवर्ती मुंडारी भाषा से उनका प्रत्यक्ष साम्य है। मुंडारी भाषाभाषियों की एक शाखा जीविका की खोज में बंगाल और आसाम की ओर गई और वहीं बस गई। परिणामस्वरूप आधुनिक भारतीय आर्यभाषा – बंगला और असमिया के शब्द भी मुंडारी भाषा में मुक्त रूप से प्रचलित हो गए हैं। यथा–एकला (अकेला), एमन (ऐसा), गुलि (गोली), तोवे (तब) तथा मोटो (मोटा) आदि।

हो भाषा का विस्तार मयूरभंज क्षेत्र तक विस्तृत है. बिहार के सिंहभूम जिले तथा उड़ीसा के राउरकेला, वारीपदा और मयूरभंज में मुंडा परिवार के आदिवासी, जो भाषा बोलते हैं उसे 'हो' कहा जाता है। 1971 की जनगणना के अनुसार 'हो' भाषा–भाषियों की संख्या 7,49,793 है। 'हो' शब्द की व्यत्पत्ति मुंडा परिवार की संताली भाषा के 'होड़' शब्द से हुई है। होड़ का अर्थ है – आदमी। अन्तिम वर्ण के लोप से 'हो' शब्द बना है। 'हो' भाषाभाषी यह मानते हैं कि वे वीर कोल की संतान है जिन्हें 'लड़ाका कोल' कहा जाता था। इतिहास से यह ज्ञात होता है कि ये कोल बड़े योद्धा थे। जब भी इन पर बाहरी आक्रमण हुआ तो अपनी भूमि से आक्रमणकारियों को इन्होंने

संख्या के आधार पर मराठी भाषियों की स्थिति 1971 में चौथे स्थान पर थी जो कि 2011 में तीसरे स्थान पर आ गई।

भगाकर ही दम लिया। वैसे तो इसी क्षेत्र में 'हो' भाषा के समानांतर मुंडारी भाषा भी प्रचलित है, किन्तु 'हो' सिंहभूम जिले की प्रधान भाषा है। चूँकि सिंहभूम भी हिन्दी–भाषी क्षेत्र है, इसलिए हिन्दी से मिलते–जुलते शब्द 'हो' भाषा में भी समान रूप से व्यवहृत है। गृहस्थी की सामग्री लें तो चाभी, थैली, ओल, धनिया, जीरा, अमरूद आदि शब्द दोनों ही भाषाओं में समान रूप से प्रचलित हैं। व्यवसायी, सोनार, असुर आदि शब्दों में कहीं कोई भेद नहीं। कहीं कुछ भेद है भी, तो यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि ऐसे परिवर्तित रूप ध्वनि–परिवर्तन के प्रतिफलन हैं। इस दृष्टि से 'हो' भाषा में प्रचलित गाई (गाय), गादा (गदहा), गोरूड़ (गरूड़), हाति (हाथी), सुकर (सुअर), रींगुर (झींगुर) आदि शब्द हिन्द में सर्वथा भिन्न नहीं कहे जा सकते। दिन के नाम को लें, तो सोमवार, बुधवार और गुरुवार 'हो' भाषा में भी समान रूप से प्रचलित हैं। हाँ रविवार, मंगलवार, शुक्रवार और शनिवार के विकल्प में क्रमशः रूईवार, मोगोड़वार, सुकुरवार और सनिवार का प्रचलन है। 'हो' भाषा के सामान्यतः हिन्दी का संघर्षी वर्ण 'ह' लुप्त हो जाता है। यथाकृ कड़ाई (कड़ाही), गदा (गदहा), गोआ (गवाह), दई (दही), सायोब (साहब)। 'हो' में प्रचलित पोशु (पशु), कोमजोर (कमजोर), रसी (रस), चावली (चावल), अम्वड़ा (अमड़ा), चातोम (छाता), दिसुम (देश) आदि आगम तथा करला (करैला), सबोन (साबुन), बैंगा (बैंगन) आदि शब्द ध्वनि–परिवर्तन के लोप नियम के प्रभाव से विकसित हैं।

उराँव या कुरूख – भारत में प्रचलित आदिवासी भाषाओं में उराँव एक महत्वपूर्ण भाषा है, किंतु अन्य आदिवासी भाषाओं के समान इसे कोल या मुंडा शाखा के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया गया है। इसे द्रविड़–परिवार की भाषा माना गया है। द्रविड़ भाषा–परिवार की दक्षिणी द्रविड़ शाखा में तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम चार प्रमुख भाषाओं का प्रचलन है। भाषाविज्ञानियों ने उराँव को उत्तरी द्रविड़ शाखा की भाषा माना है। 1971 की जनगणना के अनुसार उराँव भाषा–भाषियों की संख्या 12,40,395 है। उराँव चूँकि कुरूख आदिवासियों की भाषा है, इसलिए इसका दूसरा नाम कुरूख भाषा भी है। कुरूख आदिवासियों की मान्यता है कि मूलतः वे कर्नाटक के निवासी थे, जहाँ से उत्तर–पूरब की ओर वे दो टोलियों में बढ़े। एक टोली गंगा के दक्षिण किनारे होती हुई पूरब की ओर बढ़ी और बिहार की राजमहल पहाड़ियों में बस गईं। दूसरी टोली सोन के किनारे चलकर मध्यप्रदेश के अम्बिकापुर और विलासपुर आदि मार्ग से बिहार के दक्षिण–पूरब भाग और उड़ीसा के उत्तर–पूरब में बस गई। जहाँ दूसरी टोली बसी है, वह बिहार में छोटानागपुर तथा उड़ीसा में बामरा, संबलपुर आदि के नाम प्रसिद्ध है। जनसंख्या की दृष्टि से इस जाति के अधिकांश अदिवासी छोटानगर के राँची जिले में ही बसे हैं। इस प्रकार कुरूख आदिवासी भारत के जिन भागों में आज बसे हैं, वह क्षेत्र छोटानागपुर के पठार से होते हुए पूरब में मध्यप्रदेश के अंबिकापुर और विलासपुर जिले में है तथा दक्षिण में उड़ीसा के सुंदरगढ़ और संबलपुर जिले अवस्थित हैं।

भाषा की दृष्टि से बिहार और मध्यप्रदेश में आर्यभाषा हिन्दी तथा उड़ीसा में आर्यभाषा उड़िया का प्रचलन है। हिन्दी की बोलियों में बिहार के छोटानागपुर में हिन्दी की बिहारी विभाषा तथा अंबिकापुर तथा बिलासपुर आदि में पूर्वी हिन्दी प्रचलित है। इन क्षेत्रों में आदिवासियों के मुंडा परिवार की भाषाएँ प्रचलित हैं ही। ऐसी स्थिति में उराँव भाषा पर हिन्दी तथा उड़िया भाषाओं तथा बिहारी और पूर्वी हिन्दी विभाषाओं के परस्पर संपर्क से इस द्रविड़ और आर्यभाषाओं परिवार का सांस्कृतिक संबंध स्थापित हो गया है। सैंकड़ों वर्षों के सांस्कृतिक मेल के कारण इस द्रविड़ भाषा और आर्य–भाषा में प्रत्यक्ष समता है। चूँकि तीन चौथाई कुरूख बिहार के छोटानागपुर के पठार में बसे हुए हैं, इसलिय उराँव भाषा के साथ हिन्दी भाषा की विशेष समता सर्वथा स्वाभाविक है। हिन्दी और उराँव भाषा के तुलनात्मक विश्लेषण से यह बात सर्वथा स्पष्ट हो जाती है कि दोनों भाषाओं की शब्दावली में बहुत अधिक समता है। गुलाब, कमल, बाँस ताड़, ऊँट, कछुआ, गदहा आदि शब्द दोनों ही भाषाओं में समान रूप से प्रचलित हैं। ऐसे शब्दों की संख्या हजारों होगी, जो दोनों भाषाओं में समानरूप से प्रचलित हैंः किंतु जहाँ भेद भी हैं, ध्वन्यात्मक परिवर्तन के कारण भेद के दिशा–निर्देश से भ्रम का निवारण हो जाता है। दिन के नाम लें तो बिहारी विभाषा में, प्रचलित एतवार, सोमार, मंगर, बुध, बिफे, सुकर, और सनीचर दोनों ही भाषाओं में यथातथ्य रूप से प्रचलित हैं। इनके अतिरिक्त ध्वनि–परिवर्तन के कारण भी दोनों भाषाओं की शब्दावली में स्वल्प भेद का आभास होता है। उदाहरणार्थ 'दढ़ी' (दाढ़ी), 'छती' (छाती), 'दना' (दाना), 'नरटि' (नरेटी), 'नरंगि' (नारंगी) आदि में ध्वनि – परिवर्तन के लोप नियम का प्रभाव है।

संताली, मुंडारी, हो तथा उराँव योगात्मक परिवार की भाषाएँ हैं। वस्तुतः इन भाषाओं में कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं, जो अन्यत्र दुर्लभ हैं। संस्कृत के समान इन भाषाओं में तीन वचनों का प्रचलन है– एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचनय। ध्वनियों की दृष्टि से आदिवासी भाषाएँ पर्याप्त समृद्ध हैं। अभिव्यक्ति के लिए हिन्दी के प्रायः सभी स्वर और व्यजंन आदिवासी भाषाओं में प्रचलित हैं। इन भाषाओं में घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण आदि सभी व्यंजन वर्तमान हैं। एक विशेष यह है कि आदिवासियों में बीस की गणना–प्रणाली का प्रचलन है अर्थात् सत्तर के लिए वे कहेंगे – तीन बीस और दस। हिन्दी भाषा में गणना की ऐसी प्रचलित प्रणाली आदिवासियों के साथ आर्य भाषाभाषियों के परस्पर संपर्क का प्रतिफलन है। भारत के मुंडा, द्रविड़ और आर्य सुदीर्घ काल तक साथ–साथ रहते आए हैं। सब ने भाषा से बढ़कर राष्ट्रीय एकता को महत्वपूर्ण माना है। इसलिये स्वाभाविक रूप से सबकी भाषाओं में एक दूसरे की शब्दावली का आदान–प्रदान मिलता है। यही कारण है कि हिन्दी और आदिवासी भाषाओं में जो आंतरिक समता दिखाई पड़ती है, वह भारतीय परिवेश की अनेकता में एकता को पूर्णरूप से चरितार्थ करती है। ■

संख्या के आधार पर उर्दू भाषियों की स्थिति 1971 में छटवें स्थान पर थी जो कि 2011 में सातवें स्थान पर चली गई।

विश्व की प्रमुख भाषाओं में हिन्दी का स्थान

– डॉ. रामजीलाल जांगिड

यह आलेख आंकड़ों के आधार पर अस्सी के दशक की स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है. भाषाओँ और उपभाषाओं के वर्गीकरण और उनके समूह के रूप में अधिक संख्या में प्रयोग होने वाली भाषा के सम्मान के लिए योग्य होने की बात का औचित्य आज भी उतना ही विचारणीय है जितना वह अस्सी के दशक में था. समय की रेखा पर रूसी उपभाषाओं को रूसी भाषा के समूह में सम्मिलित करना और अवधि, खड़ी, मैथिली आदि को हिंदी से अलग मानने का औचित्य युक्तियुक्त नहीं है. पाठकों को इस विषय पर अंतर्दृष्टि देने का प्रयास है यह आलेख. ■

विश्व भर में बोलचाल के लिए लगभग 3,500 भाषाओं और बोलियों का प्रयोग किया जाता है, किंतु एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य तक लिखकर बात पहुँचाने में इनमें से 500 से अधिक भाषाओं या बोलियों का इस्तेमाल नहीं होता। मौखिक और लिखित दोनों प्रकार के संचार के लिए काम आने आने वाली भाषाओं में से लगभग 16 भाषाएँ ऐसी हैं, जिनका व्यवहार 5 करोड़ से अधिक लोग करते हैं। विश्व की ये 16 प्रमुख भाषाएँ हैं : अरबी, अंग्रेजी, इतालवी, उर्दू, चीनी परिवार की भाषाएँ, जर्मन, जापानी, तमिल, तेलुगु, पुर्तगाली, फ्रांसीसी, बांगला, मलय–बहासा (भाषा), रूसी, स्पेनी और हिन्दी।

यह गौरव की बात है कि भारत ही ऐसा एकमात्र देश है, जिसकी पाँच भाषाएँ विश्व की 16 प्रमुख भाषाओं की सूची में शामिल हैं। भारतीय भाषाएँ बोलने वाले व्यक्ति भारत सहित 137 देशों में फैले हुए हैं। लेकिन यह दुःख की बात है कि इस सूची में शामिल भारतीय भाषाओं में प्रमुख हिन्दी का व्यवहार करने वालों की प्रामाणिक संख्या अब तक नहीं जानी जा सकी है।

विश्व की प्रमुख भाषाओं का व्यवहार करने वालों के बारे में पश्चिमी देशों के कई विद्वानों ने सर्वेक्षण किए हैं, किंतु इन सब के निष्कर्षों में हजारों का अंतर है। दुर्भाग्यवश एक भी पश्चिमी विद्वान ऐसा नहीं है, जिसने भारत की जनगणना में मातृभाषाओं के बारे में एकत्र किए गए आंकड़ों का विश्लेषण करके और अन्य देशों के हिन्दी भाषियों के आंकड़ों का विश्लेषण करके और अन्य देशों के हिन्दी भाषियों के आंकड़े जमा करके विश्व की प्रमुख भाषाओं की सूची में हिन्दी का सही स्थान निर्धारित किया हो। अन्य देशों के विद्वानों को ही क्यों दोष दें, जब स्वयं भारत और अन्य 136 देशों में रहने वालें करोड़ों भारतवासियों में से किसी ने भी अब तक इस दिशा में वैज्ञानिक ढंग से शोध नहीं किया है। विश्व भाषाओं में हिन्दी का सही स्थान तलाशने का काम तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन से ही शुरू कर दिया जाए तो अच्छा रहेगा।

वाशिंगटन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सिडनी कुलबर्ट द्वारा 1970 में जमा किए गए आंकड़ों के अनुसार बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से विश्व की प्रमुख भाषाओं में (चीन और अंग्रेजी के बाद) हिन्दी का तीसरा स्थान था। अमरीका और फ्रांस के कुछ विद्वानों ने (चीनी, अंग्रेजी और रूसी के बाद) हिन्दी को स्पेनी के साथ चौथा स्थान दिया है। किन्तु मेरी मान्यता है कि विश्व की प्रमुख भाषाओं में (चीनी के बाद) हिन्दी का दूसरा स्थान है। मुझे लगता है कि पश्चिमी विद्वानों ने भारतीय भाषाएँ बालने वालों के आंकड़ों का गहराई से विश्लेषण नहीं किया। मैं अपने उक्त निष्कर्ष पर दो ढंगों से पहुँचा हूँ: पहले, भारत के राज्यों और संघ क्षेत्रों की 1971 की जनसंख्या का विश्लेषण करके, दूसरे विभिन्न भारतीय भाषाओं और बोलियों का व्यवहार करने वालों की संख्या की जांच–पड़ताल करके।

विदेशी विद्वानों ने भारती की जनगणना (1971) के आंकड़ों के आधार पर अपनी तालिकाएँ बनाई हैं, इसलिए पहले यह जांच करना जरूरी है कि भारत की जनगणना (1971) में हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं के साथ क्या बर्ताव किया गया है ? जनगणना करने वालों ने यह प्रश्न पूछा होता कि क्या मातृभाषा के अलावा आप हिन्दी जानते, बोलने या समझते हैं तो हिन्दी का व्यवहार करने वालों की सही स्थिति सामने आ जाती। किंतु जनगणना विभाग ने भाषाओं और बोलियों के आंकड़े तैयार करते समय कई विचित्र भारतीय भाषाओं की ही खोज कर डाली है। उदाहरण के लिए जनगणना विभाग द्वारा प्रकाशित आंकडों के अनुसार 1971 में भारत में 73,847 लोग 'किसान' भाषा, 25,066 लोग 'क्षत्रिय' भाषा, 24,624 लोग 'इस्लामी' और 5,111 व्यक्ति 'राजपूती' भाषा बोलते हैं। वास्तव में किसान खेती करने वाले को कहते हैं, जबकि क्षत्रिय या राजपूत जातिसूचक शब्द हैं और इस्लाम एक संप्रदाय है। व्यवसाय, जाति या धर्म को मातृभाषा बना देना कैसे उचित कहा जा सकता है? इन आंकड़ों का खोखलापन इससे ज्यादा क्या प्रकट होगा कि राजस्थानी के विभिन्न रूपोंकृ मारवाड़ी, ढूंढारी, मेवाड़ी और हाड़ौती को स्वतंत्र मातृभाषाएँ मानते हुए, इनका व्यवहार करने वालों के अलग आंकड़े दिए गए हैं। राजस्थान में सरकारी कामकाज, जनसंचार, व्यापार और शिक्षा का माध्यम हिन्दी है, इसलिए इन्हें हिन्दी परिवार में ही शामिल किया जाना चाहिए था। यही व्यवहार ब्रज, अवधी, बिहारी, भोजपुरी, मैथिली, मगही, पूर्वी, नागरी और हिन्दुस्तानी के अंतर्गत दिए गए आंकड़ों के साथ किया जाना चाहिए था। कुछ शहरों के नाम से भी 'भाषाएँ' दे

संख्या के आधार पर गुजराती भाषियों की स्थिति 1971 में सातवें स्थान पर थी जो कि 2011 में छठवें स्थान पर आ गई।

दी गई हैं। जैसेः भागलपुरी, विलासपुरी, नागपुरी, मुजफ्फरपुरी, हजारीबाग और जयपुरी। इस दोषपूर्ण सूचना या नासमझी का परिणाम यह हुआ कि 1971 की जनगणना में 54.78 करोड़ से कुछ अधिक भारतीयों में हिन्दीभाषियों की संख्या घटकर केवल 15.37 करोड़ से कुछ ज्यादा रह गई। जबकि उस समय वास्तव में हिन्दी का व्यवहार करने वालों की संख्या 40 करोड़ थी।

हिन्दी को चौथा स्थान देने वाले विद्वान चीनी, अंग्रेजी, रूसी, और हिन्दी का व्यवहार करने वालों की संख्या क्रमशः 70,30,20 और 16.5 करोड़ मानते हैं। इसी सूची में बिहारी, राजस्थानी, भीली और गोंडी बोलने वालों की संख्या क्रमशः 4 करोड़, 1.5 करोड़, 20 लाख और 15 लाख दी गई है। जिन राज्यों में इन बोलियों का व्यवहार होता है, उनमें राजकाज, जनसंचार, शिक्षा, व्यापार और घर के बाहर संपर्क की भाषा हिन्दी ही है। इसलिए जिस तरह चीनी के विभिन्न रूपों को 'चीनी भाषा परिवार' के अंतर्गत गिना गया है, उसी तरह से इन बोंलियों को 'हिन्दी भाषा परिवार' के अंतर्गत शामिल किया जाना चाहिए। इन बोलियों का व्यवहार करने वालों की संख्या हिन्दी भाषियों की ऊपर दी गई संख्या (16.5 करोड़) में शामिल होने से योग रूसी भाषियों की संख्या (20 करोड़) और गुजराती बोलने वालों की संख्याओं का योग 16.6 करोड़ है। इन भाषाओं का इस्तेमाल करने वाले भी हिन्दी फिल्मों, हिन्दी प्रसारणों, हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं और पुस्तकों से आसानी से लाभ उठाते हैं। दसरे शब्दों में इनके दैनिक व्यवहार में हिन्दी की पैठ है। यदि इन्हें हिन्दी परिवार में शामिल कर लिया जाए, तो योग अंग्रेजी का व्यवहार करने वालों (30 करोड़) से 8.95 करोड़ अधिक पहुँच जाता है। इन क्षेत्रों में हिन्दी क्षेत्रों के लोग भी काफी संख्या में बसे हुए हैं। इसलिए यदि पूरी तरह इन्हें शामिल करने में हिचकिचाहट हो तो इनके आधे (8.3 करोड़) लोगों को भी हिन्दी जानने समझने वालों की सूची में रख लिया जाए तब भी योग अंग्रेजी भाषियों से आगे चला जाता है।

अब हम राज्यों की दृष्टि से विचार करते हैं। हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और बिहार की 1971 में संयुक्त जनसंख्या 22.99 करोड़ से कुछ अधिक थी। यह संख्या भी हिन्दी–भाषियों की संख्या 16.5 करोड़ मानने के मार्ग में बाधा है। जम्मू–कश्मीर, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, दमन व दीव तथा अंडमान व निकोबार द्वीप समूह में कुल जनसंख्या 9. 61 करोड़ से कुछ अधिक थी। इन क्षेत्रों में हिन्दी से अपरिचित शायद ही कोई हो, यदि हिन्दी का व्यवहार करने वालों में इनकी संख्या मिला दें तो योग 32.60 करोड़ हो जाता है। भारत की 1971 की जनसंख्या (54.79 करोड़ से कुछ अधिक) में यह संख्या घटाने पर 22.19 करोड़ का आंकड़ा बचता है। ये लोग 15 राज्यों और संघ क्षेत्रों में बिखरे हुए थे। जिनके नाम इस प्रकार हैंः 1. मिजोरम, 2. मणिपुर, 3. नागालैंड, 4. अरुणाचल, 5. असम, 6. मेघालय, 7. त्रिपुरा, 8. पश्चिमी बंगाल, 9. ओड़िशा, 10. तमिलनाडु, 11. पांडिचेरी, 12. लक्ष द्वीप व मिनिकोय द्वीप समूह, 13. केरल, 14. कर्नाटक और 15. आंध्र प्रदेश। इनमें से एक तिहाई लोग भी हिन्दी बोलने व समझने वाले माने जाएँ तो भारत में ही हिन्दी बोलने वालों की संख्या 40 करोड़ हो जाती है। ओड़िशा, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश और पश्चिमी बंगाल में हिन्दी क्षेत्रों के काफी लोग बसे हुए हैं। यह बात भी ध्यान में रखी जानी चाहिए। इस तरह हिन्दी का व्यवहार करने वालों की संख्या 1971 में रूसी का व्यवहार करने वालों से दुगुनी और अंग्रेजी का उपयोग करने वालों से सवा गुनी मानी जा सकती है।

पश्चिमी विद्वानों ने चीनी भाषा का मुख्य क्षेत्र चीन, अंग्रेजी का अमरीका, कनाडा, इंग्लैंड, आयरलैंड, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड, रूसी का सोवियत संघ तथा हिन्दी का केवल भारत माना है। 15 जुलाई 1980 के आंकड़ों के अनुसार एक करोड़ 10 लाख भारतीय 136 देशों में बिखरे हुए थे। इनमें नेपाल, श्रीलंका, मलेशिया और मॉरीशस में भारतवंशियों का विशेष जमाव था। उदाहरण के लिए केवल नेपाल में ही 38 लाख भारतीय बसे हुए थे। इसलिए हिन्दी जानने वालों की सही संख्या निर्धारित करते समय इन देशों को भूल जाना ठीक नहीं होगा। इसी प्रकार पाकिस्तान और बंगला देश में उर्दू तथा बंगला राजभाषाएँ होने के बावजूद हिन्दी या हिन्दुस्तानी आम तौर पर समझी जानी वाली विदेशी भाषा है। यदि अंग्रेजी के प्रभाव क्षेत्र में ऊपर दिए गए देशों के अलावा अंग्रेजों के भूतपूर्व उपनिवेशों के दो प्रतिशत अंग्रेजी बोलने या समझने वालों को भी जोड़ लिया जाए तब भी अंग्रेजी का व्यवहार करने वालों की संख्या हिन्दी जानने–समझने वालों की तुलना में कम ही रहेगी। हम लोग स्टेट्समैन इयरबुक के 119 वें संस्करण (1982–83) को आधार मानें तब पता चलता है कि अंग्रेजी के मूल क्षेत्र माने जाने वाले देशों अमरीका (1980 की जनसंख्या 22.65), ग्रेट–ब्रिटेन (1981 की जनसंख्या 5.593 करोड़), कनाडा (1981 की जनसंख्या 2.42 करोड़), आस्ट्रेलिया (1980 की जनसंख्या 1.462 करोड़), आयरलैंड (1979 की जनसंख्या 33.7 लाख), और न्यूजीलैंड (1981 की जनसंख्या 32 लाख) की संयुक्त जनसंख्या 1981 के आस–पास 32.782 करोड़ थी। जबकि इसी वर्ष भारत की जनसंख्या 68.39 करोड़ थी। भारत के लगभग 70 प्रतिशत लोग राजकाज, जनसंचार, शिक्षा, व्यापार या घर के बाहर संपर्क के लिए हिन्दी का प्रयोग करते हैं। यह मानने पर हिन्दी का व्यवहार करने वालों की संख्या 47. 87 करोड़ बन जाती है। जो विश्व भर में अंग्रेजी के गढ़ देशों की कुल जनसंख्या के लगभग डेढ़ गुना के बराबर है। यदि भारत में आधे लोगों को भी हिन्दी व्यवहार करने वालों में गिना जाए तब भी अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी का ही पलड़ा भारी पड़ता है और हिन्दी विश्व की दूसरी प्रमुख भाषा बन जाती है।■

(लेखक प्रसिद्ध भाषा विज्ञानी और विचारक हैं.)

संख्या के आधार पर कन्नड भाषियों की स्थिति 1971 में नौवें स्थान पर थी जो कि 2011 में आठवें स्थान पर आ गई।

विश्व के सर्वाधिक बहुभाषी देश

दुनिया भर के कई देशों में ऐसी आबादी है जो कई भाषाएँ बोलती हैं, लेकिन अधिकांश बहुभाषी देशों में, हर कोई कम से कम त्रिभाषी है और कई लोग चार या पांच भाषाओं में धाराप्रवाह बातचीत कर सकते हैं, कभी–कभी एक ही बातचीत में (या एक ही वाक्य में भी) कई भाषाओं का उपयोग करते हैं। यह भाषाई मिश्रण विभिन्न कारणों से विकसित होता है। यह जटिल औपनिवेशिक इतिहास, मजबूत क्षेत्रीय वफादारी या यहां तक कि आस–पास की महाशक्तियों के अपरिहार्य सांस्कृतिक प्रभाव के कारण भी हो सकता है। विश्व में सबसे अधिक बहुभाषी स्थान हैं :–

अरूबा – अरूबा वेनेजुएला के पास सुदूर दक्षिणी कैरेबियन में स्थित है। क्योंकि यह उन ''घटक देशों'' में से एक है जो नीदरलैंड साम्राज्य को बनाते हैं, डच एक आधिकारिक भाषा है और सभी स्कूलों में पढ़ाई जाती है। अरूबा की शिक्षा प्रणाली में अंग्रेजी और स्पेनिश दोनों भी आवश्यक भाषाएँ हैं, और अधिकांश छात्र स्कूल खत्म होने तक इसमें पारंगत हो जाते हैं। अरूबा में व्यस्त पर्यटक उद्योग के कारण अंग्रेजी का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और द्वीप की वेनेजुएला से निकटता के कारण स्पेनिश का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।हालाँकि, इन तीन भाषाओं में से किसी को भी अरूबा की मूल भाषा नहीं माना जाता है। सड़क पर और घर पर, स्थानीय लोग पुर्तगाली, स्पेनिश, डच और अंग्रेजी पर आधारित क्रियोल भाषा पापियामेंटो में एक दूसरे से संवाद करते हैं। पैपियामेंटो डच के साथ–साथ एक आधिकारिक भाषा है, और इसका उपयोग मीडिया और सरकार में नियमित रूप से किया जाता है।

लक्समबर्ग – लक्जमबर्ग विश्वविद्यालय के बैनर जर्मन, अंग्रेजी और फ्रेंच में स्कूल वर्ष की शुरुआत का प्रतीक हैं। इस छोटे से यूरोपीय देश की आबादी कमोबेश चार भाषाओं में पारंगत है। एक दूसरे से बातचीत करते समय स्थानीय लोग लक्जमबर्ग का उपयोग करते हैं। यह भाषा जर्मन भाषा से संबंधित है, लेकिन मूल जर्मन भाषियों के लिए समझ से परे है, आंशिक रूप से, इसकी बड़ी संख्या में फ्रेंच ऋण शब्दों के कारण। फ्रेंच और जर्मन, दोनों सह–आधिकारिक भाषाएँ, हर किसी द्वारा बोली जाती हैं और हर बच्चे की शिक्षा का एक आवश्यक हिस्सा हैं। आधिकारिक सरकारी कामकाज फ्रेंच में संचालित होता है। इसके अलावा, चौथी भाषा, अंग्रेजी, स्कूलों में एक अनिवार्य विषय है। भाषाई शिक्षा के प्रति इस आक्रामक दृष्टिकोण के कारण, वस्तुतः प्रत्येक लक्जमबर्ग कम से कम चार भाषाओं में पारंगत है।

सिंगापुर – सिंगापुर में चार आधिकारिक भाषाएँ हैं : अंग्रेजी, मंदारिन चीनी, मलय और तमिल। इस जातीय रूप से विविध शहर–राज्य में साइनेज में ये सभी चार भाषाएँ शामिल हैं। हालाँकि, शायद ही कोई निवासी वास्तव में इन चारों को बोलता है। सिंगापुर में विभिन्न जातीय समूहों के बीच अंग्रेजी मुख्य भाषा है। यह स्कूल में एक आवश्यक विषय है और लगभग हर सिंगापुरवासी इसमें पारंगत है। सड़क पर, कुछ सिंगापुरवासी एक अनोखी अंग्रेजी–आधारित क्रियोल भाषा का उपयोग करते हैं जिसे सिंगलिश के नाम से जाना जाता है। अधिकांश शब्द देशी अंग्रेजी बोलने वालों के लिए पहचानने योग्य हैं, लेकिन चीनी व्याकरण और चीनी और मलय उधार शब्द इसे समझना बहुत मुश्किल बना सकते हैं। अंग्रेजी के अलावा, छात्र स्कूल में अपनी ''मातृभाषा'' सीखते हैं: भारतीय सिंगापुरवासी तमिल सीखते हैं, मलेशियाई मलय सीखते हैं, और चीनी मंदारिन सीखते हैं। कई चीनी सिंगापुरवासी एक अतिरिक्त चीनी बोली बोलते हैं, जिनमें होक्किएन और हक्का का सबसे अधिक उपयोग किया जाता है।

मलेशिया – मलेशिया में व्यवसाय विभिन्न भाषाओं में अपने माल का विज्ञापन करते हैं। कम ''आधिकारिक'' भाषाएँ होने के बावजूद, मलेशिया, कई मायनों में, पड़ोसी सिंगापुर की तुलना में अधिक बहुभाषी है। हर कोई आधिकारिक भाषा मलय बोल सकता है। अधिकांश लोग अंग्रेजी में पारंगत हैं, जो स्कूल में एक अनिवार्य विषय है और शहरों में व्यापक रूप से बोली जाती है। मंगलिश के नाम से जानी जाने वाली क्रियोलीकृत अंग्रेजी का प्रयोग सड़कों पर किया जाता है। मलेशियाई जिनके पूर्वज भारत से आए थे, मलय और अंग्रेजी के अलावा अपनी पारिवारिक भाषा भी बोल सकते हैं। चीनी मलय स्कूल में मंदारिन सीखते हैं, लेकिन अधिकांश घर या सड़क पर अन्य बोलियाँ (जैसे कैंटोनीज, होकियेन और हक्का) भी बोलते हैं। कुआलालंपुर, पेनांग और जोहोर बाहरू जैसे बड़े शहरों में, चीनी मलेशियाई लोगों को ढूंढना असामान्य नहीं है जो मलय और अंग्रेजी के अलावा दो या तीन चीनी बोलियाँ बोल सकते हैं।

दक्षिण अफ्रीका – जोहान्सबर्ग के संवैधानिक न्यायालय द्वारा दक्षिण अफ्रीका की सभी 11 आधिकारिक भाषाओं का उपयोग करने का प्रतीक है। दक्षिण अफ्रीका में कुल 11 आधिकारिक भाषाएँ हैं। पूरे देश के शहरी क्षेत्रों में, अंग्रेजी एक सामान्य भाषा है। यह सरकार और मीडिया की मुख्य भाषा भी है, भले ही दक्षिण अफ्रीकी के 10 प्रतिशत से भी कम लोग इसे पहली भाषा के रूप में बोलते हैं। अफ्रीकी, डच के समान एक जर्मनिक भाषा है, जो देश के दक्षिणी और पश्चिमी क्षेत्रों में बोली जाती है। दक्षिण अफ्रीका में नौ आधिकारिक बंटू भाषाएँ हैंय जुलु और जोसा – नेल्सन मंडेला की मूल भाषा – सबसे प्रमुख हैं। इनमें से कुछ भाषाओं की सबसे विशिष्ट विशेषता

संख्या के आधार पर उड़िया भाषियों की स्थिति 1971 में दसवें स्थान पर थी जो कि 2011 में नौवें स्थान पर आ गई।

उनकी ''क्लिकिंग'' व्यंजन ध्वनि है। बहुत से दक्षिण अफ्रीकी लोग अंग्रेजी बोलते हैं, जो उनकी मातृभूमि की भाषा है और जिस क्षेत्र में वे रहते हैं वहां जो भी भाषा प्रमुख है। हालाँकि वे पूरी तरह से धाराप्रवाह नहीं हो सकते हैं, कई लोग तीन या अधिक भाषाओं में बातचीत कर सकते हैं।

मॉरीशस – मॉरीशस की सड़कों पर फ्रांसीसी–आधारित क्रियोल व्यापक रूप से बोली जाती है। हिंद महासागर में स्थित इस द्वीप राष्ट्र को आमतौर पर अफ्रीका का हिस्सा माना जाता है। आबादी को स्कूल में अंग्रेजी और फ्रेंच सीखनी पड़ती है। सभी मॉरीशसवासी इन दोनों भाषाओं में पारंगत हैं, लेकिन इनमें से कोई भी सड़क पर प्राथमिक भाषा नहीं है। मॉरीशस क्रियोल, एक फ्रांसीसी–आधारित क्रियोल जो फ्रेंच–भाषियों के लिए समझ से बाहर है, द्वीपों पर हर किसी द्वारा बोली जाती है और अधिकांश लोगों की पहली भाषा है। भारतीय मूल के कई मॉरीशसवासी भोजपुरी बोलते हैं, जो हिंदी की एक बोली है, जबकि चीनी भाषा से आए अन्य अप्रवासियों के वंशजों को भी अपनी पैतृक भाषा का कुछ ज्ञान है। इसलिए वस्तुतः सभी मॉरीशसवासी तीन भाषाएँ बोल सकते हैं, और कई लोग चार भाषाएँ धाराप्रवाह बोलते हैं।

भारत – हिंदी और अंग्रेजी भारत की आधिकारिक राष्ट्रीय भाषाएं हैं, और अधिकांश शिक्षित भारतीयों और शहरी निवासियों को दोनों का ज्ञान है, हालांकि दक्षिणी भारत में हिंदी की तुलना में अंग्रेजी को प्राथमिकता दी जाती है। भारत में प्रत्येक राज्य की अपनी आधिकारिक भाषा है, जिनमें से अधिकांश हिंदी से भिन्न हैं। इन भाषाओं का उपयोग स्थानीय मीडिया और सड़क पर किया जाता है। इसका मतलब यह है कि अधिकांश शिक्षित भारतीय कम से कम त्रिभाषी हैं, और जो लोग राज्यों के बीच घूमते हैं उन्हें अतिरिक्त भाषाओं का कामकाजी ज्ञान हो सकता है। इसलिए भले ही उनमें से प्रत्येक में प्रवाह न हो, कई भारतीय चार या अधिक भाषाओं में संवाद करने और समझने में सक्षम हैं। भारत में 400 से ज्यादा भाषाएं बोली जाती हैं और इनमें ज्यादातर आपको दिल्ली में सुनाई पड़ती हैं. इनमें हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और पंजाबी शामिल हैं. कोलकाता से दिल्ली में आकर बसी सयानी घोष कहती हैं, ''दिल्ली में आप कहीं भी जाइए, आपको अलग अलग राज्यों के अलग अलग बोलियां बोलने वाले लोग मिलते हैं.'' सयानी घोष के मुताबिक यहां बाहर से आकर रहने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है और वे दक्षिण दिल्ली के अलावा सेंट्रल दिल्ली और पटेल नगर जैसे इलाकों में भी बस रहे हैं. इनके अलावा वसंत कुंज, ग्रेटर कैलाश जैसे इलाके संपन्न लोगों के ठिकाने के तौर पर मशहूर हैं. दक्षिण दिल्ली में सफदरगंज एंक्लेव भी रिहाइश के लिए लोगों में मशहूर है. अंग्रेजी यहां कामकाज और कारोबार की भाषा है. अगर आप हिंदी और पंजाबी सीख लें तो कोई मुश्किल नहीं होगी.

सूरीनाम – उत्तरी दक्षिण अमेरिका में स्थित इस डच भाषी देश में घने वर्षावन हैं। देश के पूर्व औपनिवेशिक शासक द्वारा आयातित डच, सभी सूरीनामियों में से आधे से अधिक की मूल भाषा है। यह शिक्षा की भाषा है और इसका उपयोग वाणिज्य और मीडिया में भी किया जाता है। सड़क पर मुख्य भाषा क्रियोल है जिसे स्रानन टोंगो (या सिर्फ स्रानन) कहा जाता है जो डच और अंग्रेजी से प्रभावित है। यह देश की ''क्रियोल'' आबादी की मूल भाषा है, लेकिन लगभग सभी लोग इसे सामान्य भाषा के रूप में बोलते हैं। सूरीनाम में भारतीय मूल के लोगों की बड़ी आबादी है। वे अभी भी हिंदी की एक बोली बोलते हैं, जबकि जावानीस और चीनी आप्रवासियों के कुछ वंशज अभी भी घर पर अपनी मातृभाषा का उपयोग करते हैं। अंग्रेजी भी एक महत्वपूर्ण भाषा है. यह काफी लोकप्रिय है, खासकर इसलिए क्योंकि सूरीनाम सांस्कृतिक रूप से दक्षिण अमेरिका की तुलना में एंग्लोफोन कैरेबियन के अधिक करीब है।

पूर्वी तिमोर – यह छोटा, युवा राष्ट्र इंडोनेशियाई द्वीपसमूह के सुदूर दक्षिणपूर्वी कोने में स्थित है। एक दशक से भी अधिक समय पहले इसे आधिकारिक तौर पर इंडोनेशिया से आजादी मिली थी। कभी पुर्तगाल का उपनिवेश रहे तिमोर ने आजादी के बाद पुर्तगाली को आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाने का फैसला किया। स्थानीय भाषा टेटम, जो पुर्तगाली भाषा से काफी प्रभावित है, सड़क पर सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। इसके अलावा, अंग्रेजी और इंडोनेशियाई पूरे देश में सुनी जाती हैं, और दोनों को संविधान में आधिकारिक तौर पर ''कार्यशील भाषाओं'' के रूप में मान्यता दी गई है। यद्यपि निरक्षरता अभी भी अधिक है, तिमोरिस की लगातार बढ़ती संख्या टेटम के साथ–साथ पुर्तगाली और अंग्रेजी दोनों धाराप्रवाह बोलती है। हालाँकि बहुत से लोग इसे नहीं बोलना पसंद करते हैं, बहुत से तिमोरवासी इंडोनेशियाई भी समझ सकते हैं।

पोर्ट मोर्सबे, पापुआ न्यू गिनी – दुनिया में सबसे ज्यादा भाषा पापुआ न्यू गिनी में ही बोली जाती है, 800 से भी ज्यादा. भाषा और बोली में विविधता के सूचकांक में यह दुनिया का नंबर एक देश है. अगर आप इस देश में कोई भी दो व्यक्तियों को चुनें तो एक बात तय होगी, दोनों की मातृ भाषा अलग–अलग होगी. पापुआ न्यू गिनी की राजधानी है पोर्ट मोर्सबे. यहां का मुख्य काम धंधा खनन उद्योग है. यह काफी विविधता वाला शहर है, लिहाजा यहां सुरक्षा मुख्य चिंता की बात है. लोग शहर में अकेले गाड़ी लेकर निकलने से बचते हैं, दिन दहाड़े लूटपाट का भय बना रहता है. लेकिन इसके बावजूद पापुआ न्यू गिनी में रहने का आकर्षण लोगों को यहां खींच लाता है. हालांकि शहर में ड्राइविंग करने का अपना आनंद है. दुनिया की सबसे खूबसूरत समुद्री तटों और पर्वतीय चोटी यहां के 19 प्रांतों में मौजूद हैं.

जकार्ता, इंडोनेशिया – यह दक्षिणपूर्व एशिया का सबसे ज्यादा आबादी वाला शहर है. यहां 1.1 करोड़ लोग रहते हैं. जकार्ता में आर्थिक अवसरों मौजूद हैं, लिहाजा यहां दुनिया भर के लोग

रहने आते हैं. सुनने में भले अचरज भरा हो लेकिन यहां 700 से ज्यादा भाषाएं बोली जाती हैं. इंडोनेशिया 17 हजार द्वीप का समूह है. जकार्ता के निवासी पीटर रिची पुत्रा बताते हैं, ''यहां आप उन लोगों से मिलते हैं जो आपकी पृष्ठभूमि के नहीं होती. कई संस्कृतियों का मिश्रण यहां मौजूद है और यह एक अच्छी चीज है.'' खुद पीट रिची के दादा चीनी मूल के थे. इस विविधता के चलते ही इंडोनेशिया में खानपान की संस्कृति भी काफी विविधता भरी है. यहां की शाबांग, ब्लॉक एम और पेसेनोनगान जैसी मशहूर गलियों और नुक्कड़ों पर खान पान की विविधता रात की रौनक में बखूबी नजर आती है.

लागोस, नाइजीरिया – नाइजीरिया में 500 से ज्यादा जातीय समुदाय के लोग रहते हैं, हर किसी की अपनी भाषा है. छोटे छोटो गावों की अपनी भाषा है. इन्हीं गावों के लोग पलायन करके देश के सबसे बड़े शहर लागोस में काम की तलाश में आए हैं. यही वजह है कि लागोस में हर आदमी अंग्रेजी के अलावा दो–तीन भाषाओं को बोल सकता है. अंग्रेजी यहां की आधिकारिक भाषा है. इसके अलावा हूसा, योरूबा और लग्बो अन्य आधिकारिक भाषाएं हैं. उनके मुताबिक संपन्न इलाकों में लोग अंग्रेजी बोलते हैं लेकिन कोशिश करके स्थानीय भाषा सीखना मुश्किल भी नहीं है. लोग चाहे जो भी भाषा बोल रहे हों, नाइजीरिया की खास बात ये भी है कि यहां के लोगों को मौज मस्ती खूब पसंद है. वैसे नाइजीरिया अफ्रीका के उन देशों में शामिल है जहां जमीन जायदाद काफी महंगे हैं.

लॉस एंजिलिस, अमरीका – अमरीका में भी 300 से ज्यादा भाषाएं बोली जाती हैं. इनमें अंग्रेजी, स्पेनिश और चीनी शामिल हैं. भाषा के लिहाज से लॉस एंजिलिस सबसे विविधता वाला शहर है. यहां मैक्सिको और लातिन अमरीका से आए स्पेनिश बोलने वाले लोग मौजूद हैं. जबकि चीन और कोरिया से भी काफी बड़ी आबादी लॉस एंजिलिस में रहने आ चुकी हैं. पश्चिमी लॉस एंजिलिस में किचन एंड बार में जनरल मैनेजर क्रिस लू कहते हैं, ''लॉल एंजिलिस में एक आदमी को दो–तीन भाषाओं में बोलते हुए देखना सामान्य बात है.'' ■

मातृभाषा और बोली की सुगंध

बोली का अलग प्रभाव है, अलग सुरभि है. गोवा में एक साक्षात्कार बोर्ड में एक अभ्यर्थी ने मुश्किल से दो–तीन वाक्य बोले होंगे तो साक्षात्कार बोर्ड के एक सदस्य ने पूछा आप सालसेट से हैं क्या ? साक्षात्कार के बाद जब दूसरे सदस्य ने पूछ लिया कि आपने कैसे जाना कि अभ्यर्थी गोवा के सालसेट क्षेत्र का है ? पहले सदस्य हंस पड़े, उन्होंने मनोहर मुलगांवकर की एक पुस्तक की पहली पंक्ति दोहरा कर कहा आप किसी गोअन को गोवा से बाहर कर सकते हैं लेकिन गोअन के भीतर स्थित गोवा को बाहर नहीं निकाल सकते. सालसेट क्षेत्र का उच्चारण इतना विशिष्ट है कि उसे पहचानने में देरी नहीं लगती.

किसी रंगबाज का भौकाल टाइट हो तो आप कानपुर में हैं. कैसे और कब विकसित होती है बोली, काल की रेखा पर किसी बिंदु को पहचान नहीं बनाया जा सकता, बिना विश्लेषण और विवेचना के आनंद लेते हैं कनपुरिया हिंदी की जिसमें कंटाप : कनपटी पर थप्पड़ जडना, – भौकाल : जलवा या प्रतिष्ठा, –चौकस : बेहतरीन. – बकैत : अधिक बोलने वाला, –खलीफा : सर्वश्रेष्ठ, –लभेड़ : अप्रिय परिस्थिति, –पौव्वा : जुगाड़ या पैठ, –चिकाई : किसी से मजाक करना, –चिरांद : उलझन पैदा करना या करने वाला होता है.

आम बोलचाल के कनपुरिया जुमले और मनोरंजक हैं जैसे –विधिवत मारेंगे और कौनौ मुरौवत न करेंगे।, –ज्यादा बकैती न करो।, – अबहिं मार मार के हनुमान बना देबे।, –टोपा हो का, दीहिस कंटाप।, –हपक के एक कंटाप धरा तो सारी रंगबाजी धरी रहि जहिये।, –ये मठाधीसी अपने पास ही धरो।, –भाई जी, अगले का भौकाल एकदम टाइट है।, –अबहीं झपडिया दीन्ह जाइहौ तब पता चली कि पंजीरी कहां बटत रहे।, –अरे सरऊ काहे पचड़े में पड़त हौ अबहिं लभेड़ हुई जइहै।, –कुछ पल्ले पड़ रहा है कि ऐसे ही औरंगजेब बने हो। –गुरु व्यवस्था तो फुल टन्न रही।, –हर जगह चिकाई न लिया करो।, इतनी निराली वर्तनी है कानपुर की हिंदी की, –पूरा होना : हुई गा, –पूरा न होना : नई भा, –क्यों : काहे, –यहां आओ : हियां आव,– पिटाई करना : हउंक दीहिस, –काम पूरा होना : गुरु काम होइगा. –सुनो जरा : सुनो बे, –क्या हुआ : का हुआ बे, और जबरदस्त को कानपुर में बोलै जायेगा धांसू. ■

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

भाषा एक ऐसा साधन है जिससे व्यक्ति अपनी बात दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाता है. कहते हैं भाषा एक दूसरे से जोड़ने वाली कड़ी होती है. प्रतिवर्ष 21 फरवरी के दिन अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है. इस दिन को मनाने की शुरूआत बांग्लादेश द्वारा की गई थी और साल 1999 में यूनेस्को जनरल कांफ्रेंस ने इस पर स्वीकृति दी. इसके बाद से 21 फरवरी, 2000 से यह दिन विश्वभर में मनाया जाने लगा. साल 2024 में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की थीम 'बहुभाषी शिक्षा है पीढ़ीगत शिक्षा का आधार' थी. ■

संख्या के आधार पर सिंधी भाषियों की स्थिति 1971 में सोलहवें स्थान पर थी जो कि 2011 में सत्रहवें स्थान पर चली गई।

विश्व की प्राचीनतम भाषाऐं

हजारों भाषा और बोलियों वाले विश्व में यूं तो कई भाषाओं की विश्वसनीय कालगणना किया जाना दुष्कर कार्य है पर फिर भी सर्वमान्य तथ्यों के आधार पर विश्व की प्राचीनतम भाषाएँ इस प्रकार हैं :

संस्कृत – संस्कृत भाषा को देवभाषा कहा जाता है. संस्कृत भाषा से तमाम यूरोपीय भाषाएं प्रेरित लगती हैं. दुनिया भर में फैले तमाम विश्वविद्यालय एवं शिक्षण संस्थान संस्कृत को सबसे प्राचीन भाषा मानते हैं. ऐसा माना जाता है कि दुनिया की तमाम भाषाएँ कहीं–ना–कहीं संस्कृत से ही निकली है. संस्कृत भाषा ईसा से 5000 साल पहले से बोली जाती है. संस्कृत आज भी भारत की राजभाषा है. हालांकि वर्तमान समय में संस्कृत बोलचाल की भाषा के बजाय केवल पूजा–पाठ एवं कर्मकांड की भाषा बनकर रह गई है. हिन्दू धर्म में संपन्न होने वाले सभी शुभ कार्यों में वेद मंत्र का पाठ किया जाता है, जिसकी भाषा संस्कृत है.

लैटिन – लैटिन प्राचीन रोमन साम्राज्य और प्राचीन रोमन धर्म की राजभाषा थी. वर्तमान समय में यह रोमन कैथोलिक चर्च की धर्मभाषा और वैटिकन सिटी की राजभाषा है. संस्कृत की ही तरह यह एक शास्त्रीय भाषा है. लैटिन हिन्द–यूरोपीय भाषा–परिवार की रोमन्स शाखा में आती है. इसी से फ्रांसिसी, इतालवी, स्पैनिश, रोमानियाई, पुर्तगाली और वर्तमान समय की सबसे लोकप्रिय भाषा अंग्रेजी का उद्‌गम हुआ है. यूरोप में ईसाई धर्म के प्रभुत्व की वजह से मध्ययुगीन और पूर्व–आधुनिक कालों में लैटिन भाषा लगभग सारे यूरोप की अंतरराष्ट्रीय भाषा थी, जिसमें समस्त धर्म, विज्ञान, उच्च साहित्य, दर्शन और गणित की किताबें लिखी जाती थीं.

तमिल – तमिल भाषा को दुनिया की सबसे पुरानी भाषा के तौर पर मान्यता मिली हुई है और यह द्रविड़ परिवार की सबसे प्राचीन भाषा है. करीब 5000 साल पहले भी इस भाषा की उपस्थिति थी. एक सर्वे के मुताबिक प्रतिदिन सिर्फ तमिल भाषा में 1863 अखबार प्रकाशित होते हैं. वर्तमान में तमिल भाषा बोलने वालों की संख्या लगभग 7.7 करोड़ है. यह भाषा भारत, श्रीलंका, सिंगापुर तथा मलेशिया में बोली जाती है.

हिब्रू – हिब्रू सामी–हामी भाषा–परिवार की सामी शाखा में आने वाली भाषा है. हिब्रू भाषा लगभग 3000 साल पुरानी है. वर्तमान समय में यह इजरायल की राजभाषा है, जिसके विलुप्त होने के बाद इजरायली लोगों ने दुबारा से इसे जिंदा किया. इसे यहूदी समुदाय 'पवित्र भाषा' मानता है और बाइबिल का पुराना नियम इसी में लिखा गया था. हिब्रू भाषा इब्रानी लिपि में लिखी जाती है, जो दायंक से बायें पढ़ी और लिखी जाती है. पश्चिम के विश्वविद्यालयों में आजकल इब्रानी का अध्ययन अपेक्षाकृत काफी लोकप्रिय है. प्रथम महायुद्ध के बाद फिलिस्तीन की राजभाषा भी आधुनिक इब्रानी है.

इजिप्टियन – इजिप्टियन भाषा मिस्र की सबसे पुरानी ज्ञात भाषा है. यह भाषा एफ्रो–एशियाई भाषाई परिवार से है. यह भाषा ईसा से 2600–2000 साल पुरानी है. अभी भी यह भाषा अपने स्वरूप को जीवित बनाए हुए है.

ग्रीक – ग्रीक भाषा यूरोप की सबसे पुरानी भाषा है, जो ईसा से 1450 साल पहले से बोली जाती है. मौजूदा समय में ग्रीक भाषा ग्रीस, अल्बानिया और साइप्रस में बोली जाती है. लगभग 13 मिलियन लोग आज भी ग्रीक भाषा बोलते हैं.

चीनी भाषा – चीनी भाषा संसार में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है. यह चीन एवं पूर्वी एशिया के कुछ देशों में बोली जाती है. चीनी भाषा चीनी–तिब्बती भाषा–परिवार में आती है और वास्तव में कई भाषाओं और बोलियों का समूह है. मानकीकृत चीनी भाषा असल में एक ''मन्दारिन'' नामक भाषा है. यह भाषा ईसा के आगमन से भी 1200 साल पुरानी है. मौजूदा समय में लगभग 1.2 बिलियन लोग चीनी भाषा बोलते हैं.

कोरियन भाषा – कोरियन भाषा लगभग 600 ईसापूर्व से बोली जाती है. वर्तमान समय में लगभग 8 करोड़ लोग कोरियाई भाषा बोलते है. इस भाषा की लिपि हंगुल है. प्राचीन काल में चीनी लोग कोरिया में जाकर बस गए थे, इसलिये कोरियाई भाषा, चीनी भाषा से काफी प्रभावित है.

आर्मेनियन भाषा – भी भारतीय–यूरोपीय भाषाई समूह का हिस्सा है, जो आर्मेनियाई लोगों द्वारा बोली जाती है. पांचवी शताब्दी में लिखी गई बाईबिल इसकी सबसे पुरानी उपस्थिति के रूप में विद्यमान है. आर्मेनियन भाषा की उत्पत्ति 450 ईसापूर्व में हुई थी. यह भाषा मेसोपोटामिया तथा कॉकस की मध्यवर्ती घाटियों और काले सागर के दक्षिणी पूर्वी प्रदेश में बोली जाती है. यह प्रदेश आर्मीनी जार्जिया तथा अजरबैजान (उत्तर–पश्चिमी ईरान) में पड़ता है. यह आर्मीनिया गणतंत्र की राजभाषा है. ■

कौन व्यक्ति है सर्वाधिक भाषाओं का जानकार ?

जियाद फजाह नामक लाइबेरिया में जन्मे इस लेबनानी बहुभाषी के पास वर्तमान में सबसे अधिक भाषाएँ बोलने का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड है। फजाह का दावा है कि वह अरबी, पोलिश, थाई, उर्दू, नॉर्वेजियन और कई अन्य भाषाओं सहित 58 भाषाओं को पढ़ने और बोलने में सक्षम है। ■

संख्या के आधार पर नेपाली भाषियों की स्थिति 1971 में 18 वें स्थान पर थी जो कि 2011 में 16 वें स्थान पर आ गई।

विश्व के प्रथम भाषा विज्ञानी - पाणिनि

पाणिनि (500 ईसा पूर्व) संस्कृत व्याकरण शास्त्र के सबसे बड़े प्रतिष्ठाता और नियामक आचार्य थे। इनका जन्म पंजाब के शालातुला में हुआ था जो आधुनिक पेशावर (पाकिस्तान) के करीब तत्कालीन उत्तर पश्चिम भारत के गांधार में हुआ था। इनका जीवनकाल 520–460 ईसा पूर्व माना जाता है। इनके व्याकरण को अष्टाध्यायी कहते हैं। इन्होंने भाषा के शुद्ध प्रयोगों की सीमा का निर्धारण किया, जो प्रयोग अष्टाध्यायी की कसौटी पर खरे नहीं उतरे और उन्हें विद्वानों ने 'अपणिनीय' कहकर अशुद्ध घोषित कर दिया। संस्कृत भाषा को व्याकरण सम्मत रूप देने में पाणिनि का योगदान अतुलनीय माना जाता है।

19वीं सदी में यूरोप के एक भाषा वैज्ञानिक फ्रेंच बाप ने पाणिनि के कार्यों पर शोध किया। उन्हें पाणिनि के लिखे हुए ग्रन्थ तथा संस्कृत व्याकरण में आधुनिक भाषा प्रणाली को और परिपक्व करने के सूत्र मिले। आधुनिक भाषा विज्ञान को पाणिनि के लिखे ग्रंथों से बहुत मदद मिली है। दुनिया की सभी भाषाओं के विकास में पाणिनि के ग्रंथ का योगदान है। उनके व्याकरण सम्बन्धित 550 ईसा पूर्व रचित 8 अध्यायों में फैले 32 पदों के तहत पिरोये गए 3996 सूत्रों वाले इस ग्रंथ ने दुनिया की सभी भाषाओं को समृद्धि नहीं किया बल्कि ज्ञान की कई और बातों का भी खुलासा किया है।

पाणिनि के अष्टाध्यायी नामक ग्रन्थ के आठ अध्याय हैं। हर अध्याय में चार पाद हैं। प्रत्येक पाद में प्रस्तुत विषय के अनुसार कम अथवा अधिक सूत्र संख्या है। अत्यन्त संक्षेप में कहे हुए नियम अथवा विधान को सूत्र कहते हैं। अत्यंत संक्षिप्त होना ही पाणिनीय सूत्रों का सबसे निराला वैशिष्ट्य है। उस संक्षेप के लिए महर्षि पाणिनी ने एक स्वतंत्र पद्धति तैयार की है। फलस्वरूप सूत्रों की अधिकांश रचना अत्यधिक तकनीकी और लोक व्यवहार की भाषा से भिन्न हो गई है। पाणिनी सूत्र की भाषा संस्कृत होते हुए भी संस्कृत भाषा के अच्छे ज्ञान मात्र से सूत्रार्थ का ज्ञान असंभव हैः तथापि यह व्याकरण बहुत संक्षिप्त हो गया है, बल्कि कुछ एक हद तक दुर्बोध भी हो गया है, फिर भी एक एक सूत्र से बड़ा शब्द समूह सिद्ध हो जाता है। यह एक बड़ा लाभ है। अष्टाध्याई ग्रंथ में पाणिनि ने विभक्ति प्रधान संकट भाषा के सूत्र बहुत ही वैज्ञानिक और तर्कसंगत ढंग से संग्रहित किए हैं जो आज भी विश्व के भाषा विज्ञानियों के लिये प्रेरक बने हुऐ हैं।

पाणिनि ने अपने समय की संस्कृत भाषा की सूक्ष्म छानबीन की थी। इस छानबीन के आधार पर उन्होंने जिस व्याकरण शास्त्र का प्रवचन किया, वह न केवल तत्कालीन संस्कृत भाषा का नियामक शास्त्र बना, अपितु उसने आगामी संस्कृत रचनाओं को भी प्रभावित किया। पाणिनि से पूर्व भी व्याकरण शास्त्र के अन्य आचार्यों ने इस विशाल संस्कृत भाषा को नियमों में बांधने का प्रयास किया था, परन्तु पाणिनि का शास्त्र विस्तार और गाम्भीर्य की दृष्टि से इन सभी में सिरमौर सिद्ध हुआ। पाणिनि ने अपनी गहन अन्तर्दृष्टि, समन्वयात्मक दृष्टिकोण, एकाग्रता, कुशलता, दृढ़ परिश्रम और विपुल सामग्री की सहायता से जिस अनूठे व्याकरण शास्त्र का उपदेश दिया, उसे देखकर बड़े से बड़े विद्वान् आश्चर्य चकित होकर कहने लगे – 'पाणिनीयं महत्सुविरचितम्' – 'पाणिनि का शास्त्र महान् और सुविरचित है' 'महती सूक्ष्मेक्षिका वर्तते सूत्रकारस्य' उनकी दृष्टि अत्यन्त पैनी है, 'शोभना खलु पाणिनेः सूत्रस्य कृतिः' उनकी रचना अति सुन्दर है, 'पाणिनिशब्दो लोके प्रकाशते' सारे लोक में पाणिनि का नाम छा गया है, इत्यादि। भाष्यकार ने पाणिनि को प्रमाणभूत आचार्य, माङ्गलिक आचार्य, सृहृद्, भगवान आदि विशेषणों से सम्बोधित किया है। उनके अनुसार पाणिनि के सूत्र में एक भी शब्द अनर्थक नहीं हो सकता, और पाणिनीय शास्त्र में ऐसा कुछ नहीं है जो निरर्थक हो। उन्होंने जो सूत्र बनाए हैं, वे बहुत ही सोच विचार कर बनाए गए हैं। उन्होंने सुहृद् के रूप में व्याकरण शास्त्र का अन्वाख्यान किया है। रचना के समय उनकी दृष्टि भविष्य की ओर थी और वह दूरतर की बात सोचते थे। इस प्रकार उनकी प्रतिष्ठा बच्चे बच्चे तक फैल गई और विद्यार्थियों में उन्हीं का व्याकरण सर्वाधिक प्रिय हुआ।

व्याकरण और तत्वज्ञान में दूसरे प्रकार का भी सम्बन्ध भी प्राचीन काल से बहुत ग्रन्थों में बताया गया है। उसका स्वरूप ऐसा होता है – व्याकरण शास्त्र का प्राचीन काल में दिया हुआ एक प्रसिद्ध नाम 'शब्दानुशासन' है। 'शब्दानुशासन' का अर्थ है, साधु (योग्य) शब्द से असाधु (अयोग्य) शब्दों को अलग करना। परन्तु शब्द का साधुत्व और असाधुत्व अर्थ सापेक्ष है, जैसे– 'स्वजन' शब्द, आप्त, स्वकीय सम्बन्धी के अर्थ में योग्य (साधु) है। उस अर्थ में 'श्वजन' शब्द पूर्ण असाधु है। फिर भी श्वजन शब्द सर्वथा असाधु ही है, ऐसा कहना उचित नहीं होगा, क्योंकि कुत्ते का (रक्षक) मानव, अथवा कुत्तों का समूह इत्यादि अर्थ के लिए वह योग्य है। इसी तरह 'सकल' शब्द 'सर्व सम्पूर्ण' के अर्थ में साधु और 'टुकड़ा' अर्थ में असाधु है। इस विवेचन का मतलब यह है कि शब्द साधुत्व का विचार व्याकरण शास्त्र का प्रमुख उद्देश्य होते हुए भी शब्द से प्रतीत होने वाले अर्थ का ही व्याकरण शास्त्र में उपांग रूप से विचार करना अनिवार्य है।

नित्य दैनन्दिन व्यवहार में शब्द से संकेतिक अर्थ प्रतीत होता है। लेकिन व्याकरण शास्त्र में प्रयुक्त कई शब्दों से स्वयं शब्द स्वरूप ही ज्ञात होता है। यह एक विशेष शब्द शक्ति सूत्रकार ने 'स्वयं रूप शब्दस्याशब्द संज्ञा', सूत्र से स्पष्ट रूप से बताई है। अन्य शास्त्रकार, शब्द केवल अर्थ का ही बोधक है,

2001 की तुलना में प्रतिशत के आधार पर भाषाई संख्या वृद्धि संस्कृत भाषियों की सर्वाधिक 75.60 प्रतिशत थी।

ऐसा कहते हैं। पर सूत्रकार पाणिनि के अनुसार शब्द बाह्य अर्थ का और शब्द का ही बोधक है। अग्नेर्टक इत्यादि सूत्रों में उच्चारित अग्नि शब्द का अर्थ 'अग्नि' शब्द प्रतीत होता है और अनेकानेक सूत्रों में 'यह शब्द', अमुक शब्द कहने की जरूरत नहीं होती, और बड़ा शब्द लाघव सिद्ध होता है।

पाणिनी का जीवन वृत्त अत्यन्त स्वल्प रूप में मिलता है। अष्टाध्यायी की पतंजलि रचित टीका, महाभाष्य में उसके विषय में कई उल्लेख आए हैं। पारम्पारिक लोक कथाओं से स्वल्परूप में जो कुछ ज्ञात है, उसे ऐतिहासिक सत्य समझना भूल होगी। महाभाष्यकार पतंजलि, पाणिनि को दाक्षिपुत्र (1–1–20) कहते हैं। नर्मदा नदी के उत्तरवर्ती भारत में पाणिनि ने प्रवास किया और उस समय प्रचलित संस्कृत भाषा और उपभाषाओं का उसने बहुत सूक्ष्म बुद्धि से अध्ययन किया। पाणिनि ने उस समय उपलब्ध वेद सूत्रादि वाङ्मय का भी गहरा अध्ययन किया होगा। यह बात उसके सूत्रों में उल्लिखित बातों से भली प्रकार से ज्ञात होती है। पाणिनि के पूर्व अनेक व्याकरणकार हो चुके थे, परन्तु उनके व्याकरणों में बहुत अधूरापन था और विशेष प्रदेश, शाखा, सम्प्रदाय की भाषा का ही उनके व्याकरण में विमर्श किया गया था। पाणिनि का व्याकरण सर्वसमावेशक होने से महाभाष्यकार उस व्याकरण को सर्ववेद 'परिषद' (2.1.58) यानी सर्ववेद शाखा और सभी परम्पराओं का संग्राहक कहकर अन्य पूर्व व्याकरणों से उसका वैशिष्टय स्पष्ट से बताते हैं।

प्राचीन काल में भारत देश में व्याकरण शास्त्र का अन्य शास्त्रों से सम्बन्ध बहुत गहरा माना जाता था। व्याकरण और न्याय ये दो शास्त्र ग्रन्थ सब शास्त्रों के अध्ययन के लिए अत्यावश्यक समझे जाते थे। ■

पाणिनी का भाषा विज्ञान को योगदान

''पाणिनि द्वारा किया गया संस्कृत भाषा का विवरण वैज्ञानिक विवरण के सभी सिद्धांतों के वियोग का एक ऐसा आदर्श उदाहरण है कि उससे सीखा जा सकता है कि भाषाओं का वैज्ञानिक विवरण कैसे किया जाना चाहिए तथा पाश्चात्य भाषा विज्ञान में वाक्य विश्लेषण तथा विवरण के अपवाद के साथ अन्य सभी क्षेत्रों में पाणिनि द्वारा किया गया भाषा विवरण निश्चित ही अब तक ऐसा आदर्श है जिससे श्रेष्ठतम नहीं बनाया जा सका है। वस्तुतः पाणिनि के व्याकरण में वाक्य को छोड़कर अन्य सभी स्तरों वर्ण और पद के स्तरों पर संस्कृत भाषा में प्राप्त सभी समानताओं का वस्तुपरक विश्लेषण के आधार पर अलग–अलग किया गया है। उन्हें वर्गों में विभाजित किया गया है तथा वर्गों को इस प्रकार व्यापक समावेशन वर्गों में विभाजित किया गया है कि उस भाषा का सारा विवरण अल्पतम वर्गों तथा उप वर्गों द्वारा संभव हो जाता है। वस्तुतः ग्रीक तथा लैटिन भाषण ने अपनी भाषाओं के सर्वांगीण विश्लेषण का ऐसा कोई प्रयास ही नहीं किया।'' ■

– प्रसिद्ध भाषा विज्ञानी जार्ज अग्राहम ग्रियर्सन

साहित्य अकादमी पुरुस्कार से भाषा सम्मान

भारत की साहित्य अकादेमी अपने द्वारा मान्य 24 भाषाओं में उत्कृष्ट पुस्तकों तथा उत्कृष्ट अनुवादों के लिए वार्षिक पुरस्कार प्रदान करती है। भारत जैसे बहुभाषाई देश में जहाँ कई सौ भाषाएँ और उपभाषाएँ हैं, उसको अपनी गतिविधियों की परिसीमा मान्यता प्राप्त भाषाओं से परे बढ़ाने और गैर–मान्यता प्राप्त भाषाओं में भी सृजनात्मक साहित्य के साथ–साथ शैक्षिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के लिए अकादेमी ने इसलिए सन् 1996 में भाषा सम्मान की स्थापना की. यह प्रयास था लेखकों, विद्वानों, संपादकों, संग्रहकर्ताओं, प्रस्तोताओं या उन अनुवादकों को, जिन्होंने संबंधित भाषाओं के प्रचार, आधुनिकीकरण या उसके संवर्धान के लिए यथेष्ट योगदान देने वाले व्यक्तियों को इस सम्मान से विभूषित किया जा सके। सम्मान स्वरूप एक फलक के साथ सृजनात्मक साहित्य के लिए दी जानेवाली पुरस्कार राशि 100000/–रु. प्रदान की जाती है जोकि इस उद्देश्य की सिद्धि में प्रथम चरण है। इस उद्देश्य के लिए गठित विशेषज्ञों की समिति की अनुंशसाओं के आधार पर प्रत्येक वर्ष यह सम्मान 3–4 व्यक्तियों को विभिन्न भाषाओं के लिए दिया जाता है।

प्रथम भाषा सम्मान वर्ष 1996 में प्रदान किया गया, जिनमें श्री धरीक्षण मिश्र (भोजपुरी), श्री बंशी राम शर्मा और श्री एम. आर. ठाकुर (हिमाचली), श्री के. जतप्पा राय और श्री मंदार केशव भट्ट (तुलु) के लिए तथा श्री चंद्रकांत मुरा सिंह (काकबरोक) को अपनी–अपनी भाषाओं के विकास में योगदान के लिए सम्मानित किया गया। वर्ष 1999 में अकादेमी ने महसूस किया कि यह तो ठीक है कि उन भाषाओं के लेखकों और विद्वानों को प्रोत्साहित किया जाए जिन्हें अकादेमी से मान्यता प्राप्त नहीं है, साथ ही उन विद्वानों को भी सम्मानित किया जाना चाहिए, जिन्होंने कालजयी और मध्यकालीन साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो। चूँकि उन लेखकों/विद्वानों ने राष्ट्र की धरोहर को जीवंत रखने तथा आने वाली पीढियों को इससे परिचित कराने का प्रयास किया है इसलिए वह इस सम्मान के हकदार हैं। अतः यह निर्णय लिया गया कि चार वार्षिक भाषा सम्मानों में से दो गैर–मान्यता प्राप्त भाषाओं तथा दो सम्मान उन विद्वानों को दिए जाएँगे, जिन्होंने कालजयी और मध्यकालीन साहित्य में योगदान दिया हो। ■

2001 की तुलना में प्रतिशत के आधार पर भाषाई संख्या वृद्धि में दूसरे स्थान पर हिन्दीभाषी थे, 25.19 प्रतिशत वृद्धि के साथ।

प्रसिद्ध विदेशी भाषाविद

भाषा एक उल्लेखनीय मानवीय क्षमता है जो हमें संवाद करने, अपने विचार व्यक्त करने और एक दूसरे को समझने में सक्षम बनाती है। भाषाविद् भाषाओं के अध्ययन और विश्लेषण, उनकी संरचनाओं को समझने और उनकी जटिल कार्यप्रणाली को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भाषाविद् एक विद्वान या विशेषज्ञ होता है जो भाषा और उसके विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करता है। भाषाविद् मानव संचार की जटिलताओं को समझने के उद्देश्य से भाषाओं की संरचना, विकास और उपयोग पर गहराई से विचार करते हैं। वे भाषाओं के भीतर ध्वनियों, व्याकरण, शब्दावली और अर्थ के साथ–साथ भाषा भिन्नता को प्रभावित करने वाले सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों का विश्लेषण करते हैं। भाषाविद् भाषा की घटनाओं की जांच करने और भाषा विज्ञान के व्यापक क्षेत्र में योगदान करने के लिए विभिन्न सैद्धांतिक रूपरेखाओं और पद्धतियों का उपयोग करते हैं। अपने शोध और अंतर्दृष्टि के माध्यम से, भाषाविद् भाषा के रहस्यों को सुलझाने में मदद करते हैं और इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि यह हमारे विचारों, पहचानों और सम्वाद को कैसे आकार देती है। विश्व के प्रसिद्ध भाषाविद निम्न माने जाते हैं :

फर्डिनेंड डी सॉसर – इन्हें आधुनिक भाषाविज्ञान का जनक माना जाता है। संरचनात्मक भाषाविज्ञान पर उनके अभूतपूर्व कार्य ने संकेतों और संरचनाओं की एक प्रणाली के रूप में भाषा के अध्ययन की नींव रखी। सॉसर की सांकेतिक और सांकेतिक, लैंगुए और पैरोल और सिंक्रोनिक और डायक्रोनिक भाषाविज्ञान की अवधारणाओं ने भाषाई सिद्धांत में क्रांति ला दी।

नोम चॉम्स्की – नोम चॉम्स्की एक प्रमुख भाषाविद् हैं जो जनरेटिव व्याकरण के अपने सिद्धांतों और सार्वभौमिक व्याकरण की अवधारणा के लिए जाने जाते हैं। उनके काम ने भाषा अधिग्रहण के व्यवहारवादी दृष्टिकोण को चुनौती दी और भाषा हासिल करने और उत्पादन करने की जन्मजात मानवीय क्षमता पर जोर दिया। चॉम्स्की के विचार वाक्य रचना और भाषा प्रसंस्करण की हमारी समझ को आकार देते रहते हैं।

विलियम लाबोव – विलियम लाबोव एक समाजभाषाविद् हैं जो अफ्रीकन अमेरिकन वर्नाक्युलर इंग्लिश (एएवीई) पर अपने अभूतपूर्व शोध के लिए जाने जाते हैं। भाषा भिन्नता और समाजशास्त्रीय साक्षात्कारों पर उनके अध्ययन ने भाषा के उपयोग के सामाजिक निहितार्थ और भाषा और पहचान के बीच संबंधों को उजागर करने में मदद की।

बेंजामिन ली व्होर्फ – बेंजामिन ली व्हॉर्फ ने भाषाई सापेक्षता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके विचारों ने प्रस्तावित किया कि भाषा वास्तविकता की हमारी धारणा को आकार देती है और हमारे विचारों को प्रभावित करती है। होपी भाषा पर व्हॉर्फ का शोध और भाषाई नियतिवाद की उनकी खोज भाषा और अनुभूति के अध्ययन को प्रभावित करती रहती है।

रोमन जैकबसन – रोमन जैकबसन एक प्रमुख भाषाविद् थे जो संरचनावादी भाषाविज्ञान और भाषा कार्यों के अध्ययन पर अपने काम के लिए जाने जाते थे। स्वर विज्ञान, आकृति विज्ञान और लाक्षणिकता में उनके योगदान का भाषाई सिद्धांत पर गहरा प्रभाव पड़ा है। जैकबसन का संचार मॉडल, जो भाषा के छह कार्यों पर प्रकाश डालता है, इस क्षेत्र में प्रभावशाली बना हुआ है।

एडवर्ड सैपिर – एडवर्ड सैपिर एक प्रभावशाली भाषाविद् और मानवविज्ञानी थे जिन्होंने भाषाई मानवविज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने भाषा को आकार देने में संस्कृति के महत्व पर जोर दिया और भाषा और विचार के बीच संबंधों का पता लगाया। मूल अमेरिकी भाषाओं पर सैपिर के काम और भाषाई सापेक्षता के उनके सिद्धांत ने इस क्षेत्र पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा है।

लियोनार्ड ब्लूमफील्ड – लियोनार्ड ब्लूमफील्ड अमेरिकी संरचनात्मक भाषाविज्ञान के विकास में एक प्रमुख व्यक्ति थे। उनका काम स्वर विज्ञान और आकृति विज्ञान के विश्लेषण पर केंद्रित था और रूपिम की अवधारणा को पेश किया। अनुभवजन्य डेटा पर ब्लूमफील्ड के जोर और भाषाविज्ञान के प्रति उनके वर्णनात्मक दृष्टिकोण ने आधुनिक भाषाई विश्लेषण के लिए आधार तैयार किया।

जॉर्ज लैकॉफ – जॉर्ज लैकॉफ एक संज्ञानात्मक भाषाविद् हैं जो रूपक और वैचारिक ढांचे पर अपने शोध के लिए जाने जाते हैं। उनके काम ने भाषा की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती दी और दुनिया की हमारी समझ को आकार देने में रूपक की भूमिका पर प्रकाश डाला। लैकॉफ के विचारों ने भाषा विज्ञान, मनोविज्ञान और राजनीतिक प्रवचन विश्लेषण सहित विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित किया है।

जूलिया क्रिस्टेवा – जूलिया क्रिस्टेवा एक भाषाविद्, मनोविश्लेषक और दार्शनिक हैं जो सांकेतिकता और भाषा और व्यक्तिपरकता के अध्ययन में उनके योगदान के लिए जानी जाती हैं। अंतर्पाठीयता, लाक्षणिक कोरा और विषय पर उनके काम ने साहित्यिक सिद्धांत और नारीवादी विमर्श को प्रभावित किया है। क्रिस्टेवा का अंतःविषय दृष्टिकोण कई क्षेत्रों में विद्वानों को प्रेरित करता रहा है।

मिखाइल बख्तिन – मिखाइल बख्तीन एक रूसी दार्शनिक और साहित्यिक सिद्धांतकार थे जिनके विचारों का भाषा विज्ञान

और साहित्यिक अध्ययन पर गहरा प्रभाव पड़ा। संवादवाद, पॉलीफोनी और कार्निवलस्क की उनकी अवधारणाओं ने भाषा, प्रवचन और सामाजिक संपर्क के बारे में हमारी समझ को बदल दिया। बख्तीन के सिद्धांत समाजभाषाविज्ञान और सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्र को आकार देते रहे हैं।

जॉन सियरल – जॉन सियरल एक दार्शनिक और भाषाविद् हैं जो भाषण कृत्यों और भाषा के दर्शन पर अपने काम के लिए जाने जाते हैं। भाषण कृत्यों का उनका सिद्धांत भाषा की प्रदर्शनात्मक प्रकृति और संचार में इरादे की भूमिका की पड़ताल करता है। सियरल के योगदान का व्यावहारिकता और मन के दर्शन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है।

क्लाउड लेवी-स्ट्रॉस – क्लाउड लेवी–स्ट्रॉस एक मानवविज्ञानी और भाषाविद् थे जो संस्कृतियों और समाजों को समझने के लिए अपने संरचनावादी दृष्टिकोण के लिए जाने जाते थे। संरचनात्मक मानवविज्ञान पर उनके काम ने मानव व्यवहार को नियंत्रित करने वाले अंतर्निहित पैटर्न और प्रणालियों का पता लगाया। लेवी–स्ट्रॉस के मिथकों और रिश्तेदारी संरचनाओं के विश्लेषण से उन सार्वभौमिक संरचनाओं का पता चला जो सांस्कृतिक विविधता का आधार हैं।

हंस कुरथ – हंस कुरथ एक प्रमुख अमेरिकी भाषाविद् थे जो डायलेक्टोलॉजी और अमेरिकी अंग्रेजी के अध्ययन पर अपने काम के लिए जाने जाते थे। क्षेत्रीय विविधताओं और न्यू इंग्लैंड के भाषाई एटलस के विकास पर उनके व्यापक शोध ने संयुक्त राज्य अमेरिका में भाषा विविधता की हमारी समझ में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मैरी हास – मैरी हास एक प्रसिद्ध भाषाविद् थीं जिन्हें वर्णनात्मक भाषाविज्ञान और मूल अमेरिकी भाषाओं के अध्ययन में उनके योगदान के लिए जाना जाता था। सिओआन और दक्षिण–पूर्वी भाषाओं पर उनके शोध ने उनकी व्याकरणिक संरचनाओं और ऐतिहासिक विकास में अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान की। हास के सूक्ष्म क्षेत्रीय कार्य और भाषाई विश्लेषण ने भाषाविज्ञान के क्षेत्र को काफी समृद्ध किया है।

फ्रांज बोस – फ्रांज बोस मानवविज्ञान और भाषा विज्ञान के क्षेत्र में एक अग्रणी व्यक्ति थे। उनका शोध मूल अमेरिकी भाषाओं, विशेष रूप से उत्तर पश्चिमी तट की भाषाओं के अध्ययन पर केंद्रित था। बोस ने भाषा को समझने में सांस्कृतिक संदर्भ के महत्व पर जोर दिया और भाषाई नियतिवाद की प्रचलित धारणाओं को चुनौती दी। उन्होंने भाषाओं के दस्तावेजीकरण और विश्लेषण के लिए सावधानीपूर्वक क्षेत्रीय कार्य और नृवंशविज्ञान विधियों के उपयोग की वकालत की। ■

भारत का केंद्रीय भाषा संस्थान

केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल), मैसूर, जो मानव संसाधन विकास मंत्रालय का एक अधीनस्थ कार्यालय है, की स्थापना भारत सरकार की भाषा नीति का विकास और उसे कार्यान्वित करने के लिए और भाषा विश्लेषण, भाषा शिक्षा शास्त्र, भाषा प्रौद्योगिकी और समाज में भाषा–प्रयोग के क्षेत्रों में अनुसंधान के द्वारा भारतीय भाषाओं के विकास को समन्वित करने के लिए की गई थी। संस्थान के मुख्य उद्देश्य हैं :

- भारतीय भाषा संस्थान भाषा के मामलों में केंद्र व राज्य सरकारों को सलाह एवं सहायता प्रदान करना.
- संस्थान विषयवस्तु व कॉर्पस निर्माण द्वारा सभी भारतीय भाषाओं के विकास में योगदान देना.
- गौण, अल्पसंख्यक एवं आदिवासी भाषाओं का प्रलेखीकरण व उनका संरक्षण देना.

सीआईआईएल, मैसूर के उद्देश्यों को निम्नलिखित चार श्रेणियों की योजनाओं के अतंर्गत कार्यान्वित किया जाता हैं–

प्रथम योजना : भारतीय भाषाओं का विकास – इस योजना का उद्देश्य अनुसंधान, मानव संसाधनों के विकास और जनजातीय/लघु/अल्पसंख्यक भाषाओं सहित आधुनिक भारतीय भाषाओं में, में सामग्री का उत्पादन करके भारतीय भाषाओं का विकास करना है।

द्वितीय योजना : क्षेत्रीय भाषा केन्द्र – इस योजना का उद्देश्य सरकार के त्रिभाषा सूत्र का कार्यान्वयन और शिक्षण सामग्री तैयार करना है। राज्य सरकारों और संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा प्रतिनियुक्त माध्यमिक स्कूल शिक्षकों को उनकी मातृभाषा से इतर भाषाओं में प्रशिक्षित किया जाता है। सात क्षेत्रीय भाषा केन्द्र शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते हैं। प्रशिक्षण के अलावा, इस संबंध में शिक्षण सामग्री तैयार करने के लिए अनेक कार्यशालाएं और सेमिनार भी आयोजित किए जाते हैं।

तृतीय योजना : सहायता – अनुदान – भारतीय भाषाओं में, जनजातीय भाषाओं सहित (हिन्दी, उर्दू, सिंधी, संस्कृत और अंग्रेजी को छोडकर) प्रकाशनों के लिए अलग–अलग व्यक्तियों और स्वैच्छिक संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान करना.

चतुर्थ योजना : केन्द्रीय प्राचीन तमिल संस्थान, चैन्नई में गठित एक स्वायत्त संस्था है जिसमें 79 शिक्षण और 70 गैर शिक्षण स्टाफ होगा। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री को शासी परिषद के पदेन अध्यक्ष के रूप में निर्दिष्ट किया गया है, इस संस्थान के 12 विभाग होंगे। प्राचीन तमिल भाषा विकास के लिए विद्यमान केन्द्रीय योजना को केन्द्रीय प्राचीन तमिल संस्थान में सम्मिलित किया जाएगा।

प्रादेशिक केन्द्र : संस्थान के पाँच क्षेत्रीय केंद्र 15 भारतीय भाषाओं में प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं। इसके दो अतिरिक्त केंद्र भी हैं जो विशेष रूप से उर्दू शिक्षण एवं अनुसंधान को समर्पित हैं। प्रत्येक केंद्र में एक प्रधान, संबंधित शिक्षक वर्ग एवं सहायक प्रशासकीय व तकनीकी कर्मचारी हैं। ■

2001 की तुलना में प्रतिशत के आधार पर भाषाई संख्या वृद्धि में चौथे स्थान पर गुजराती भाषियों की सर्वाधिक 20.40 प्रतिशत थी।

मातृभाषा अनुसार भारतीय जनगणना के आंकड़े 2011

(4 लाख से अधिक जनसंख्या वाली बोलियां)

Sr.	Language	Total	Male	Female
1	HINDI	52,83,47,193	27,66,10,187	25,17,37,006
2	BENGALI	9,72,37,669	4,97,98,752	4,74,38,917
3	MARATHI	8,30,26,680	4,25,65,803	4,04,60,877
4	TELUGU	8,11,27,740	4,06,58,539	4,04,69,201
5	TAMIL	6,90,26,881	3,46,00,690	3,44,26,191
6	GUJARATI	5,54,92,554	2,85,62,042	2,69,30,512
7	URDU	5,07,72,631	2,61,80,481	2,45,92,150
8	KANNADA	4,37.06,512	2,21,11.292	2,15,95,220
9	ODIA	3,75,21,324	1,91,03,304	1,84,18,020
10	MALAYALAM	3,48,38,819	1,67,12,384	1,81,26,435
11	PUNJABI	3,31,24,726	1,73,40,931	1,57,83,795
12	ASSAMESE	1,53,11,351	78,10,583	75,00,768
13	MAITHILI	1,35.83,464	71,12,056	64,71.408
14	BHILI/BHILODI	1,04,13,637	52,22,991	51,90,646
15	SANTALI	73,68,192	36,78,969	36,89,223
16	KASHMIRI	67,97,587	35,05,539	32,92,048
17	GONDI	29,84,453	14,76,174	15,08,279
18	NEPALI	29,26,168	15,24,029	14,02,139
19	SINDHI	27,72,264	14,12,101	13,60,163
20	DOGRI	25,96,767	13,69,581	12,27,186
21	KONKANI	22,56,502	11,04,587	11,51,915
22	KURUKH/ORAON	19,88,350	9,93,346	9,95,004
23	OTHERS	18,75,542	9,48,447	9,27,095
24	KHANDESHI	18,60,236	9,53,302	9,06,934
25	TULU	18,46,427	9,01,360	9,45,067
26	MANIPURI	17,61,079	8,75,943	8,85,136
27	BODO	14,82,929	7,45,017	7,37,912
28	KHASI	14,31,344	7,03,717	7,27,627
29	HO	14,21,418	7,03,538	7,17.880
30	GARO	11,45,323	5,76,528	5,68,795
31	MUNDARI	11,28,228	5,63,608	5,64,620
32	TRIPURI	10,11,294	5,10,715	5,00,579
33	KUI	9,41,488	4,51,412	4,90,076
34	LUSHAI/MIZO	8,30,846	4,12,349	4,18,497
35	HALABI	7,66,297	3,76,881	3,89,416
36	KORKU	7,27,133	3,68,285	3,58,848
37	MIRI/MISHING	6,29,954	3,20,282	3,09,672
38	KARBI/MIKIR	5,28,503	2,67,064	2,61,439
39	MUNDA	5,05,922	2,53,115	2,52.807
40	SAVARA	4,09,549	2,00,366	2,09,183
41	KOYA	4,07,423	1,97,697	2,09,726
42	NISSI/DAFLA	4,06,532	1,98,973	2,07,559

2001 की तुलना में प्रतिशत के आधार पर भाषाई संख्या कम होने में प्रथम स्थान पर कोंकणी भाषियों की सर्वाधिक 9.34 प्रतिशत की कमी पाई गई।

ये पढ़ायी इतनी सस्ती नहीं !

– इं. राजेश पाठक

अमेरिका में आज प्रवासी भारतीय छात्रों पर मारक हमले, लगता है केवल आंकड़े बनकर रह गए हैं. बताया तो जाता है कि ये कहीं अधिक है, पर अधिकृत सूत्रों के अनुसार अब तक मारे गए हिन्दू छात्रों की संख्या 10 तक पहुँच चुकी है. इसका सामना करने के लायक बनने के लिए ये समझने लेने की जरूरत है कि अमेरिका में हिन्दू पहचान समाप्त कर डालने की सुनियोजित कोशिश हुई है. और इस कोशिश का केंद्र उच्च–शिक्षण केंद्र बनकर उभरें हैं. पर अब इस संकट ने बता दिया है कि इससे बाहर निकलने का समय आ गया है. आज स्थिति ये है कि कई यूनिवर्सिटी में इंडियन स्टूडेंट एसोसिएशन को गायब ही कर दिया गया है. साउथ एशियाई स्टूडेंट्स एसोसिएशन मात्र ही अस्तित्व में है, जिसमें पाकिस्तान और बंगलादेश भी शामिल हैं. हमारे और इन दोनों देशों के बीच क्या समानता है, जबकि वहां मौजूद जेहादी तत्व आंतकवाद निर्यात कर रहें हैं भारत में. स्पष्ट है, आज अमेरिका में इंडियन या भारतीय ही नहीं, बल्कि हिन्दू– स्टूडेंट्स एसोसिएशन की भी जरूरत आन पड़ी है. जब इन्हीं शिक्षण संस्थानों में यहूदी, मुस्लिम, कोरियाई, चीनी स्टूडेंट यूनियन हो सकती हैं तो हिन्दू यूनियन क्यूँ नहीं. अति 'ब्रॉड–माइंडेड' दिखने की प्रवृति से बाहर निकलना ही ठीक होगा. हमारी अपनी जनसँख्या इतनी विशाल है तो नकली – भाईचारावाद के चक्कर में पढ़ने की जरूरत ही क्या. हमारी पहचान को अपृहत करने का ये सुनियोजित षड्यंत्र है, जो कि आज हर स्तर पर अमेरिका में देखा जा सकता है. हालात ये हैं कि अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में कमबोडिया, वियतनाम, जापान के नाम से तो फिल्म प्रदर्शित होती हैं, पर भारत की फिल्में साउथ एशियाई की बता कर दिखाई जाती हैं. वो भी तब जबकि इस श्रेणी में लगभग हर दूसरी फिल्म भारतीय हुआ करती है.

सोमालिया की इलहान उमर निर्भीक होकर कहती है कि वो सोमालियन पहले है, अमेरिकन बाद में. और, वो इस्लामिक कानून पहले मानेगी, अमेरिका के बाद में! ये बोलकर वो आसानी से निकल जाती है, उसका कुछ भी नहीं बिगड़ता .हिंदुओं को भी इतना ही प्रखर होना होगा अपनी पहचान के प्रति। सबसे जरूरी अपनी हिन्दू अमेरिकन की पहचान को स्थापित करना होगा. सुनियोजित तरीके से स्थापित साउथ एशियन का हमको हिस्सा बताने के विरुद्ध संगठित हो खड़े होकर. यूनिवर्सिटीज में हिन्दू– कौंसिल का प्रावधान होता जरूर हैं, लेकिन अपने–अपने में बंटे रहने के कारण उसका महत्त्व खो कर रह जाता है.

कतर जैसे देश पोषित वैश्विक जिहादी संगठन सोरोस, चीन समर्थित लेफ्ट–लिबरल समूहों ने अमेरिका–यूरोप के विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों, मानव अधिकारवादी संगठनों, कथित फाउंडेशन आदि एनजीओ में अराजक रुझान रखने वाले समूहों के माध्यम से अनुदान

पहुंचाकर अपनी मजबूत दखल स्थापित कर रखी है. वर्तमान स्थिति को यहाँ तक पहुँचाने में इन सबकी कहीं न कहीं अपनी–अपनी भूमिका रही हैं. इसका भी ध्यान रखकर चलना पड़ेगा और साथ ही उसका भी जो इंद्रा नुई, पूर्व पेप्सिको की चेयरपर्सन, कहती हैं – 'अमेरिका में आने से पहले ये जरूर देख लें कि किस यूनिवर्सिटी में, कौन सा विषय पढ़ने के लिए इस देश को चुन रहे हो. ये पढ़ायी इतनी सस्ती नहीं है.' इस बात को आगे बढ़ाते हुए अमेरिका निवासरत 'जयपुर–डायलॉग' से जुड़े विभूति झा कहते हैं, अमेरिका यदि पढ़ने आते हैं तो साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग, मेडिसिन को छोड़ कर यदि आर्ट्स, ह्यूमनीटीस, लिटरेचर जैसे किसी विषय को लेकर इतनी दूर निकलते हैं तो इतना समझ लीजिये वो जबरदस्त 'वोकिस्म' के नाम पर विकृत हो चुका है. इसलिए इतना पैसा लगाकर दिमाग को भृष्ट करवाने के लिए माता–पिता को चाहिए कि वो अपने बच्चे को अमेरिका न भेजें तो ही ठीक. हो सकता है वहां से पढ़कर निकलने के बाद, वो आपके ही तौर–तरीकों की धज्जियां उढ़ाता नजर आये.

ये प्रसंग को देखें, ये अपने आप में बहुत कुछ कह देता है. प्रवासियों पर केन्द्रित, अमेरिका में बस चुके सुकेतु मेहता रचित 'दिस लैंड इज अवर लैंड, एन इमिग्रेंट मैनिफेस्टो' की शुरुआत एक रोचक घटना से होती है. बात 1980 के दशक की है और सुकेतु के नाना एक पार्क में बैठे हुएं हैं कि एक उम्रदराज अंग्रेज व्यक्ति उनके पास आकर चेहरे की ओर ऊंगली दिखाते हुए पूछता है, 'तुम यहाँ मेरे देश में क्यूँ हो ?' 'क्यूंकि हम ऋण दाता है,' नाना का जवाब आता है, 'तुम लोग कभी हमारा सारा धन, हमारे हीरे ले गए थे. अब हम उन्हें वापस लेने आये हैं.' इतिहास में जो दर्ज है उस पर नजर डालें तो पता चलेगा कि ब्रिटेन में हुई औधोगिक क्रांति आसान न होती यदि भारत से प्राप्त लूट के संसाधन और मुफ्त के श्रमिक न उपलब्ध हुए होते. सुकेतु के नाना ने कुछ गलत नहीं कहा था. याद रहे अंग्रेज जब भारत आये तब विश्व अर्थव्यवस्था में भारत का योगदान 23 प्रतिशत था, जब उन्होंने देश छोड़ा तो घटकर 4 प्रतिशत रह गया. (शशि थरूर, ऑक्सफोर्ड यूनियन के अपने भाषण में)

– ई मेल –rajeshpathakbpl@rediffmail.com
मो. 9826337011

2001 की तुलना में प्रतिशत के आधार पर भाषाई संख्या कम होने में दूसरे स्थान पर उर्दू भाषियों की 1.48 प्रतिशत की कमी पाई गई।

धारदार कलम

कहाँ गए वो पाठक !

– शरद जोशी

यह देख हिंदी प्रेमियों को थोड़ा आश्चर्य हो तो कोई आश्चर्य नहीं कि इन दिनों किताब लिखनेवालों को पाठकों की कमी सताने लगी है, उन्हें पाठक याद आने लगे हैं और वे अपनी साहित्यिक पुस्तकों के बंडलों पर बैठे एक–दूसरे से पूछ रहे हैं कि वे जो हिंदी के पाठक हुआ करते थे कहाँ गए ? कहाँ गए वे लोग की तर्ज पर सवाल बनता है कि कहाँ गए वो पाठक ? जवाब मिलता है कि वे पढ़नेवाले इस समय टीवी के सामने बैठे हैं। यद्यपि वे कार्यक्रम से संतुष्ट नहीं हैं, फिर भी देख रहे हैं, जैसे किसी जमाने में वे गुलशन नंदा के उपन्यासों से संतुष्ट नहीं थे, फिर भी पढ़ते रहते थे। उन्हें ऐसी जिंदगी जीने की आदत है। वे हिंदीभाषी पढ़े–लिखे मनुष्य हैं जिनके वैसा होने की कोई कदर साहित्य के दायरे में नहीं जानी गई।

ऐसा क्या हुआ ? क्या हुआ कि महान् और उच्च हिंदी साहित्य का पावन हरा–भरा क्षेत्र उन ढोर–डंगरों को आवाज लगा–लगाके पुकारने लगा कि आओ और हमारे द्वारा उत्पन्न की इस घास को चर जाओ और इस जगह को खाली करो, ताकि हम नई घास बो सकें और उसे 'दूर्वा' संबोधित कर सकें। कल तक तो साहित्य की नई ताजी घास सरकारें काटकर अपने गोदाम में सुखाने के लिए रख देती थीं। इन दिनों बजट की कड़की के कारण शायद अपने सुनहरे हँसिए लिए शिक्षा विभागों के अफसर साहित्य के मैदानों में फसल काटने नहीं आए। अन्यथा क्या गरज पड़ी थी कवियों, लेखकों को पाठकों को याद करने की ? पाठक जब हिंदी साहित्य से भागने लगा था तब सारे रचनाकार खुश हुए कि चलो, इस साधारण समझ के जीव से मुक्ति मिली। अब हमें स्तरीयता प्राप्त होगी। आलोचक प्रशंसा करेंगे, सरकारें खरीदेंगी और इसके अलावा जिंदगी में रखा क्या है और हमें किसी से करना क्या है ? पाठकों द्वारा न खरीदी जा रही किताबें साहित्यिक कृतियाँ घोषित हुईं, साहित्य में प्रशंसित हुईं, साहित्य लिखने वालों द्वारा उलटी–पुलटी गईं और साहित्य में रखी जाकर साहित्य में मर गईं। सरकारी विभागों ने दम दिया, पुरस्कृत किया, प्रकाशक गद्‌गद भए। फिर उस घिनौने अकेले पुस्तक–प्रेमी को कौन पूछता, जो अपनी गाढ़ी कमाई से चार पैसे बचा दुकान तक किताब खरीदने आता है। इन दिनों जब किताबों की कीमत ज्यादा और सरकारी खरीदि की सीमा पूर्ववत् सिकुड़ी हुई है, तब बड़ा अहम और सिद्धांत का प्रश्न उठाया जा रहा है हिंदी के बुद्धिमानों के सामने उन्हीं प्रकाशकों द्वारा, जिनके पैर सत्ता के गलियारों में किताबें लिए चक्कर लगाते थकते नहीं थे कि पुस्तक के पाठक गए कहाँ और वीडियो कैसेट की दुकान पर इतनी भीड़ क्यों है ? प्रेमचंद के जमाने में पाठक हुआ करता था हिंदी में, वो कहाँ गया ? अरे, अब लिखने वाले वैसे प्रेमचंद नहीं रहे तो पाठक का प्रेम भी सूख गया। अपने–अपने अहं में सब अज्ञेय होने लगे तो पाठक भी अज्ञात हो गया।

बांग्ला पाठक बंगाली लेखक के कब्जे में रहा, मराठी का पाठक मराठी लेखक के कब्जे में रहा, अंग्रेजी का पाठक अंग्रेज के कब्जे में रहा, सिर्फ इस राष्ट्रभाषा बजने वाली भाषा का पाठक गायब हो गया। अब आश्चर्य कर रहे हैं, सिर पीट रहे हैं। राजनीतिक और अफसरी दबाव लाकर, भ्रष्ट कमीशन दे अपनी सड़ी पुस्तकें सरकारी अलमारियों में खपाने के बाद अब तो पुस्तकालय भी इस लायक नहीं रहे कि वहाँ पढ़ने लायक कुछ मिल सके। पाठक लौटना तो दूर, पैदा होना ही खत्म हो गया। एक पाठक की जीवन–यात्रा यह है कि कॉमिक्स से शुरुआत की, टीव, वीडियो, सिनेमा से होते दैनिक पत्रों में खो गए।

हिंदी के वयोवृद्ध लेखक ने नेताओं के बंगलों के चक्कर काट, उनसे विमोचन करा, भेंट कर अपनी किताबें खपा दीं, युवा कवियों ने अफसरों के ड्राइंगरूम में बौद्धिक बातचीत और घिघियायी प्रशंसा कर किताबें लगा दीं। हिंदी में पाठकों के लिए पुस्तकें लिखी कहाँ जाती हैं, छपती कहाँ हैं ? सब 'सादर भेंट संस्करण' और 'सरकारी खरीद संस्करण' छपते हैं। ■

किस प्रदेश की बहुसंख्यक भाषा बोलती है कौन सी भाषा ?

केरल –मलयालम (96.6%), पंजाब–पंजाबी (92.2%), गुजरात–गुजराती (91.5%), हरियाणा–हिन्दी (91.0%), उत्तर प्रदेश–हिन्दी (90.1:), राजस्थान–हिन्दी (89.6%), हिमाचल प्रदेश–हिन्दी (88.9%), तमिलनाडु–तमिल (86.7%), पश्चिम बंगाल–बांग्ला (86. 0%), आंध्र प्रदेश – तेलुगू (84.8%) ■

सरल भाषा में

भाषा और बोली

केरल –मलयालम (96.6%), पंजाब–पंजाबी (92.2%), गुजरात–गुजराती (91.5%), हरियाणा–हिन्दी (91.0%), उत्तर प्रदेश–हिन्दी (90.1:), राजस्थान–हिन्दी (89.6%), हिमाचल प्रदेश–हिन्दी (88.9%), तमिलनाडु–तमिल (86.7%), पश्चिम बंगाल–बांग्ला (86.0%), आंध्र प्रदेश – तेलुगू (84.8%) ■

2001 की तुलना में प्रतिशत के आधार पर भाषाई संख्या कम होने में कोंकणी और उर्दू भाषियों के अलावा किसी भी भाषा में कमी नहीं पाई गई।

सामयिकी

यह लड़ाई अब बराबरी की नहीं

– दिलीप जैमिनी

19 अप्रैल से प्रारम्भ होकर 2024 लोक सभा चुनाव की प्रक्रिया 4 जून 2024 को समाप्त होने की घोषणा चुनाव आयोग ने एक प्रेस वार्ता में की. यह विश्लेषण बिना किसी परिणाम के कयास के है साथ ही चुनाव मैदान में व्यक्ति संगठन और संसाधनों की तुलनात्मक शह और मात की बिसात को परखने का भी एक प्रयास है, सत्ता और विपक्ष के मोहजाल से दूर, सत्यपरक और यथार्थ की कसौटी पर.

पहली बात सत्ता और विपक्ष के चेहरे खोजने की निर्विवाद स्वीकार्यता में सत्ता दल से नरेंद्र मोदी और इंडी अलायन्स से राहुल गाँधी को चेहरा मानना एक सामयिक विवशता है. इंडी गठबंधन में बिखराव स्पष्ट दिख रहा है, तृणमूल कांग्रेस गठबंधन को धता बता चुकी है, बिहार की स्थिति बहुत स्पष्ट है जब से नितीश कुमार ने विपक्षी गठबंधन को पलीता लगाया है. केरल और महाराष्ट्र की स्थिति भी इंडी गठबंधन के लिये अच्छी नहीं है। एक बात बहुत साफ यह है कि व्यक्तित्वों को पहचानने में सत्तापक्ष की ओर से नरेंद्र मोदी और इंडी अलायन्स से राहुल गाँधी एक नैसर्गिक विकल्प हैं. चुनाव परिणामों की घोषणा के साथ सत्ता पक्ष का चेहरा मोदी और कांग्रेस से चेहरा राहुल होने के पीछे एक तर्क यह है कि जिन परिस्थितियों में मल्लिकार्जुन खड़गे कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए हैं, वह कांग्रेस में एक परिवार के प्रभाव को पुनर्स्थापित करता है. इस बात की सम्भावना शून्य है कि चुनाव परिणाम आने के बाद इंडी गठबंधन से कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे प्रधानमंत्री पद के दावेदार हो सकते हैं,

अब दोनों नेताओं के व्यक्तित्व की तुलना में एक बात स्पष्ट यह है कि मोदी इसलिए स्वीकार्य नेता नहीं हैं कि उनमें अटल बिहारी वाजपेयी जैसी भाषण की कला है. वास्तव में भाजपा प्रखर राष्ट्रवाद और हिंदुत्व के साथ विकास के उस मॉडल को सामने लाने में समर्थ रही है जिसका उत्तर इंडी गठबंधन या कांग्रेस के नेतृत्व के पास नहीं है. दूसरी एक बात जब जब हिंदुत्व की बिसात पर राहुल ने मोदी का मुकाबला करने का प्रयास किया जिसमें धोती कुरता पहन कर तिलक लगाना या स्वयं का गोत्र घोषित करने का प्रयास मोदी की छवि को कमजोर करने में सफल नहीं हो पाया है. मुद्दे की बात यह है कि सत्तारूढ़ पार्टी अपनी योजनाओं को उन पात्रों तक पहुंचाने में सफल रही है जिसके लिए मुफ्त अनाज, गैस आदि महत्व के हैं। इस बात से अधिक महत्व की बात यह है कि ये लाभ हिन्दू और गैर हिन्दू दोनों वर्गों तक सामान रूप से पहुंचाने में मोदीनीत केन्द्र सरकार सफल रही है.

विपक्षी दल या गठबंधन के लिए सत्तारूढ़ दल की नीतियों और विफलताओं को उजागर कर, बेहतर विकल्प देने के आश्वासन का एक नीतिसंगत मार्ग होता है. सरकार की विफलताओं को उजागर करने के नाम पर सरकारी तंत्र का विपक्ष को दबाने के लिए उपयोग का आरोप मतदाता को सीधे कितना प्रभावित करता है यह मतदान के दिन तय होगा. एकतरफ सत्ताधारी दल, एनफोर्समेंट और केंद्रीय जाँच ब्यूरो के दुरूपयोग का अपराधी निरूपित किया जा रहा है दूसरी तरफ मामलों की न्यायायिक जाँच करने वाली अदालतें आरोपियों को निरंतर जमानत के आवेदन अस्वीकार कर रही हैं. मतदाता निश्चित ही यदि एक बार एजेंसी के दुरूपयोग की बात को स्वीकार कर भी ले, लेकिन उसका विश्वास उन अदालतों से कतई कम नहीं होगा, जिसपर श्रद्धा के लिए भारत का मतदाता जाना जाता है. यदि सत्ताधारी दल को इस बात का उत्तर देना होगा कि 2014 से लेकर सितम्बर 2022 तक विभिन्न एजेंसियों द्वारा दाखिल 121 मामलों में 115 मामले केवल विपक्ष के नेताओं के विरुद्ध क्यों हैं ? ऐसे नामों की कमी नहीं है जिनपर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लंबित थे, लेकिन जो भाजपा में आते ही दूध के धुले हो गए. तो विपक्ष को भी ये समझना होगा कि मात्र यह शोर मचाने से कि अन्य अपराधियों के विरूद्ध कोई कार्यवाही नहीं हो रही है, उनका स्वयं का अपराध न्यायपालिका और जनता की नजरों में कम नहीं हो जाता।

संसाधनों की बात करें तो विपक्षी मुख्य दलों तृणमूल कांग्रेस को चुनावी बांड्स में 1609 करोड़, इंडियन नेशनल कांग्रेस को 1421 करोड़, बीआरएस को 1,214 करोड़ तो भारतीय जनता को 6060 करोड़ का चंदा प्राप्त होना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि विपक्ष के पास कम राज्यों में सरकार, कम सांसद और विधायक होने के बावजूद उन्हें आनुपातिक रूप में इलेक्टोरल बांड में पर्याप्त राशि मिली है। यदि प्रतिशत में बात करें तो भाजपा के पास 47 प्रतिशत का हिस्सा आया है।

वर्तमान चुनाव में प्रबोध चंद्र डे (मन्ना डे) के स्वर में वसंत देसाई और भरत व्यास की कालजयी रचना ''निर्बल से लड़ाई बलवान की, ये कहानी है दिए की और तूफान की'' नेपथ्य में सुनाई देने लगी है। इस लड़ाई में जीत किसकी होगी यह काल के गर्भ में है। ■

कितनी बोलियां प्रचलित हैं देशों में ?

इंडोनेशिया – 710, भारत – 576, अमेरिका – 335, ऑस्ट्रेलिया – 319, चीन – 305, मेक्सिको– 294, कैमरून – 228, और मेक्सिको, – 215 ■

भारत की जनगणना में इन्डो आर्यन भाषा समूह में हिन्दी, संस्कृत, असमी, बंगाली, मराठी, कोंकणी, गुजराती, उर्दू, कश्मीरी, उड़िया, पंजाबी सहित कुल 21 भाषाऐं शामिल हैं।

संदर्भवश

–बाईजूस नामक शिक्षा स्टार्टअप, सिनेमा और क्रिकेट जगत की हस्तियों से विज्ञापन करवाने के बाद, आकाश कोचिंग को खरीदने के बाद 30 हजार करोड़ तक के शिखर पर पहुँचने के बाद शून्य नेटवर्थ की अपमानजनक स्थिति को प्राप्त कर चुकी है. कर्मचारियों को देने को वेतन के पैसे भी नहीं बचे हैं. स्मरण शक्ति पर जोर डालें तो अरिंदम चौधरी का आईआईपीएम् इसी रास्ते पर चलकर ऐसी ही दुर्दशा को प्राप्त कर चुका है और इस क्रम में धूल में मिल गए अनेक पालकों और बच्चों के स्वप्न. कमोबेश यही स्थिति है प्रशासनिक सेवाओं में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी की दुकानों की, जहाँ भारत की तरुणाई अपना बहुमूल्य समय नष्ट कर रही है. क्षमता और प्रयास के बिना सफलता संभव नहीं है इस बात के असंख्य उदाहरण हैं.

– चुनाव प्रचार के प्रारंभिक दौर में तू तू मैं मैं का स्तर पिछले चुनावों के स्तर के निम्नतम बिंदु को नहीं छू रहा है, इस बात के उल्लेख के दौरान एक मित्र का उत्तर था, अभी बहुत समय बाकी है चुनाव प्रचार में, धीरज रखिये. जां निसार अख्तर के शब्द हैं, ''अपनी आवाज ए लर्जिश पे तो काबू पा लो, प्यार के बोल तो ओंठों से निकल जाते हैं'' बड़ा प्रासंगिक है चुनाव के माहौल में.

– सूखे मेवों में अगर अमेरिकन बादाम का भाव 800 रूपये किलो है तो राजस्थान में ग्रीष्म में लहलहाती छोटी केर 1,400 और बड़ी केर 1,000 रूपये किलो बिक रही है. मारवाड़ के इलाके में फरवरी के साथ बढ़ते तामपान के साथ केर के साथ सांगरी भी आ जाती है. केर सांगरी की सब्जी दाल बाफले के साथ भोजन का एक अभिन्न अंग है राजस्थान में. मारवाड़ के हरे केर का अचार पूरे विश्व में प्रसिद्ध है.

– सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी कोचीन शिपयार्ड ने यूनाइटेड स्टेट्स नेवी के साथ मास्टर शिपयार्ड रिपेयर एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर किये हैं. कंपनी के व्यवसाय पर इसका धनात्मक प्रभाव हिस्सेदारों के लिए बेहतर परिणामों लाभांश और शेयर के बाजार मूल्यों की आशा कर सकते हैं.

– आगामी 2024 के लोक सभा चुनाव में 97 करोड़ मतदाता (49.7 करोड़ पुरुष और 47.1 करोड़ महिलाएं) 10 लाख मतदान केंद्रों पर भाग लेंगे जिनमें 1.87 करोड़ मतदाता पहली बार मतदान करेंगे और 19.47 करोड़ मतदाता 20 से 29 वर्ष आयु समूह के होंगे. कुल 82 लाख दिव्यांग मतदाता देश की अगली लोक सभा के सदस्य चुनने हेतु मतदान करेंगे. मिलियन के आंकड़े को हटा कर बात की जाए तो भारत में मतदाता संख्या है 969, इंडोनेशिया 204, बांग्लादेश 119, रूस, 114, दक्षिण अफ्रीका 27, मैक्सिको 98, पाकिस्तान 128 और अमेरिका 168.

– उज्जैन जैसे महत्त्व के तीर्थ को शिवलोक के रूप में विकसित करने के उपरांत आने वाले समाचार बहुत अच्छे नहीं हैं. बारी से पहले दर्शन की अनाधिकृत फीस वसूली के मामले में पुलिस कर्मी का निलंबित होना और मंदिर के प्रतिबंधित क्षेत्र में रील की शूटिंग करती युवतियों को रोके जाने पर सुरक्षा कर्मियों से मार पीट दो ऐसी ही घटनाएं हैं. मंदिर श्रद्धा और ऊर्जा के केंद्र हैं, श्रद्धालु के रूप में अपनी बारी से पहले ईश्वर की प्रतिमा दर्शन कर किस पुण्य का अर्जन व्यवस्था को भ्रष्ट कर हम करना चाहते हैं यह समझ के परे है. सारी व्यवस्था केवल प्रबंध तंत्र को नहीं सौंपी जा सकतीं, हमें स्वयं अनुशासित होना होगा. पिछले कुछ दिनों में पूजा सामग्री की दूकान के सामने एक वाहन खड़ा करने को वाहन मालिक को उसी दुकान से प्रसाद खरीदने की अनिवार्यता बता कर मार पीट की घटना भी सामने आयी थी. एक प्राचीन और समृद्ध परंपरा और ईश्वर के प्रति श्रद्धा प्रगट करने के तरीकों में सुधार की आवश्यकता आज भी है, इसे समझना आवश्यक है.

– अमेरिका और जर्मनी द्वारा एक व्यक्ति को कानून के उल्लंघन करने पर अदालत के सामने प्रस्तुत कर अदालत के आदेश पर न्यायिक प्रक्रिया पूरी होने तक कारावास की बात पर विरोध सिर्फ इस लिए न्यायसंगत नहीं होता कि वह व्यक्ति अरविन्द केजरीवाल हैं. भारत एक सार्वभौम देश है जो किसी अन्य देश द्वारा अपने आतंरिक मामलों में इस प्रकार का हस्तक्षेप स्वीकार नहीं करेगा.

– रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अग्निवीर योजना को लेकर बड़ा बयान दिया है. उन्होंने कहा है कि अगर जरूरत पड़ी तो योजना का पुनर्मूल्यांकन कर उसमें परिवर्तन किया जाएगा. राजनाथ सिंह ने जोर देकर कहा कि योजना के अंतर्गत भर्ती हुए अग्निवीर शासन की जिम्मेदारी है.

–शेयर बाजार की अनिश्चितता के बाद भी बाजार की दिशा और दशा पर नसीहत देने वाले ज्ञानचंद बाजार में छाये हुए हैं. रवींद्र बालू भर्ती नामक एक ऐसे ही बाजार के नसीहती को सेबी ने 12 करोड़ का जुरमाना लगाया है. शेयर बाजार पर एक शायर के शब्द बड़े प्रासंगिक हैं ''कितने परवाने जले राज ये पाने के लिए, कि शमा जलने के लिए है या जलाने के लिए ''

– मध्यप्रदेश पर्यटन के एक विज्ञापन में गीत की पंक्ति है ''एमपी अजब है सबसे अलग है.'' मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की ग्वालियर बेंच से नगर निगम ग्वालियर को नोटिस जारी किया है. नगर निगम ने एक एमबीबीएस डॉक्टर की नियुक्ति के स्थान पर एक पशु चिकित्सक की नियुक्ति कर दी. नियुक्ति के पूर्व विज्ञापन देने और चयन की कोई प्रक्रिया भी पूरी नहीं की गयी, एक पशु चिकित्सक से आवेदन लेकर उसे नियुक्ति पत्र जारी कर दिया जबकि नौकरी एमबीबीएस डॉक्टर की थी. इस गीत के लेखक को भान नहीं था कि वे एक सत्य का संगीतमय प्रकटीकरण कर रहे हैं. ■

2011 में इन्डो आर्यन भाषा समूह के बोलने वाले कुल जनसंख्या के 78 प्रतिशत थे।

हमारा शहर

सबसे साक्षर जिला - सेरछिप

मिजोरम राज्य में स्थित सेरछिप का क्षेत्रफल 1,422 वर्ग कि.मी. और जनसंख्या 64,937 (2011) के अनुसार है जिसमें 32,851 पुरुष तथा 32,086 महिलाएँ हैं। जनसँख्या का घनत्व मात्र 46 वर्ग किमी है और साक्षरता का प्रतिशत 97.91 प्रतिशत है. लोकसभा चुनाव क्षेत्र मिजोरम में स्थित इस जिले में 3 विधान सभा सीट हैं. सेरछिप जिला भारतीय राज्य मिजोरम के आठ जिलों में से एक जिला है। यह जिला 15 सितम्बर 1988 को आइजोल जिले की पूर्व लुंगदार तथा थिंगसुलथलैयाह तहसीलों से अलग होकर बना। भारत की जनगणना 2011 के अनुसार यह भारत का सर्वाधिक साक्षर तथा मिजोरम का दूसरा सबसे कम जनसंख्या वाला जिला है। यह जिला दक्षिण पूर्व में म्यांमार से घिरा है। इस जिले का अधिकांश भूभाग पहाड़ी है इसके साथ ही कहीं कहीं नदियों के तट पर जलोढ़ मृदा पायी जाती है जो कृषि कार्य के लिये उपयोग होती है। सेरछिप जिला कलादान नदी तथा तुइकुम नदी के मध्य बसा है। तुइकुम नदी से जिले को पेय जल प्राप्त होता है तथा कालादान सेरछिप के चावल के कटोरा कहे जाने वाले जोलपुई को सिंचाई का जल उपलब्ध कराती है। मिजोरम का सबसे ऊँचा वनतॉग जलप्रपात जिले से पाँच किमी दूर थेनजोल में लाऊ नदी पर स्थित है। इस जिले की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 888 मीटर है, औसत वार्षिक दैनिक तापमान 15 से 27 डिग्री के मध्य तथा वर्षा मध्यम स्तर की होती है। जिले के तीन प्रखण्ड सेरछिप सदर, उत्तर वनलाईफाई तथा थेनजौल हैं। जिले में तीन विधानसभा क्षेत्र तुइकुम, हरंगतुर्जो तथा सेरछिप हैं। 2011 जनगणना के अनुसार सेरछिप जिले की जनसंख्या लगभग मार्शल द्वीपसमूह के बराबर है। इस जिले का जनसंख्या के अनुसार भारत के 640 जिलों में 626वाँ स्थान है। इस जिले की 2001–11 के मध्य दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 20.56 प्रतिशत रही। यह जिला भारत के कुछ ईसाई बाहुल्य जिलों में से एक है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ 97.70 प्रतिशत ईसाई, 1.53 प्रतिशत हिन्दू, 0.52 प्रतिशत मुस्लिम, 0.01 प्रतिशत सिक्ख व इतने ही बौद्ध, जैन धर्म के मतावलम्बी हैं। ■

सबसे कम साक्षर जिला - अलीराजपुर

मध्यप्रदेश के इस जिले की भाभरा तहसील स्वाधीनता आन्दोलन के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी चंद्र शेखर आजाद की जन्मस्थली है। जिले का नाम पूर्व रियासत की राजधानी पर रखा गया। यह क्षेत्र पहाड़ी है और अधिकांश निवासी भील हैं। आदिवासी बहुल समुदाय होने के कारण अलीराजपुर क्षेत्र पर 15 वीं शताब्दी में आदिवासी राजाओं का शासन था। 1947 में स्वतंत्रता के बाद, अलीराजपुर क्षेत्र को भारतीय संघ में समाहित कर लिया गया। उसके बाद यह क्षेत्र मध्यभारत प्रशासक का हिस्सा बन गया। 1 नवंबर, 1956 को मध्य प्रदेश के गठन के बाद अलीराजपुर, झाबुआ जिले में आया। हालांकि अलीराजपुर के लिए एक अलग जिले की मांग उठाई गई थी, लेकिन झाबुआ एक तरफ पेटलावद और थांदला तहसील के बीच और दूसरी तरफ जोबट और अलीराजपुर के बीच था। इसलिए झाबुआ को जिला मुख्यालय घोषित किया गया। तब से अलीराजपुर डिवीजन मुख्यालय रहा, जिसमें क्रमशः तीन बड़े खंड विकास कार्यालय अलीराजपुर, सोंडवा और कट्ठीवाडा थे। इनमें से सोंडवा और कट्ठीवाडा टप्पा तहसील मुख्यालय थे। वखतगढ़, मथवार ककराना आदि गाँव नर्मदा नदी से जुड़े हुए है। जनप्रतिनिधि, सार्वजनिक और राजनीतिक दलों व क्षेत्रीय जनता के दबाव के कारण, म. प्र. शासन ने 17 मई, 2008 को अलीराजपुर को अलग जिला बना दिया और इस तरह एक नई प्रशासनिक इकाई अलीराजपुर का गठन किया गया

अलीराजपुर जिला गुजरात और महाराष्ट्र की सीमा के पास, मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में स्थित है। इस जिले की भौगोलिक स्थिति पहाड़ी है, और यहाँ की अधिकांश आबादी आदिवासी लोगों की है जो अलीराजपुर शहर के आस पास के छोटे गाँवों में रहते हैं। हालाँकि, शहर की आबादी में मुख्य रूप से सामान्य लोग शामिल हैं।

2011 की जनगणना के अनुसार अलीराजपुर जिले का कुल क्षेत्रफल 3,182.00 वर्ग किमी है। अलीराजपुर जिला पूर्व में धार एवं बड़वानी जिले से, पश्चिम में गुजरात से, उत्तर में झाबुआ जिले से और दक्षिण में महाराष्ट्र राज्य से घिरा हुआ है। यह जिला नर्मदा नदी के उत्तर में विंध्य पर्वत पर स्थित है, और मालवा पठार के दक्षिण पश्चिमी मार्जिन के साथ है।

2011 की जनगणना के अनुसार अलीराजपुर जिले की जनसंख्या 7,28,677 है, जो भूटान के राष्ट्र या अलास्का राज्य के बराबर है। जिले का जनसंख्या घनत्व 229 प्रति वर्ग किलोमीटर (590 वर्ग मील) है। 2001 – 2011 के दशक में इसकी जनसंख्या वृद्धि दर 19.4 प्रतिशत थी। अलीराजपुर में प्रत्येक 1,000 पुरुषों पर 1,009 महिलाओं का लिंगानुपात है। इस जिले में 5 तहसील शामिल हैं अलीराजपुर, जोबट, सोंडवा, कट्ठीवाड़ा और चंद्र शेखर आजाद नगर (भाभरा)। वर्तमान में जिले में दो मध्य प्रदेश विधानसभा क्षेत्र हैं अलीराजपुर और जोबट, यह दोनों विधानसभा क्षेत्र रतलाम लोकसभा क्षेत्र का हिस्सा हैं।

देश के मानचित्र पर साक्षरता के क्षेत्र में अलीराजपुर जिले की स्थिति बहुत कमजोर है। यहाँ साक्षरता प्रतिशत 37.6 है। इसमें 21.1 प्रतिशत महिलाएँ हैं। ■

द्रविड़ भाषा समूह में तेलगू, कन्नड़, तमिल, मलयालम सहित 17 भाषाऐं हैं जिनके बोलने वालों का प्रतिशत 19.64 है।

नवलय
अनुबोध

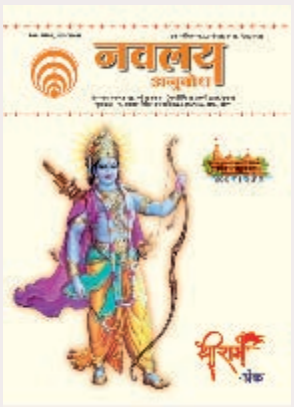
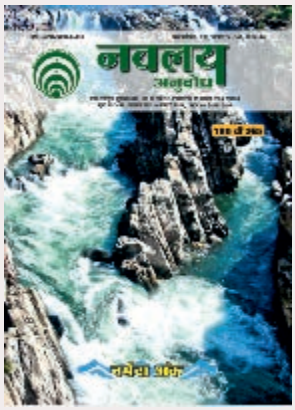

राष्ट्रवाद और संस्कृति के पोषण तथा समाज में सकारात्मक परिवर्तन के सार्थक अभियान का हिस्सा बनने के लिये नवलय अनुबोध पत्रिका के सदस्य बनकर सहभागी बनिये

इस माह सहयोग राशि भेजने वाले
1. श्री सुभाष खन्ना, दिल्ली

द्विवार्षिक रू. 500/– वार्षिक सहयोग राशि रू. 300/– का भुगतान
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया की किसी भी शाखा में/ नेट बैंकिंग/गूगल पे/पेटीएम से कर सकते हैं

खाते का नाम - नवलय अनुबोध (Navalaya Anubodh)
खाता क्र. - 3018974905
बैंक - सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, जेल रोड, भोपाल
IFSCode – CBIN 0283134

क्यू आर कोड को स्केन कर राशि प्रेषित कर सकते हैं।

पत्रिका की मुद्रित प्रति के लिये
आपका डाक का पता व प्रेषित राशि की सूचना
मो. क्र. 9755380050 पर भेजें

डाक पंजीयन- म.प्र./भोपाल/4-167/2024-26

RNI - MPBIL/2008/26448

नवलय का सामाजिक सरोकार

प्रकाशक एवं मुद्रक राकेश कुमार जैन द्वारा स्वामित्व नवलय के लिए 54, जोन-2, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल-462011 से प्रकाशित एवं श्री श्रद्धा ऑफसेट प्रिंटर्स, एस-बी-2, लोअर ग्राउण्ड, विजय स्तम्भ, एम.पी. नगर, भोपाल द्वारा मुद्रित